श्री हिन्दी साहित्य संसार

जयवंत दळवी

सावित्री

मूल मराठी नाटक से अनूदित

ISBN 81 85117 03 X

मूल्य • तीस रुपए मात्र
प्रकाशक • श्री हिदी साहित्य ससार
1543, नई सडक, दिल्ली-110 006
सस्करण • प्रथम सस्करण, 1987

मुद्रक • नवप्रभात प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-32

SAVITRI
By Jaywant Dalvi

Price Rs 30 00
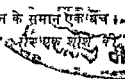
सावित्री

पहला अक

मध्यवर्गीय वस्ती पहली मजिल पर तीन कमरा का एक मकान। रास्त की तरफ एक सकरा छज्जा। उसी तरफ लोहे की सलाखा वाली खिडकी। हॉल के बीचा-बीच आन जान का मुम्य दरवाजा। बाईं आर रास्ता और गलरी। दाइ आर एक लम्बी-सी खिडकी। उसम से पिछवाडे फैला हुआ ईसाई श्मशान दिखाई देता है जो अव सूना पडा है। दाईं आर एक दरवाजा है जो रसोई और बेडरूम की तरफ खुला रहता है।

श्याम खाडेकर और उसकी पत्नी अपर्णा एक दिन पहले ही यहाँ रहन आये हुए है। श्याम की आयु लगभग तीस वज अग्रेजी का प्राध्यापक। अपणा पचीस वप की नाकरी पशा। तीन चार साल का उनका वच्चा।

परदा ऊपर उठता है। हाल का पूरा सामान अस्त-व्यस्त बिखरा हुआ। नई गहस्थी के कारण सामान्य और जरूरी चीज मात्र हैं। एक पुरानी-सी मामूली मज, उस पर दो-तीन किताबें, एक टाईम पीस, एक स्टूल पर गिलाफ लपटा हुआ टेवल फन

दो-तीन फोल्डिंग कुर्सियाँ, दीवान के समान एक बेंच। दो सूटकेस, एक भरा हुआ बोरा और एक शीशे की आलमारी।

परदा उठता है। अपर्णा अलमारी लगाती हुई दीखती है। साड़िया की गठरिया ठीक से लगा रही है। उसने एक तरफ एक जरी-बूटीवाला नौ गज लम्बा कीमती शालू (साटी) सहज ही अपने बदन पर लपेट लिया है। नथनी पहने वह आयने के सामने खड़ी है। हाथ से पूरे शरीर को स्पर्श करती हुई शरीर 'उरोजा —कमर का निरख रही है। पीछे से अपर्णा की ही आवाज मे मंगल का पुराना गीत टेप पर सुनाई दे रहा है। 'झुला झुलाव झुलावो रे, अम्बुवा के डारी प कोयल बोले ।' उसी समय श्मशान से प्रार्थना के स्वर सुनाई देते है । वह सीधे खिड़की की ओर जाती है, बाहर देखती है। मेज पर रखा हुआ टेपरेकाडर बंद कर देती है। खिड़की से बाहर देखती है। घबरा कर झट खिड़की बंद कर देती है।

उसी समय दरवाजा खोल कर पड़ोसन शाता-बाई आती है। पचास की प्रौढा पर बड़ा रोबीला व्यक्तित्व। कद्दावर नारी। नौ गज लंबी साड़ी पहने, झूलती-डोलती पर तेज चाल। पूरी गृहस्थिन। हड़बड़ी मे प्रवेश। अपर्णा को शालू लपेटे देखकर चौंक पड़ती है।

शांताबाई (अपर्णा को नख शिख निहारते हुए) औफ ! यह क्या और कर रखा है ?

अपर्णा (फौरन नयनी उतार देती है। मुस्कराते हुए शालू को भी उतार कर) यों ही, एक शगल। अलमारी में चीजें जमा कर रही थी—पुराना शालू हाथ लगा सोचा, जरा लपेट लूं।

शांता (शालू की टैक्स्चर देखकर) बहुत कीमती नजर आ रहा है।

अपर्णा पुराना है, मेरी मा का।

शाता अपणा जी।

अपणा (हसकर) अपणा—नही-अपर्णा अपर्णा है मेरा नाम। कल से बता जो रही हूँ शाताबाई।

शाता (हाथ मटकाते हुए) रहने भी दो। मुझे अपर्णा के बजाय अपणा ही अच्छी लगती है। अपणा यानी पति को अर्पित की हुई। अपर्णा का क्या मतलब हुआ बताओ तो सही।

अपर्णा (पसोपस म पड कर) मतलब, कौन जाने क्या है? (हसती है)

शाता फिर पूछो तुम्हारे श्यामराव से। प्रोफेसर है न वे। (सहमा जबान निकाल कर शरमाते हुए) प्रोफेसर साहब घर पर तो नही हैं ना?

अपर्णा अभी तक कालेज से नही लौटा।

शाता राम! राम! राम, छी, अपने पति को 'नही लौटा' कहती हो?

अपर्णा (मुस्कराकर) हा जी। हाँ। उसी ने कहा है वैसा कहने को।

शाता ठीक है (सारे मकान की ओर देख कर) अभी सामान लगाना बाकी है न।

अपणा हाँ जी, धीरे-धीरे लगा रही हूँ।

शांता वैसे गृहस्थी कुछ नई लगती है—

अपर्णा हाँ नई ही तो है —

शांता यहाँ आने के पहले कहाँ रहती थी ?

अपर्णा दादर मे ! बायजी के घर ! बायजी—याने मेरी बुवाजी ।

शांता हा मतलब कल आई जो थी, वही ना ! मोटी मुटल्ली-सी और उनके पतिराज वे सिगार वाले ।

अपर्णा बालाराव ! उन्ही के घर मे पली। शादी के बाद भी वही रहती थी।

शांता क्यो, प्रोफेसर साहब का कोई अपना नहीं है क्या ?

अपर्णा एक कमरा था, किसी एक चाल मे था याने की अब भी है। छोडा नहीं है अबतक ! श्याम् की किताबें वगैरह अब भी वही रखी हैं। पर मैं कभी उस कमरे मे रही नही।

शांता क्यो ?

अपर्णा पहले से ब्लॉक मे रहने की आदी जो हूँ। चाल मे कैसे रहा जा सकता है। लोटा उठाकर सवेरे-सवेरे लाईन लगाओ। छी ! (शांताबाई हस पडती है।) बायजी का ब्लॉक बडा है—सो मैं वही पर रहती थी।

शांता और प्रोफेसर साहब ?

अपर्णा वह कभी कमरे पर तो कभी बायजी के ब्लॉक मे—

शांता पर कल जब तुम सामान वगैरे यहाँ ले आई ना तब सच बताऊँ अर्पणा जी हमे बहुत खुशी हुई—बहुत खुशी। हमारे साहब ने कहा भी—जोडी पढी-लिखी और सुसस्कृत है। अरी, तुम्हारे पहले यहाँ जो फैमिली रहती थी न (सिर पर हाथ मार कर) हे भगवान, क्यो

ऐसे लोगो को जन्म देते हो ?

अपर्णा सरकार नामी कोई थे ना ?

शांता नाम के सरकार पर थे विरोधी दल के। याने हमारे साहब ऐसा कहा करते थे बिलकुल विरोधी दल की तरह लडते-झगडते थे पति-पत्नी। साहब तो हमेशा उन्हे विरोधी दल ही कहा करते थे। (अपर्णा हसती है) हसती क्यो हो ? उस सरकार का एक मामा था (हाथ जोडकर) हाय रे भगवान, ऐसा मामा किसी को ना दे

अपर्णा क्यो ? क्या किया करता था वह ?

शांता क्या किया करता था ? हे भगवान, अजी क्या बताऊँ ? गैलरी मे कुर्सी रख कर बैठा रहता था। ठीक है, तुम गैलरी का किराया जो देते हो, आराम से बैठो। पर वह गैलरी मे बैठा सडक पर लगातार थूका करता था—दिन-रात। हमारे साहब को कई बार लगता कि सीधे जाकर उससे पूछे कि क्यो जी, यह सडक क्या तुम्हारे बाप की है ?

अपर्णा पूछा उन्होने ?

शांता नही जी। नही पूछा, अगर वह हाँ कह देता तो। पर थूकना भी कितना और कहाँ तक ? जैसे थूकना मानो उसकी जिंदगी का ध्येय ही रहा हो—मतलब ऐसा हमारे साहब कहा करते थे। (रुककर सामान की तरफ नजर डाल कर) तुम्हे सामान लगाना है ना ? कुछ हाथ ल्टाऊँ ?

अपर्णा रहने भी दीजिए। मैं लगा लूगी।

शांता फिर क्या तुम्हारे छोटे बबलू को ले जाऊँ ?

अपर्णा उसका नाम सतीश है।

शांता हां ठीक है। पर उसे तो बबलू नाम ही पसंद है (बडरूम की तरफ जाते हुए) भीतर सोया हुआ तो नहीं है ?

अपर्णा नही जो। उसे बायजी के घर छोड़े आई हूं। वरना सामान लगाने नही देता।

शांता अजी, मैं सभाल लेती उसे। मेरा भी तो वक्त कटते नही कटता। साहब अपने दफ्तर मे, दोनो बेटे कालेज मे।

अपर्णा आपके साहब कहाँ काम करते हैं ?

शांता मुरार जी गोकुल दास मिल मे स्पिनिंग मास्टर हैं। नाम भले ही मास्टर हो, लेकिन ओहदा बल्कि ऊँचा है जी। तुम्हें कभी कपड़े-वपड़े की जरूरत पड़े तो बोल देना, मैं कूपन दे दूगी तुम्हारी बायजी के साहब क्या करते हैं।

अपर्णा बालाराव कस्टम मे है—अफसर।

शांता बाल-बच्चे ?

अपर्णा उनके कोई बच्चा नही—तभी तो सतीश को अपने पास रख लेते हैं।

शांता तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?

अपर्णा यही एक, इकलौता। फिर भी हमारी कुछ जल्दबाजी ही हो गयी। अपने अधिकार का घर मिला होता और बाद में बच्चा हो जाता तो

शांता कुछ नही जी। सब अच्छे काम जल्दबाजी मे ही तो होते है। मतलब कि हमारे साहब का कहना है। हमारा अरुण, अब इंटर पढ रहा है—उस समय मैंने साहब से कहा भी था कि आप भी सब जगह जल्दबाजी करते हैं। तब साहब ने ऐसा ही कहा था, ससार के

सारे अच्छे काम जल्दबाजी मे ही होते हैं।

अपर्णा अच्छा। तब तो ठीक ही होगा।

शांता साहब जब कहते हैं तो ठीक ही होना चाहिए। अरी, उस समय हमारे घर मे कितने आदमी थे? साहब के दो कँवारे भाई, दो शादी लायक बहनें। इसके अलावा सास-ससुर। आदमी लोग हॉल मे सोया करते और सारी औरते भीतर कमरे मे। (खुशी से हसती हुई) घडी मे एक घण्टा बजने तक जागते रहना तब साहब रसोई घर मे जाकर मटके से पानी लिया और मटके पर गिलास पटका दिया कि मुझे रसोई घर मे जाना यह सारी बिलकुल पक्का (सहसा शरम मे पल्लू म मुह छिपा कर) सारी जल्द बाजी! धाधली! लेकिन बडे ही दिलचस्प दिन थे वे। (हसती है बीच मे ही रुक कर) एक मजा तो सुनो। अजी, एक दिन मैंने घडी के पेंडुलम को रोक दिया था। सुबह पाच बजे तक साहब घडी की घण्टी इतजार जो करते रहे। (हसती है) (अपणा दीवार पर कील ठोकती है। उस पर अपने पिता नानाकाका, की तसवीर लटका देती है। पिताजी—बाल गदा पर झूलत हुए चौडा चेहरा। तसबीर को टाग देती है और कुछ दूरी स उसकी ओर देखती है कि ऊपर वाली मजिल की सुषमा जी दरवाजा खोलकर अदर आती है। आयु पैंतीस साल, शरीर कुछ स्थूल, ढीला ढाला। थका मादा सा! नीखन म स्मार्ट और सुदर! आँखो के बीच काले गढे! कल्लो वे बाल सफेद)

अपर्णा आइए सुषमा जी! आइए।

सुषमा ऊपर जा रही थी, सोचा दरवाजा खुला है, ज़रा-सा

देख लू। शाताबाई क्या कर रही हैं ?

शाता शाताबाई और क्या करेगी ? बस बकबक—

(सब हसती हैं)

सुषमा (दबी आवाज मे) मिस्टर हैं ?

अपर्णा वह कालेज गया है।

सुषमा और आप आज छुट्टी पर ?

अपर्णा क्या करू ? इत्ता सा ही तो सामान है, फिर भी अभी तक लगा नही पा रही हूँ।

शाता अजी यह तो शादी की दावतो के जैसा लबा होता है कि चाहे कितने ही लोग भोजन करके जाते रहते हो पर फिर भी कई खाने के इन्तजार मे बैठे रहते ही हैं ये गठरिया ठीक वैसी ही है, कितना भी लगाते जाओ, कुछ तो बच ही जाती है।

(सब हसती हैं)

सुषमा अजी आपकी वह बुवाजी बायजी ना ? कल आपको किस नाम से पुकार रही थी ?

अपर्णा (मुस्कराकर) साबू ! साबू कहती है वह मुझे। मायके का मेरा नाम है सावित्री। वडपूजन का जन्म-दिन है ना मेरा।

शाता सच ! फिर कल है आपका जन्म-दिन कल की वडपूजन हम मनाएगे। मतलब कि मनाना ही पडेगा।

सुषमा हा जी ! शाताबाई सभी महिलाओ को इकठ्ठी कर खुद वडपूजा करने जाएगी। ईरानी के होटल के परे एक वडा-सा वड का पेड है। जानती हैं आप, शाता-बाई यहाँ की लीडर हैं। कल सवेरे सबको नौ गज की साडी पहननी ही होगी। हम सब जैसे मोर्चा मे यो

जाती हैं और बरगद को घेराव डालती हैं। (हसती हैं)

अपर्णा वा ह वा ! और अगर नौ गज की साडी ना हो तो ?

शांता अरी तुम्हारे पास तो है ही। वही, जो कुछ देर पहले तुमने ओढी थी।

सुषमा हाँ अगर किसी के पास ना भी हो तो शांताबाई उसे अपने वाली देगी। अरी, जन्मजन्मातर के लिए इसी पति का लाभ हो इसलिए यह व्रत करना ही चाहिए। इसी के लिए किसी को छूट नहीं भई।

शांता हाँ जी, हम औरतो का व्रत जो है यह। निभाना ही होगा इसे। (सहसा ही किसी बात की याद आने से) दैया रे, दैया कितने बजे हैं ? साहब आते ही होगे। मैं चली। तुम्हारे प्रोफेसर साहब जब आएगे तब खबर करना मुझे। कुछ जरूरी काम है उनसे। (जल्दी-जल्दी चली जाती है)

सुषमा (श्मशान की तरफ की खिडकी खोलते हुए) खिडकी जरा सी खोल देती हूँ जी। इधर से बढिया हवा आती है—

अपर्णा हाँ, पर अगर उस तरफ श्मशान न होता तो अच्छा होता। जैसे रोज मृत्यु की छाया मडराती रहती हो।

सुषमा लेकिन आजकल उसका इस्तेमाल जरा भी नही है। सिर्फ पुरानी कब्रे बची है—कितने बडे-बडे पेड, और घनी झाडियाँ, देखो ना कितनी फैली हैं। बच्चे अक्सर पतग खेलते रहते है। कुछ विद्यार्थी तो उन कब्रो पर बैठे पढाई करते रहते है।

(श्मशान मे मिसेस अल्मेडा प्रार्थना के लिए आई हैं। दोनो उसकी ओर देखती हैं।)

अपर्णा अरी, वह औरत भला कौन है जी ?

सुषमा वह ना ? मिसेस अलमेडा । अक्सर आती है । कहते हैं उसका पति अपने अठाईस की आयु में किसी दुर्घटना मे चल बसा । वह यहाँ आती है, मोमबत्तियाँ जलाती है । लगातार पिछले दस वर्षों से यही क्रम है । (कुछ रुक कर) शाम हुई कि आप यहाँ जवान लडके-लडकियों को देखेंगी कब्रो के पीछे छिप-छिप कर इश्क करते हैं (सलाख पकड कर कुछ देर ताकती रहती है । उसके पीछे से अपर्णा भी कब्रो का देखती है) क्यो जी, क्या कभी आपने इस तरह कभी छिप-छिप कर इश्क किया है ?

अपर्णा ना भई । श्यामू एक इतवार मेरे घर आया और उसने सोधे मेरा रिश्ता मागा । बस, शादी हो गई । (मुस्कराकर) छिपेंगे कहाँ और इश्क करेंगे कहाँ ?

सुषमा खुशकिस्मत हैं आप । (बेंच पर बठ जाती है)

अपर्णा कल, जबसे आपको देखा है ना सुषमा जी, तबसे सोच रही हूँ, मैंने रायजी से कहा भी, आपकी सूरत कही तो जानी-पहचानी सी लग रही है मुझे पहले कभी कहीं देखी हुई लगती है ।

सुषमा (खुश होकर) हा हा आपने कहीं, किसी पत्रिका मे मेरा पुराना फोटो देखें होंगे । इश्तहार मे या कैलेण्डर मे बारह-तेरह साल पुराने यानी कि तब क्या आप स्कूल मे होंगी । तब विशाखा नामी अभिनेत्री का नाम सुना था आपने ?

अपर्णा (आश्चर्यविमुग्ध होकर) ओऽह विशाखा ? यानी कि बदलते दिन फिल्म की विशाखा और विश्राम । पॉप्युलर जोडी ।

सुषमा हाँ मैं वही विशाखा हूँ और विश्राम है मेरे पति।
अपर्णा फिल्म मे पति ?
सुषमा और हकीकत मे भी।
अपर्णा मतलब विश्राम से आपकी शादी हो गई है ?
सुषमा वैसे शादी तो नही हुई। पर हम शादी-शुदा पतिपत्नी की तरह रहते है। हमारी एक बच्ची भी है वैशाली
अपर्णा कितनी बडी है ?
सुषमा बारह साल की। सातवी मे पढती है।
अपर्णा हाऊ लकी यू आर। खुशनसीब हैं आप।
सुषमा क्यो ?
अपर्णा विश्राम जैसा पति ! कितना सुन्दर और स्मार्ट है विश्राम। है ना ?
सुषमा (विषादपूर्ण मुस्कराहट) सुदर और स्माट था। इधर आपने उसे देखा नही है। खचाखच भरे हुए होल्डाल की तरह फूला हुआ है। नाटक-दौरे पर गया है। लौट आये तब देखना। आप उसे पहचान तक नही सकेंगी (नानाकाका की तस्वीर दखकर) यह तसवीर किसकी है जी ?
अपर्णा नानाकाका की, मेरे पिताजी।
सुषमा कहाँ रहते हैं वे ?
अपर्णा बहुत साल पहले गुजर गये। सगीत क्लास चलाया करते थे।
सुषमा आपने सगीत सीखा है ?
अपर्णा हाँ कुछ-कुछ। जब नानाकाका की मौत हुई उस वक्त मैं ग्यारह साल की थी। वरना बहुत कुछ सीखा होता। गीत वगैरह गाया करती थी।

सुषमा और आपकी माँ ?

अपर्णा (क्षण भर कुछ रुक कर पीडा से) भाग गई। हमारे ही संगीत क्लास के मुस्लिम तबलनवाज के साथ। उसके भाग जाने के बाद बस एक साल के भीतर नानाकाका चल बसे, वह सदमा बरदाश्त नही कर सके।

सुषमा सॉरी ! मुझे आपसे यह सब नही पूछना चाहिए था।

अपर्णा नही जी ! वैसे भी तो कभी न कभी आप को इस बात का पता तो लग ही जाता। और सच पूछिए तो आजकल इस बात से मुझे कोई खास परेशानी भी नही होती।

सुषमा आती है कभी मिलने ?

अपर्णा कौन, अप्पा ! मैं उन्हे अप्पा कहा करती थी। नही जी, नानाकाका की मौत की खबर मिलने पर एक बार आई थी पर उस वक्त सभी लोगो ने उसे निकाल बाहर किया। बायजी के घर जाना तो सभव ही नही था। वह तो उसे फाड कर कच्चा चबा जाती—। (विषय बदलने के इरादे से) आप आजकल फिल्म मे काम नही करती ?

सुषमा (विषाद से) नही ! अब नौकरी जेठाभाई सालिसिटर्स के पास नौकरी और गृहस्थी। गिरस्ती और गिरस्ती बस, गिरस्ती की दुनिया— (विषादपूर्ण हसी)

अपर्णा नौकरी की जरूरत है कि

सुषमा जरूरत, निहायत जरूरत ! अजी, विश्राम को अब काम नही मिलता। वह मुझसे उमर मे पद्रह साल बडे हैं। पचास के करीब हैं। अब उसे क्योकर काम

मिलेगा ! न फिल्मो मे, न नाटको मे। कभी-कभार किसी एकाध पुराने नाटक मे कुछ थोडा बहुत काम आजकल 'वेवदशाही' नाटक मे अभिनय कर रहे है। दौरे के वहाने कुछ खेल होगे लेकिन कुछ हामी नही है। तभी तो मैं कमर टूटने तक टाइपिंग करती रहती हूँ, जेठाभाई के यहा।

अपर्णा आज नही गई ?

सुषमा आज वदन मे दर्द है अपर्णाजी ! सोचा, दिन भर लेटी रहूँगी। वस घर पर ही रही। विश्राम दौरे पर है सो आराम। वरना पूछिए मत। अच्छा, मैं चलती हूँ। अभी वैशाली स्कूल से लौट आएगी। ईरानी के होटल से कुछ बिस्कुट ले आती हूँ। (जाते हुए मज पर रखी हुइ घडी की ओर दखकर चौक जाती है।) अजी, छह बज गये ?

अपर्णा (मुस्कराते हुए) ना ना, सुवह के छ वजे है। इस घडी को मत देखिये। यह तो वस सिर्फ एक स्मृति-चिह्न है। पुरानी याददाश्त। श्यामू ने जब मैट्रिक पास किया था उस वक्त उसके पिताजी ने यह घडी उसे प्रेजेंट दी थी। अजी वडा ऐतिहासिक महत्व है उसका, विलकुल भवानी तलवार की तरह ! श्यामू हर छह महीने तीस-पैंतीस रुपये जाया करता है इसके लिए।

सुषमा फिर भी चलती नही है ?

अपर्णा चलती तो है—मतलव उसकी सुइया घूमती हैं पर सही-सही वक्त का पता नही चलता वस इतना ही।

सुषमा तव इसे महराव मे क्यो नही फेंक देती ?

अपर्णा ना—ना ! श्यामू पहले देखेगा अपनी रिस्ट वॉच फिर

इसकी सुइया घुमाते बैठेगा श्याम ही है—उसका एक ।

सुषमा (मुस्कराती है, जाते हुए मुडकर) अच्छा, चलती हूँ। फुरसत मिलने पर आइए ऊपर । यूही बात करेंगे। हमारे नाटक-फिल्मो की तसवीरें और रिव्हयु की फाईल आपको दिखाऊँगी। वे सारी पुरानी बाते देखने मे वडा मजा आता है।

अपर्णा हाँ हाँ जरूर आ जाऊँगी किसी शाम ।

(जैसे ही सुषमा जा रही होती है श्याम दरवाजा खाल कर अन्दर आता है दीखन मे स्मार्ट और उमदा । सामान्यत प्रोफेसर को फबनेवाली पाशाक—पेंट-बुशर्ट ! बायें हाथ मे ब्रीफकेस और दायें हाथ म दो बडे मोटे ग्रन्थ। अन्दर आत ही दोना को देखकर झुककर अदब से स्मितहास्य ।)

अपर्णा आप है सुषमा अमृते ! ऊपर की मजिल पर रहती है और आप हैं श्यामराव खाडेकर अग्रेजी के प्रोफेसर सी० पी० कालेज ।

श्यामू नमस्ते । (सुषमा भी नमस्त करती है)

अपर्णा श्यामू तुम्हे बदलते दिन फिल्म याद है ? बहुत बोलबाला हुआ था उसका ।

श्यामू नही तो ।

अपर्णा विशाखा और विश्राम नाम भी तो याद हैं।

श्यामू (साचते हुए) विशाखा ? अ अ (उसे कुछ भी पता नही है)

अपर्णा ये ही है ये विशाखा । और विश्राम है उनके मिस्टर ।

श्यामू (खास दिलचस्पी लेते हुए) ऐसा ? वाह, बहुत अच्छे ।

सुषमा अभी-अभी हम लोग आपकी घडी के सबध मे

बातें कर रही थी।

श्याम् हाँ-हाँ। बहुत पुरानी घडी है साथ यह ! ऐसी मशीन अब पैसे खर्च करके भी मिलेगी नही। पुरानी मशीन है। (मज मे पास जाकर, अपनी रिस्टवॉच देखकर घडी की सुइयाँ घुमाता है।) (दोना ठहाका लगाकर हँसती हैं।) (हँसते-हँसत चली जाती है। श्याम् कुछ उलझन मे पड जाता है) क्यो, क्या हुआ ? हँस क्यो रही हो ?

अपर्णा बस यो ही ! ठहरो पहले दरवाजा बद कर लेती हूँ। (दरवाजा धकेलती है) पडोसिन लगातार आती जाती रहती हैं, क्या मालूम किस वक्त शाताबाई टपक पडेगी। बडी दिलचस्प औरत है।

श्याम् हा, पर है बेचारी सीदी-सादी।

अपर्णा ओ हो, भली सीदी-सादी। चलो चाय पीने बताती है उसने घडी के पेंडुलम को कैसे रोक रखा था (हँसत-हँसते अदर चली जाती है।)

श्याम् (सामान की ओर देखता हुआ बुशशट के बटन खोलता है) ए, जल्दी चाय बनाओ और देखो, मेरी चाय मे मसाला भी डालना तबतक मैं जरा झाडू लगा लेता हूँ।

अपर्णा अभी मानसी आने वाली है। कुछ देर रुकोगे भी

श्याम् हाँ-हाँ क्यो नही ?

अपर्णा मानसी आ रही है तब तो तुम जरूर रुकोगे जी। (बाहर आकर) तुम थके हुए हो। इस वक्त झाड् लगाने की क्या जरूरत है ?

श्याम् क्यो नही ? तूने अपने पैसे से ब्लॉक जो खरीदा है। सामान भी तो तूने ही लगाया। मुझे कुछ तो हाथ बटाना चाहिए। चलो, लाओ झाडू (झाडू उठाते

हुए) हां, तुम शातावाई के पेंडुलम के बारे मे क्या कह रही थी ? (अपनी ही धुन म बुशशट उतारकर तख्त पर फेंक देता है। उस उस रूप म देखकर अपर्णा चीख उठती है। श्यामू की नंगी-पीठ और पट पर तार-तार हुई बनियान देखकर वह सहसा भड़क उठती है)

अपर्णा (चीखकर) श्यामू श्यामू ।

श्यामू (लाड़ जताते हुए) अब तुम चीख क्यो रही हो ?

अपर्णा श्यामू श्यामा, कहे देती हूँ तुम पहले अपनी बनियान उतार फेंक दो।

श्यामू (बुद्दू की तरह) क्यो भला ?

अपर्णा (चिढकर) क्यो कहकर पूछ रहे हो ? तुम्हे शरम कैसे नही आती ? कितनी फट गई है—देखो।

श्यामू हां रहने दो, फटने दो। मुझे फटी हुई बनियान ही अच्छी लगती है।

अपर्णा (दातो स ओठ चबाकर) तुम्हे, श्याम्या, तुम्हे प्रोफेसर किसने बनाया ? सदा मटमैले-बोदे कपडो मे रहते जो हो ओऽहो प्रोफेसर सदा फटी बनियान

श्यामू अरी, तुमने और प्रोफेसरो की बनियानें देखी नही हैं ।

अपर्णा (कमर पर दोनो हाथ रखकर) तुम सीधे तरीके से चुपचाप बनियान उतारोगे या नही ?

श्यामू देखो साबू, तुम मेरी आजादी पर रोक लगा रही हो।

अपर्णा यह समझकर मत बोलो जैसे फटी हुई बनिहान पहनना तुम्हारा अपना जन्मसिद्ध अधिकार है।

श्यामू पहले जब मैं घर मे धारीदार कपडे की निकर पहना करता उसपर भी तुमने रोक लगा दी यह कहकर कि

गद्दी-गिलाफ के कपडे की निकर न पहनो। अब मेरी बनियान पर पिल पडी हो—

अपर्णा (कैंची ढूढकर ले आती है) पहले दूसरी बनियान पहनो वरना मैं अभी उसे फाड डालूगी। पहले दूसरी बनियान पहन लो।

श्यामू (बचाव करते हुए) यह देखो, दूसरी बनियान तो इससे भी जादा फटी हुई है। उसके किसी भी छेद से सिर तक घुसा जा सकता है। (वह क्रोध से उसकी बनियान को पकड खीच रही है कि दरवाजे पर दस्तक। श्यामू दरवाजा खोलता है। दरवाजे म शाताबाई। आइए, शाताबाई)

(शाताबाई का प्रवेश)

शांता अजी अर्पणाजी (श्यामू हँसता है) मैंने अपणाजी कहा इसलिए ना श्यामराव आप हस रहे है? हसिए —मैं तो अर्पणाजी ही कहूगी। अपर्णा का क्या मतलब होता है, बताइए तो सही।

अपर्णा (श्यामू से) तुम्ही बताओ।

श्यामू अपर्णा याने (उलझन मे)

शांता हा हा बताइए ना आप तो प्रोफेसर हैं ना ?

श्यामू मैं मराठा का प्रोफेसर नही, अग्रेजी का हू।

शांता फिर अग्रेजी मे कहिए।

श्यामू छोडिए भी। शाताबाई, बेहतर है कि आप उन्हे अपणा ही कहिए।

शांता वही तो कह रही हू। अर्पणाजी, मैं उस वक्त बताना भूल ही गई थी। अजी, कल वडपूनम है सो हम सबको कल बडपूजा के लिए जाना है और फिर मेरे घर फलाहार के लिए आना है —

अपर्णा मुझे आफिस जाना है शातावाई

शांता कोई वात नही। हम लोग जल्दी निकल जाएगे और वड का पेड भी तो इसी नुक्कड पर ईरानी के होटल से जरा आगे की तरफ है। अजी, इस व्रत का महात्मय वहुत वडा है। इसी पति का जन्मजमातर के लिए लाभ हो इस तरह प्राथना करने का व्रत है यह। अच्छा, तुम्हारे पास नौ गज वाली साड़ी तो है, ही

अपर्णा हा, हा—

शाता नथनी है ? न हो तो मैं दूंगी। मेरे पास अपनी सास की नथनी है

श्यामू और सास को ?

शाता (सहसा शोकाकुल मुद्रा मे) दो साल हुए हमारे ससुरजी परलोक सिधारे। खैर छोडो, मैं चलती हू। (अपर्णा श्यामू को बुशशर्ट पहनने को कब से इशारा मे कह रही है पर उसका ध्यान नही। आखिरकार वह उसे बुशशर्ट उठाकर देने वाली ही है कि)—रहने भी दो। हम रहे पडोसी। बीच-बीच मे किसी भी समय आते-जाते रहेंगे। हर समय बुशशर्ट पहनने की फार्ममेलिटी क्यो ?—अजी सभी मर्द फटी बनियान ही पहनते हैं। तुम इस पर कोई खास ध्यान मत दो। (जाने को मुडती है)

श्यामू लो इनके साहब भी तो (हसता है)

शाता साहब की तो बात छोडो। वे बनियान पहनते ही नही और ऊपर से कहते है कि जो नजर नही आता उसे पहना ही क्यो जाए ? (जल्दी जल्दी चली जाती है)

श्यामू (दरवाजा बन्द करते हुए) लो, सुन लिया साहब का दर्शन ? याने बनियान की भी जरूरत नही और न ही लगोट की भी।

अपर्णा ए चुप करो। गदी बातें मत करो ? कल मैं तुम्हारे लिए दो जोडी बनियान ले आती हू।

श्यामू ओऽहा। हाऊ स्वीट आँफ यू, छबुताई।

अपर्णा (गुस्से से) चुप रहो जी, मुझे छबुताई मत कहना हा कह देती हू।

श्यामू मैं तो छबुताई ही कहूगा। मुझे यह नाम बहुत प्यारा लगता है।

अपर्ण फिर वही नाम क्यो नही रखा शादी के समय ?

श्यामू अरी छबुताई मेरे प्यार का नाम है जी प्यारा (उसकी कमर पर हाथ रखता है)

अपर्णा श्यामू जानते हो कल बड-पूजा के लिए मैं क्या पहनने वाली हू ? (शालू दिखाती है)

श्यामू कैसी अनाडियो की तरह त्यौहार मनाती हो ? जन्म-जन्मातर तक इसी पति का लाभ हो, पुनजन्म, अजी पुनजन्म है ही कहा ?

अपर्णा ये त्यौहार, ये व्रत बस कुछ खुशी। तुम जैसे इटलैक्चुअल सिर्फ कोयनेलवाले को तो जरा घडी दो घडी खुशी से बिताई तो तुम एरटेल पाते रहोगे। जब तक नये-नये त्यौहार नही चल पडते तब तक पुराने त्यौहार मनाने मे हर्ज ही क्या है ?

(अपर्णा शालू ओढती है और शीशे के सामने खडी होकर मूड मुडकर अपना नखशिख निहारती है और साथ-साथ गुनगुनाती भी है)।

श्यामू बार-बार आइने के सामने खडी मत रहा करो।

(वह उसके पास जाता है)

अपर्णा (एकदम चौंककर सकुचाते हुए) क्या कहा तुमने ?

श्यामू बार-बार आइने मे देखना नही चाहिए। (अपर्णा सहसा पुरानी यादो म खोई-सी, व्यग्रता से उसकी ओर देखती रहती है) क्यो मेरी ओर क्यो इस तरह घूर-घूर कर देख रही हो ?

अपर्णा अचानक याद आई ! नानाकाका माँ से अक्सर इसी तरह कहा करते थे।

श्यामू क्या तुम्हारे दिमाग से अभी तक वह पागलपन निकल नही गया ? कितने अरसो बीत चुके हैं उस सबको।

अपर्णा बायजी भी मुझे अक्सर इसी तरह डाँटा करती थी। मैं जरा-सी आइने के सामने खडी हुई कि कहा करती, "मुई अपनी माँ की ही चाल यह चलेगी।

श्यामू बेवकूफ है तुम्हारी बायजी।

अपर्णा ऐसा लगता रहता है कि मैं सुन्दर दीखूँ। मेरा अपना सुदर घर हो। मेरे कपडे-लत्ते सबकुछ बहुत करीने से रखा हुआ हो। क्या मेरा इस तरह सोचना गलत है ?

श्यामू छोडो भी ! तुम सिर्फ सोचती मत बैठा करो। (उसको पीठ पर थपकी लगाकर प्रोत्साहित करते हुए) अच्छा, चलो छबूताई, अब हम बढिया मसालेदार चाय पीएंगे।

(जब दोनो अन्दर जाने को मुडते हैं कि रास्ते पर से मानसी की पुकार श्यामू, ओ श्यामू, अरी साबू)

अपर्णा लगता है शायद मानसी पुकार रही है।

(अपर्णा और श्यामू गैलरी में जाते हैं। मानसी रास्ते

से ही पूछती है, क्या तुम लोग घर मे हो ?)
अरी ओ मानसी, ऊपर तो आ जाओ।
(अन्दर आते हैं। मानसी उनकी मित्र है। श्यामू हड़बड़ी म शर्ट पहन लेता है)

अपर्णा अच्छा। अब कैसे भला-सीधे शर्ट पहन रहे हो ?
(श्यामू शर्ट उतार रखता है और दरवाजा खोलता है। मानसी का प्रवेश, सफेद साडी, गले म हाथ में आभूषण नही। कलाई पर घडी। लिपस्टिक आदि नहीं। बाला का थॉमक्ट—सादी-सादी और स्वाभाविक चेहरे पर बुद्धिमानी और हसमुखता)

श्यामू क्यो घर ढूँढने मे देर तो नही लगी ?

मानसी नही तो। और देखो, मैं थोडी देर ही बैठने वाली हूँ यही पास मे साऊथ इन्डियन हाल मे जमन का लेक्चर है—ॲडव्हरटायजिंग पर (अपर्णा से) साबू, तुम चलोगी ?

अपर्णा लेक्चर सुनने ? ना बाबा आज पूरा दिन सामान जुटाने म बीत गया। शाम को बायजी के घर से सतीश को लाना है। उसे वही छोड आई हूँ।

मानसी अरी पर तुम्हारा बच्चा तो वही रहता है ना ?

अपर्णा हा, मतलब व लतक मैं भी तो वही थी और आइन्दा उसे वही रखना पडेगा। कम से कम उसके बहाने तो बायजी का भी वक्त कट जाएगा।

श्यामू तेरा जमन आज किस विषय पर भाषण करेगा ?

मानसी सर उसका ! अरे, ऐसा इम्प्रेशन बनाने के लिए कि ॲडव्हरटायजिंग के सबध मे वह बहुत कुछ खास जानता है, हर महीने भाषण देता है। बडा ब्रिलियट है। ए व्हेरी नाइस पर्सन ।

श्यामू फिलहाल तुम जमन के साथ ही हो न

मानसी येस ! एनी ऑब्जेक्शन ?

श्यामू मुझे भला ऑब्जेक्शन क्यों होने लगा।

मानसी मेरा एक पुराना प्रेमी होने के नाते। (अपर्णा की ओर आंख मारकर मुस्कराती है। अपर्णा भी मुस्कराती है)

श्यामू देखो, साबू की तरफ आंख मारकर नाटक के व्हिलन की तरह अभिनय मत करो। तुम्हारे संबध मे मैं उसे सब कुछ पहले ही बता चुका हूँ।

मानसी गुड ! (श्यामू से) श्यामू, भई जायकेदार चाय बना कर तो लाओ भई। जाओ ।

अपर्णा मैं बनाती हूँ चाय।

मानसी अरी अगर पतिराज खुद चाय बनाए तो तुम्हे क्या एतराज है ? क्यो आकाश फट जाएगा ?

श्यामू हा हा, अभी ले जाता हूँ। वैसे उसने चाय बनाकर तो रखी है।

(अन्दर जाता है)

मानसी देखो भई, मेरी चाय मे तुम्हारा मसाला-वसाला मत डालना। मेरे भाग मे तो बस सब मसाले वाले ही आ टपकते हैं। यह जमन भी—उसे तो बस हर वक्त चाय मे मसाला पडना ही चाहिए।

अपर्णा मानसी, सुना है, जमन और तुम कंपनी छोड रहे हो। कह रहा था कोई आफीस मे।

मानसी अॅडव्हटायजिंग फील्ड मे हमेशा अस्थिरता रहती है ही। तुम्हारी कंपनी में भी कुछ हलचल है ना कुछ लोग जाएंगे।

(ट्रे लेकर श्यामू का प्रवेश)

श्यामू कहा जाएंगे ?

मानसी साव की कपनी मे रिट्रेंचमेंट हो रहा है वाडिया छोड कर चला गया

अपर्णा हा सुना है, ठोसर नामी कोई मराठीभाषी आएगे डायरेक्टर

मानसी अरे वही कृष्णा ठोसर ! कृष्णकात ठोसर। सब उसे केटी कहते है। उसका अपना एक बडा-खासा कमर्शिअल स्टूडियो है। उसमे सौ-डेढ सौ आदमी काम करते है। उसने यह एक अॅडिशनल कपनी ली है। कुछ भी रहो, वट ही इज ए व्हेरी नाईस मैंन।

अपर्णा मेरी तो धडकन बढ गई हे। अभी-अभी तो नया मकान लिया है। अगर मेरी नौकरी छूट गई तो। —फिर इनकी तनखाह मे क्या होगा ? कुछ पैसा बचा हुआ था—हमारे नानानाना की जमीन बेचकर कुछ जुटाया था और बाकी कर्जा ले रखा है। अपनी तनखाह से चुकाने का इरादा था मेरा।

श्याम् हा, हा, तुम्हारी तनखाह से ही। लो चाय लो। तुम दोनो मिलकर मुझमें अजीब-सा इंफिरिऑरिटी काम्प्लेक्स पैदा कर देती हो। कोई और विषय नहीं है क्या ?

(दोना मुस्कराती है)

अपर्णा देखो जब हमारी शादी हुई तब इसके पास था ही क्या ? (बनियान दिखाते हुए) यह देखो।

मानसी हा हा इतना ही नही सिर्फ। इसके पास एक घडी थी

अपर्णा वह भी है। सुबह जागने के लिए अलाम लगा दो तो वह ठीक रात को सो जाने पर बजता है।

श्याम् हा हा, लेकिन बजता तो है ना ?

अपर्णा हां जी ! बजना है जरूर। पहले यह बनियान उतार लो वरना ऊपर से शर्ट पहन लो।

मानसी तुम्हें फटी हुई बनियान का

श्यामू रहने भी दो। (बुशशर्ट पहन लेता है)

मानसी अगर मुझसे तेरी शादी हो जाती ना तो मैं उसी फटी हुई बनियान से उसे कालेज भेज देती ! जाओ— पढाओ।

श्यामू आज जैसे नारी मुक्तिदाता है, नमझमर तो वही तुम दोनो मेरे पीछे नही पडी हो ?

अपर्णा (हाथ को उछालते हुए श्यामू से) तुम चुप रहो जी। कप अन्दर ले जाकर रखो। (श्यामू कप उठाकर ले जाता है) —क्यो री, यह जो कृष्णकांत ठोमर है वह

मानसी नोन अज केटी सब उसे केटी ही कहते हैं।

(श्यामू का बटन लगाते हुए प्रवेश)

अपर्णा जमन के माफत उससे कुछ कहना पडेगा। बताओगी ?

मानसी क्यो नही ? जरूर तुम्हारा जॉब रिसेप्शनिस्ट-कम क्लार्क का है ना ? नो प्राब्लेम।

श्यामू देखो, एक बात बता देता हूँ जॉब भले ना मिले कोई प्राब्लेम नही। मैं पेपर जाचूगा, टयुशन करूँगा चाहे तो पी० एच० डी० का काम छोड दूंगा।

अपर्णा मुझे इससे सवासौ रुपये ज्यादा तनखाह मिलती है ना सो मुझसे जलते हैं। जलकुकडा कही का।

मानसी अरी मद की जाति आखिर जलनखोर लकडी ही है। हमेशा जलते रहते है कमीने कही के।

श्यामू अरी, मैं जलता-वलता नही हूँ लेकिन इसने सिर्फ मैट्रिक पास किया है। जब कि मैं एम० ए० हायर सेकड क्लास हूँ। फिर भी इसकी तनखाह मुझसे सवा

सौ रुपये से ज्यादा। तिसपर भी मैं यह नही कहता कि नौकरी छोड दो। दरअसल, सवाल यह है कि अब हमने अपनी गृहस्थी बसाई है, खाना बनाना, चौका बतन, घर के सारे काम काज सतीश की देख-भाल

मानसी हटो ! नॉनसेन्स। यह सब कुछ तुम चाहो तो नौकरी छोडकर करते रहो। क्या जरूरत है कि सब कुछ तुम्हारी पत्नी ही निभाती रहे। कुछ नही औरतो को घर की चाहर दीवारी के भीतर बाँध रखने की तुम्हारी साजिश है। बस उन्हे इससे बाहर नही निकलने दोगे, न उनमे कान्फिडन्स बढाने दोगे न उन्हे अपनी कैरियर बनाने देते

श्यामू (खीज से) कोरी कैरिअर करने वाली औरतो की गिरस्ती की हालत तो जरा एक बार आखे खोलकर देखो।

मानसी अरे, लेकिन गिरस्ती की सारी जिम्मेवारी औरतो पर ही क्यो ? उसमे पति को भी इक्वली उठाना चाहिए। साबू से तुम्हारी पगार कम है, ठीक है, छोड दो तुम नौकरी और सभालो घर-गिरस्ती।

श्यामू जाने दो अब इस वक्त तुम मैजारिटी मे हो और मैं पडा मायनारिटी मे। फिलहाल चुप रहने के सिवा मुझे कोई चारा नही है।

मानसी (मुस्कराते) कुछ भी हो, एक बात बल्कि श्यामू मे बडी अच्छी है। वैसा बडा भला-गरीब आदमी है (साबू से) अरी इससे अच्छा खासा पकाने-बनाने का काम करा लो। साबू, यह खाना बहुत बढिया बनाता है। हम कालिज मे जब जब कहीं पिकनिक पर जाया

करते थे न, उस वक्त हमेशा श्यामू बढ़िया रसोइया बना करता था।

श्यामू क्यो री, आजकल तुम्हारा वह फडणीस गजा ववन फडणीस (अपर्णा से) मानसी का पहला पति (श्यामू और मानसी दोनो हसते हैं) क्या कभी भेंट हुई थी इधर उससे ?

मानसी अरे वह यहा कहा ? वह तो अहमदावाद चला गया था ना ?

श्यामू सुना है, वापस आ गया है। यही किसी कालेज मे—

मानसी मजा तो देखो भई जब भी मेरा कोई दोस्त मुझसे मिलने आता तो उसे बहुत गुस्सा चढता। उसे लगता रहता जैसे मे इसके नाम का जप करते हुए उसके इर्दगिर्द मडराती रहूँ। धत् तेरी की, मेरी भला उससे कैसे निभ सकती थी। अपने को इटलेक्चुअल कह-लाता था साला। और मुझसे क्या कहा करता मालूम है ? मुझे बच्ची नही, बच्चा चाहिए। मैंने उससे कहा, क्यो बच्चा क्यो ? क्या एक अगुली-भर नीचे जो रहता है, उससे वह सीने-सा कीमती बन गया ईडिएट (अपर्णा से) बस और क्या, एक साल-भर मे हमारी अनबन हो गई। हम टूट गये।

श्यामू पर जानती है अब उसके दूसरी भी बच्ची है।

मानसी वाऽह, फिर तो अब बबन का गजा सिर और चम-कने लगेगा।

श्यामू मानसी, चलो फिर एक बार चाय पियेंगे। लगातार तेरे पुराने पतियो का जिक्र हो रहा है—गरम-गरम चाय के लुफत लेगें। (अपर्णा से) उठो जी छबुताई। जरा सी चाय बनाओ। सॉरी, छबुताई चाय बना-

ओगी या मैं ले आऊँ ? अब ठीक रहा ना मानसी ?

(सावित्री चाय लाने जाती है)

मानसी गुड् ! श्यामू यह छबुताई नाम खास तुम्हारे प्यार की पसंदगी का लगता है। है ना ?

श्यामू क्यों ?

(अन्दर जाते जाते अपर्णा मुडकर रुक जाती है)

मानसी उन दोज गुड ओल्ड डेज तुम मुझे भी तो छबु ही कहा करते थे। याद है ? कहीं इसमें कहीं इमोशनल इन्वॉलमेंट वगैरह तो

श्यामू हो तुमसे मेरा इन्वॉलमेंट। (अपर्णा से जाओ तुम चाय ले आओ जाओ।

(वह अन्दर चली जाता है)

मानसी (नटखटभरी मुस्कराहट। कैसा मजाक किया ?

श्यामू (गुस्से से) पहले दर्जे की नादान हो। यह सब कुछ उसके सामने कहने की क्या जरूरत थी ? (अपर्णा दरवाजे म खडी) बिना वजह गरात जगह आग लगाने की करतूत में माहिर हो बस। (कुछ रुक कर) अरी, कुछ दिन पहले तुम्हारे दूसरे पति महोदय मिले थे।

मानसी कौन खडया।

श्यामू बिलकुल ठीक। वडया मडलीकर, तुम्हारे बारे मे पूछ रहा था।

मानसी क्या खडया ने अब तक दूसरी शादी नहीं की ?

श्यामू नहीं तो। शायद उसे आशा होगी कि तुम फिर एक बार लौट आओगी।

मानसी कुछ भी रहे पर वडया है बडा भला आदमी। जेम ऑफ द मैन। पर निहायत रामायण का राम। मा-बाप के सिवा जिन्दगी-जगत मे न कुछ जानता है, न

देखता है। अगर वे उसे वनवास भी भिजवा देते, तो वह मुझसे कहता, "हे सीते, चलो हम वनवास-चल देगें।"

श्यामू ह खैर, अब जमन के साथ भी तो ढग से टिकी रहो।

मानसी अरे यार, वह तो अपना दोस्त है। दोस्त। (कधे उचका कर अन्दर झाकती है) क्यो छवुजी, चाय बन रही है ना ?

(अपर्णा चाय ले आती है)

श्यामू और देखो, अब हमे मकान मिल गया है। मानसी, कभी-कभार खाना खाने आ जाना। छवुजी बहुत बढिया जायकेदार खाना बनाती है।

मानसी बस ! बस ! तारीफ के पुल बाँधकर औरतो को रसोईघर मे दफनाना बस करो। मतलब कि उनके लिए बाहर के सारे रास्ते बद।

श्यामू यह मानता हूँ कि औरतो के बारे मे बल्कि तुम्हारे विचार सचमुच बहुत आदर्श है, लेकिन

मानसी लेकिन यह ना कि कोई 'दूसरा' उस पर अमल करे। अरे भई, जरा यह भी तो बताओ कि वह दूसरा कौन है—जरा उसका पता तो दे दो, क्योकि उसी दूसरे के लिए मेरी शादी रुकी पडी है।

श्यामू अह, शादी भले ही रुकी हो लेकिन तेरा और कुछ थोडे ही कही रुका पडा है।

(सब हँसते हैं। मानसी उठ जाती है)

मानसी चलो, अब मैं चलती हूँ। जमन का भाषण अबतक जरूर शुरु हो गया होगा। बहुत देर हो गई—(मकान देखती हुई) तेरा मकान बल्कि है बढिया। (फोटो की

की तरफ देखकर) यह फोटा किसका है जी ?

(अपर्णा कप उठाकर अन्दर चली जाती है)

श्यामू नानाकाका का, मतलब इसके पिताजी ।

मानसी अरे इसकी मा कभी दीख पडी भी क्या—वही जो तवलनवीस के साथ भाग गयी थी ।

श्यामू नही, न जाने कितने साल बीत गये । क्या मालूम कहा है ? उसी के कारण साबू की शिक्षा-दीक्षा नही हो पाई । न मालूम अपनी मां की तरह यह भी किसी का हाथ पकडकर भाग न जाय इस डर से बायजी ने इसे कालेज मे भर्ती नही होने दिया । साबू के दिल मे यह बात बहुत सालती रहती है हमेशा ।

(मानसी खिडकी के पास खडी) अपर्णा बाहर आती है ।

मानसी अजी, यहा श्मशान दीखता है ? फिर क्यो साबू यहा भूत-पिशाच वगैरह आ जाते है या नही । (घबराये हुए स्वरा म) रात को—आधी रात को भूत पिशाच ?

अपर्णा ओफ श्यामू इससे कुछ कहो ना, मुझे बहुत डर लगता है ।

श्यामू रहने भी दो । मानसी मत सताओ उसे । फिर बहुत घबरा जाती है वह । यहा तक कि नीद मे चौककर हडबडा कर जाग पडती है ।

मानसी वाह, कितनी फिक्र कर रहे हो जी अपनी पत्नी की । कुछ भी कहो लेकिन साबू श्यामू वल्कि है एक आदश पति । ढूढने पर भी ऐसा हीरा कही मिलने वाला नही ।

श्यामू फिर क्या ? तभी तो यह कलवडपूजा के लिए जायेगी

और प्राथना करेगी 'जन्मजन्मातर तक इसी पति का लाभ हो।

मानसी छी छी, इन सभी हिन्दू औरतो का खून ही एक वार पूरा वदल देना चाहिए। उनके खून मे सीता सावित्रिया इतनी रचपच गई हैं कि वस। उन दोनो की बोगस ट्रडिशन्स। अरे, यह तो वताओ भी कि सीता ने ऐसा क्या किया जो हमारे मन मे उसके सवध मे श्रद्धाभाव जग उठे ?

अपर्णा क्या किया ? और कितना क्या करना चाहिए ? इतना महान अग्निदिव्य (अग्नि परीक्षा)

मानसी धत् तेरी की। अरी अग्निदिव्य के समान अपमान-जनक वात के लिए वह राजी हो गयी। छी श्यामू, बल्कि तुम इस सीता-सावित्री पर ठीक तरह से नजर रखो वरना यह भी कही सति वति न हो जाए। वाऽह वा, हिन्दुधम एक पति जन्मजन्मातर तक अरे भई, एक को एक जनम मे निभाना ही हो तो मुश्किल हो जाता है।

(शरीर पर रोमाच का अनुभव कर सिहर सी उठती है।)

श्यामू छोडो भी। तुम फिक्र मत करो। तुम तो हर साल एक नया पति चाहती हो ना कैलेंडर के जैसा ?

मानसी अरे भई। यह निहायत अलग सवाल है कि वाकई पुनर्जन्म मे विश्वास किया जाय या नही ? दरअसल बात तो यह है कि इस परिवार नियोजन के युग मे पुनजन्म पर विश्वास करना क्या इतना आसान है। भई सारी आत्माएँ क्यू लगाये यो खडी हो जाएगी, नया जन्म पाने के लिए कि वस

(हसती है। जल्दी-जल्दी भागत हुए) चलो, अब तो मैं चली। मैं गई री साबू

अपर्णा फिर आ जाना जरूर किसी दिन खाना खाने—
(वह भागती हुई चली जाती है। श्यामू और अपर्णा दरवाजा बन्द कर गलरी म आत हैं। हाथ उठाकर टा-टा—फिर अन्दर जात हैं। अपर्णा श्यामू की ओर देखकर छद्म भाव म मुस्करानी है। श्यामू असमजस मे पडा बुशशट के बटन खालने लगता है।)

श्यामू चलो री, हमें वायजी के घर जाना है ना? चलो, सतीश को ले आते हैं। मैं पाँच-दस मिनट मे झट नहा लेता हूँ।
(अपर्णा उसकी बाता की अनसुनी कर छद्म भाव से मुस्कराती रहती है)
(हाथ पीछे बाधे श्यामू की ओर परिहासत्मक नजर न न गुनगुनाती है।) अर भई, क्यो मुस्करा रही हो तुम साबू?

अपर्णा (मुस्कराहट के साथ) मानसी के आ जाने पर तुम्हारी तबीयत बडी खुश हो जाती है हौसला बढ जाता है कि बस। क्यो जी, उससे शादी क्यो नही की तुमने?

श्यामू शादी! उसके जैसी तेज, जिद्दी लडकिया दोस्ती निभाने और बहस करने के लिये बेहतर होती है साबू पत्नी के रूप मे नही।
(तौलिया लपट स्थान की तैयारी म) अभी झट नहा लेता हूँ। वायजी के घर चलेंगे। और देखो वायजी अगर खाने के लिए आग्रह करती भी हैं तो ना मत कहना। मेरे पेट मे चूहे जो दौड रहे हैं।

र्णा ना, आज वायजी के यहा खाना नही खायेंगे। हमारे अपने घर का पहला दिन है।—जाओ जरा सी ब्रेड औरअडे लेते आना। पहले कुछ खा लेंगे, फिर जायेंगे सतीश को लाने।

(श्यामू कपडे उतारते हुए गडबडी मे नहाने घुस जाता है। अपर्णा कुछ जुटा रही है कि अधेरा फैलने लगता है।

अधेरा।

रोशनी।

(श्यामू का घर—शाम का समय अपर्णा अभी तक घर नही आई है। दरवाजे की घटी बजती है। श्यामू जल्दी से बाहर आ जाता है। वह तयार होकर बाहर जाने को, नई कोरी बाहवाली बनियान पहने हुए पैंट का बेल्ट बाधते हुए दरवाजा खोलता है। दरवाजे म शाताबाई हडबडी मे अन्दर घुसती है।)

यामू क्यो जी शाताबाई—अपर्णा नही आई है अबतक।

ाता अभी तक हाफिस से नही लौटी, कितने बजे हैं जी ?

यामू (रिस्टवाच देखत हुए) छ बज रहे है। (मज पर रखी घडी की सुइया घुमाते हुए) क्या कोई खास काम था क्या शाताबाई ?

ाता काम वाम तो कुछ नही था। पर बात यह कि मैं ठहरी परले दर्जे की भुलक्कड सो जब कभी कुछ याद आ जाता है तो तुरन्त कर देती हू।

यामू हा हा ठीक ही तो है, क्या कुछ कहना था साबू से ?

ाता कहेंगे क्या खाक। अरे आपने शोले फिल्म देखी है ?

यामू हाँ जी, देखी तो है।

ाता (निराश से स्वर मे) फिर तो बात ही खतम। (कुछ उत्साह-

पूर्वक) और अपर्णा जी न ?

श्यामू हाँ जी, उनने भी तो देखी है।

शांता देखी है—?

श्यामू हाँ हाँ, पर क्यो, क्या हुआ ?

शांता वैसा कुछ नही अगर नही देखी होती तो कहने वाली थी कि जरूर देखना। हमे तो कोले इतनी पसद आई कि बस—काफी बढ़िया

श्यामू आपने कब देखी जी ?

शांता यू मैंने कहा देखी है—लेकिन हमारे साहब देखकर आये और पूरी स्टोरी बताई। जानते हो इस तरीके से कि टिकट के पैसे भी बचाये हमने, आम के आम गुठली के दाम। है ना ?

श्यामू याने कि आप खुद कभी फिल्म देखने जाती ही नही ?

शांता क्यो नही, जाती हूँ। पर हाँ, अगर अरुण मेरे साथ चले। याने कि एक तरफ हमारे साहब और दूसरी तरफ अरुण। मुझे उन मुए लोलुप लोगो के धक्के खाना पसद नही, कमीने कही के। उधर बैठे-बैठे खुद फिल्म करना शुरू।

(रास्ते से 'श्यामू ए श्यामू' मानसी की पुकार—श्यामू गैलरी जाकर उसे ऊपर बुलाता है। शाताबाई खिडकी से झाकती है। आओ ऊपर तो आ जाओ। टैक्सी को रोक रखो कुछ देर—कहकर श्यामू का अन्दर चले जाना।)

शांता लगता है कोई फ्रेंड है आपकी—(कहते हुए शाताबाई चली जाती है कि मानसी का हडबडी म प्रवेश। पहले जस ही सीधी-सादी खल दी गई सफेद साडी, बॉयकट अस्त-व्यस्त बाल—धायली म है। आते ही दरवाजा बद कर लेती है।)

श्यामू ओऽफ, बैठोगी भी ! अभी चाय बनाता हूँ ! मुझे भी तो बाहर चलना ही है।

मानसी ना, मुझे न चाय-वाय चाहिए और न ही बैठने की जरा भी फुसत है। नीचे टैक्सी जो रोक रखी है— और क्या साबू अभी तक नही आई ?

श्यामू बस अभी कुछ देर मे आती ही होगी। तुम बैठो तो सही।

मानसी जानते हो मैं अभी क्यो आई हूँ ? जमन ने केटी से कह रखा था

श्यामू के टी ?

मानसी (कुछ चिढकर उसी हडबडी म) अब तुम्हे क्या पूरी रामायण बताना जरूरी है।

है केटी याने कृष्णा ठोसर साबू का नया बॉस— वैसे जमन ने उससे कह रखा था कि रिट्रेंचमेट के सिलसिले मे साबू को निकालना नही—पर क्या बताऊँ लकीली ही इज मच इम्प्रेस्ड वियू साबू उसे प्रमोशन दे रहा है—कुछ पब्लिक रिलेशन्स कम कोऑर्डिनेशन—है उसके लिए प्रदर्शनी आदि सब कुछ देखना पडेगा। प्रदर्शनियाँ ऑगनाइस करनी होगी।

(सहसा श्यामू गभीर हो रहा है)

हो श्यामू तुम तो डाक्बाबू से मुँह लबी किये क्यो ओ ? क्या तुम इस खबर से खुश नही हुए हो ? (श्यामू का स्मित हास्य) देखो जी तुम्हारी साबू चाहे मैट्रिक पास क्यो न हुई पर है बडी तेज—

(सहसा शांताबाई का प्रवेश)

शांता श्यामरावजी, अपर्णा जी घर मे नही हैं, तो पूछा,

क्या दो कप चाय लाऊँ आप लोगो के लिए !

मानसी ना ना ! वस मैं तो यो निकली।

श्याम् धन्यवाद ! शाताबाई यह तो वस अभी जा ही रही है।

(शाताबाई का प्रस्थान)

मानसी वा ऽ ह्। कैसी भली पडोसन है !

श्याम् अरी पागल, भली पडोसन ! बिल्कुल गलत। अब तो वह आई थी पुलिस जैसी वॉच रखने। यह जानने और देखने, कि वाकई अन्दर क्या हो रहा है।

मानसी गजब है। गनीमत है इन लोगो की। (हाथ जोडती है—मुस्कराती हुई जाने को। मुडना) हा, तो देखो, यह गुड न्यूज साबू को दे दो। और जनाब कॉग्रेच्युलेट हर समझे ?

श्याम् लेकिन उसे तनखाह् कितनी मिलेगी ?

मानसी यही कुल अठारह् सौ मिलेंगे—बिसाईडस इसके यात्रा भत्ता आदि पवस—कुल मिलाकर दो ढाई हजार तक।

श्याम् (कटुतापूवक अपने आप से हा) उफ—मैं एम० ए० हाई सेकड क्लास गोल्ड मेडलिस्ट—लेक्चरर—ग्यारह सौ के करीब ही। और मेरी पत्नी सिफ मैट्रिक पास तनख्वाह् ढाई हजार—ऊफ—

मानसी ओ मिस्टर श्याम् श्याम् के बच्चे तुम्हारे भीतर का दैंट उम डर्टी पुरुष—पति जाग रहा है वाक्ई अब तुम साबू से जलने लगे हो।

श्याम् अरी छोडो भी—यह नही मानसी। मैं इसलिए नही कहता कि उसकी तनखाह् मुझसे ज्यादा है। पर मानसी हमारी समाज-रचना तो देखो। कितनी

विपमता—

मानसी हा हा, रुक जाना भई जरा। इस अहं मसले पर वहस करने के लिए किसी फेशनेबल मार्क्सवादी को पकडना होगा। वही अच्छी-खासी जम कर बहस करेगा। (श्यामू की गभीर मुद्रा को देखकर) श्यामू, क्यो तुम्हे इस बात की खुशी नही हुई।

श्यामू (शिकायत भरे स्वर म) खुशी क्यो नही होगी। घर मे ज्यादा पैसा कौन नही चाहेगा? लेकिन सिफ पैसा ही सबकुछ नही होता। घर-गृहस्थी कौन सभालेगा? सतीश की देखभाल कौन करेगा? उसे हमेशा के लिए तो बायजी और बालाराव के घर छोड नही सकते।

मानसी अरे भई, थोडी बहुत एडजस्टमेंट तो करनी ही होगी श्यामू। कैरियर और पर्सनेलिटी डेवलपमेंट का सवाल है जी—अच्छा! मैं चलती हूँ (सहसा कुछ याद कर) ओ जी, सुन रहे हो या नही?—वाह नई बनियान?

श्यामू देखो तो सही। मैं एक जोडा खरीद लाया और साबू और दो जोडे लाई। कुल छ बनियान हो गई। अब इतनी का करेंगे क्या? (दरवाजा खुलता है। अपर्णा का हडबडी म प्रवेश—बहुत खुश है बोलन वाली है कि)

अपर्णा ओ श्यामू। (मानसी को देखकर) अरी, तुम मेरे पहले ही पहुँच गई? मतलब मेरे आने के पहले खबर पहुँच चुकी है। (मानसी मुस्कराती ह, श्यामू गभीर। मिठाई की पुडिया खोलती है। श्यामू की सूरत देखकर) क्यो जी इतने मुँह फुलाए क्यो हो?

मानसी अरी, तुम्हे जो इससे ज्यादा तनखाह मिलेगी। लक-डजला कही का—

श्यामू शट् अप। मानसी (अपर्णा को कुछ समझाने के लहजे मे)

साबू तुम्हारी यह नौकरी, यह तरक्की नही, हमे कुछ गभीरता गहराई से सोचना होगा—आपस म सलाह मशविरा करना होगा—

अपर्णा क्यो जी ?

श्यामू ऐसा है कि तुम हमेशा बाहर रहोगी, फिर घर गृहस्थी कौन सभालेगा ? सतीश को क्या हमेशा के लिए बायजी और बालाराव को सौपना है ? फिर क्या तो मैं हर रोज दुर्गाश्रम या अनताश्रम जैसे होटल ढूढता फिरू ?

अपर्णा और भी कुछ ।

मानसी हा अगर होटल मे भी खा लिया तो क्या हर्ज है। (श्यामू उसकी ओर क्रोध से देखता है) अरी, देखो तो सही कैसा घूर रहा है। अच्छा अब मैं चली (कुछ रुकती है।)

श्यामू साबू, यह सब मामला एक बार तुमसे डिस्कस करना है—

(कमीज पहलते हुए पीछे मुडकर उसकी प्रतिक्रिया जाना चाहता है)

अपर्णा जा कहा रहे हो ?

श्यामू आज महीने का आखिरी गुरुवार है। अग्रेजी असोसिसेशन की मीटिंग है—

(पर्स खोलकर देखता है ।)

अपर्णा और पैसे चाहिए।

श्यामू (झिडककर) ना, मेरे पास है।

अपर्णा महीने की आखिरी है सो पूछा।

मानसी (गदन झटककर) ये रही हिंदू मर्दानगी । बडा सा लक्कडखाना। फिकर मत करो साबू मैं श्यामू को

अच्छा खासा 'बौद्धिक' बना दूगी। यो तो वह है कुछ नादान

(श्यामू और मानसी साथ जाने लगते हैं कि दरवाजे पर शाताबाई।)

शाता मुर्गी पकाई है आज मैंने, जरा सी ले आई हू। अपर्णा जी को आते देखा, सोचा ले चलू। जरा सी चखिए तो सही हमारी मुर्गी। खास मालवण का मसाला

श्यामू आइए आइए जी अन्दर।

(मानसी और श्यामू चले जाते है)

अपर्णा आइए शाताबाई। (शाताबाई अन्दर आती है) पेडे खाइए-मुँह मीठा कीजिए (उसके हाथ म पडे रखते हुए) मुझे तरक्की मिली है।

(शाताबाई मुर्गी की डोक्ची अ दर रखती है।)

शाता बाऽवा, ये बात है। बहुत खुशी हुई। याने कि अब तो मोटर कार वगैरह खरीदेंगे। है ना।

अपर्णा (मुस्कराकर) नही जी, कहा की मोटर-वोटर ! बस, टूर पर जाना पडेगा बल्कि। अहमदाबाद नागपुर राजकोट

शाता वा ह वा बहुत अच्छा, खूब बहुत खूब। पर क्यो जी अकेली ही जाएगी या श्यामराव के साथ ?

अपर्णा अकेले ही जाना पडेगा। हा कभी-कभी दफ्तर के और लोग भी होगे साथ।

शांता लेकिन जरा सँभल कर रहना जी। कुछ भी कहिए आखिरकार पुरुष होते है बडे चालू। सीधे कभी चुप नही बैठेंगे।

अपर्णा हा वह तो है ही।

शांता और ये यहा से अब जो निकली वो ?

अपर्णा कौन मानसी ।

शांता हा वही । उनसे कहना जरा शकुन्तला हेयर ऑईल का इस्तेमाल करना बाल लबे हो जायेंगे ।

अपर्णा (मुस्कराकर) ओऽहो, शाताबाई अजी उसने अपने लम्बे बाल कटवाये हैं।

शांता सो तो मैं जानती हूँ लेकिन मै यों ही मजाक कर रही थी। (दाना हँसती है) अच्छा जी, यह खुशखबरी सुषमा को दी या नही ! उसको भी बहुत खुशी होगी सुनकर । ठहरो, उन्हे अभी बुलाती हूँ ।

(गॅलरी मे से दूर पुकारती है साथ ही दबे स्वर मे अपर्णा से)

उसके वे नाटकबाज पति महाशय पधारे है। शराब के नशे मे धुत्त लेटा रहता है बस। (अभिनय करती हैं कि सुषमा का प्रवेश) आओ। आओ जी, सुषमा जी। पेडे खाओ। हमारी अपर्णाजी को तरक्की मिली है। अब पूछो मत, वे दौरे पर जायेंगी दूर-दूर हा अहमदाबाद, राजकोट, नागपुर। हा जी, नागपुर जाओगी तब सतरे जरूर लाना। हमारे साहब को बहुत पसद है। अच्छा। मैं चली। साहब के आने का वक्त जो हो गया। (चली जाती है)

सुषमा क्यो, आज तुम चर्चगेट पर दिखाई नही दी ?

अपर्णा आज मैं बोरिवली डबलफास्ट के लिए गई पाच पेंतालिस की मैने देखा आपको दो नबर पर थी ना ? साथ मे कौन थी ?

सुषमा ओ, हऽ वह ? क्लेरा रॉड्रिक्स

अपर्णा अच्छा वह ? आज सा जोडी पहने हुए थी, मैंने

पहचाना तक नही उसे

सुषमा अरी क्या बताऊ ? जानती हो साथ मे सदा दो पिनें रखती है वह

अपर्णा पिनें ? वे भला क्यो ?

सुषमा अरी, कुछ आदमी मुए जानबूझकर भीड का फायदा उठाकर उसकी जघाओ मे हाथ डालते हैं तब वह सीधे पिन चुभाती है।

अपर्णा वाहवा यह बहुत बढिया तरकीब है। मुझे भी अब पिनें रखनी होगी दफ्तर जाते समय आजकल बहुत तकलीफ होती है। (पेडे देते हुए) लीजिए यह मेरी तरक्की के।

सुषमा वाह वा कॉंग्रेच्युलेशन्स। कुछ भी कहो—विज्ञापन के फील्ड मे नौकरी करना अच्छा नही तो हमारा देखिए न तरक्की न कुछ। साहब की मर्जी हुई तो सालभर मे पन्द्रह-बीस रुपये बढते है, बस। दर-असल मुझे अपने पापा के कारखाने मे अच्छी नौकरी मिल जाती पर क्या करे अनबन है न। बिल्कुल बिगड गये हैं सबध।

अपर्णा पर क्यो ?

सुषमा शादी के कारण और क्या ? उन्हे यह कतई पसद नही था। हम ब्राह्मण और विश्राम सुनार जाति के। तिसपर भी नाटकवाला और तो और कुछ अभिनेत्रियो के साथ उसके पहले प्रेम फिर आयु मे मुझसे काफी बडे सो जबरदस्त विरोध। मै जो भाग गई घर से (बैठते हुए)वरना आज मोटर गाडी मे घूमती फिरती। मेरे पापा का स्टेनलेस स्टील के बतनो का कारखाना है—शानू के पति वही पर

मैनेजर है। शालू मेरी छोटी वहन पापा ने उसे मोटरकार खरीदवा दी है कभी जव मैं वस स्टाप पर खडी होती हूँ और वह कार मे जाती है। मुझे देखती है पर कभी फिकर तक नही, सीधा अन देखा कर चली जाती है। हू ठीक है। आखिर मोटर कार मे थोडे ही सब सुख समाया हुआ है? क्या जी कतई नही। मैं तो अपने हाल पर खुश हूँ।

अपर्णा (कुछ समय बाद) आजकल हमारे दफ्तर मे कुछ गडवड है।

सुषमा हाँ जी, सुना है कोई नया वास आया है है ना?

अपर्णा (उत्साहपूवक) हाँ कृष्णाकात ठोसर के० टी० कहते है सव उसे।

सुषमा सुना है देखने मे वडा सुन्दर है?

अपर्णा आपसे किसने कहा?

सुषमा अरी, आपकी वह राजेबाई मिली थी। क्या उनको भी प्रमोशन मिल गया?

अपर्णा नही तो वह तो सिफ कैशियर है। मैं अव कोऑ-डिनेटर वन गई हू। वैसे इस काम के वारे मे मैं ज्यादा कुछ जानती तो नही पर लगता है कुछ अनुभव के वाद निभ जायेगा।

सुषमा हाँ राजेवाई कह रही थी कि के० टी० दीखने मे जितना सुदर है, उतना ही मिजाज मे उमदा।

अपर्णा (मीठे सपने मे खोती हुई सी) हाँ-हाँ एक अजीव इत्तफाक है। देखिए (सहसा स्वर बदल कर) आपको थोडी फुरसत तो है?

सुषमा हाँ-हाँ विलकुल।

अपणा विश्राम जी अ। गए हैं सो पूछा।

सुषमा अजी वे तो पीने बैठ गये होंगे बस। हाँ आप बताइये तो।

अपर्णा बडा अजीब इत्तफाक। पता नही आप यकीन करती है या नही ऐसी बातो पर। मैं तब नायजी के घर रहने आई थी तबकी बात है मैं बारह साल की थी वही ऊपर की मजिल पर मिनकर का एक परिवार रहता था मॉ बाप और उनका एक लडका उसके पिताजी उस समय तबादला होने से नेलगाव गए हुए थे लडका मैट्रिक की क्लास मे था सतीश। उसका नाम सतीश मिनकर देखने मे खूबसूरत अच्छा गोरा, नुकीली नाक कपोल पर बिखरी लटें। जब मैं छत पर चली जाती, वह भी मेरे पीछे-पीछे आता दो तीन बार लगातार वही हुआ उसे अंग्रेजी कविताओ का बडा ही शौक। और सहगल के गाने बहुत पसद थे एक बार उसने मुझसे कहा, 'साबू तुम्हे अंग्रेजी कविता पसद है?' उस समय मैं सिर्फ बारह साल की थी। अंग्रेजी कविता मेरी समझ मे क्या खाक आती। फिर भी मैंने कह दिया हा-हाँ बस, फिर वह किसी अभिनेता के ठाठ मे खडा रहा और कविता गाने लगा—

They are all gone away
The house is shut and still
There is nothing more to say
Though broken walls and gray
The winds blow bleak and shrill
They are all gone away

अग्रेजी का प्रोफेसर बनने की तमन्ना थी उसकी। सहसा उसकी मा ने नीचे से पुकारा मा से बहुत डरा करता था। उसकी आवाज सुनते ही बहुत घबरा गया। मुझे शेकहैण्ड करते हुए बोला, 'आगे की कडिया कल बताऊगा' और उसके बाद वह कभी नही मिला।

सुषमा क्यो ?

अपर्णा उसकी मा ने मना जो किया था।

सुषमा पर क्यो ?

अपर्णा मेरे कारण, उसका ध्यान पढाई से उचट जाएगा इसलिए। तिसपर मैं ठहरी भागी हुई मा की लडकी। वह पढाई म बडा तेज था। मैट्रिक की परीक्षा मे पहले पचास नबरो मे आ ही जाता—सैगल के गाने बहुत पसद थे उसको, सो मैं छज्जे मे बैठकर गाया करती थी 'झुलना झुलाव झुलाओ रे। अबुवा के डारी पे कोयल बोले ' वह ऊपर से छज्जे मे आ जाया करता। छज्जे की मुडेर पर ठोडी रखे खडा हुआ लगता जैसे बादलो मे से चाद झांक रहा हो उसकी गैलरी मे गुलाब के पौधो के गमले थे। जब मैं गाने लगती थी, वह ऊपर से गुलाब की पखुडिया मुझ पर फेका करता।

(सपने म खोई सी देखती है। उसे उसी गीत के धीमे स्वर सुनाई देते हैं।)

सुषमा फिर आगे क्या हुआ ?

(सपमा सहसा स्वप्न से जागती सी)

अपर्णा फिर क्या, उसकी मा ने बायजी से कहकर मुझे गाने की मनाही की—उसकी पढाई में खलल जो पडा था। और उसे लेकर वह अपनी बहन के घर चली

गई परीक्षा होते ही उसे लेकर वह सीधे बेलगाव चली गई। उसके बाद सतीश कभी दीखा नहीं।

सुषमा ओफ़। फिर ?

अपर्णा जून मे पता चल गया कि सतीश फेल हो गया और बाद मे मालूम हुआ कि बेलगाव मे ही रेल इंजिन से टकरा कर उसकी मृत्यु हुई।

सुषमा क्या ? आत्महत्या ?

अपर्णा क्या मालूम क्या था !

(वह गभीर और उदास। उदास सगीत। दोनो चुप।)

सुषमा छोडिए भी। आखिर श्यामराव तो मिल ही गये। अग्रेजी के प्रोफेसर।

अपर्णा हा जी। जब श्याम ने पहली बार मेरा हाथ मागा तब न जाने मुझे लगा, हो सकता है सतीश की आत्मा ने ही इसे मेरे पास भेजा हो।

सुषमा हा, तभी तो आपने बच्चे का नाम सतीश रखा।

अपर्णा (आखें पोछती हुई) हा वह पैदा हुआ तब बिल्कुल सतीश जैसा दीखता था।

सुषमा हा, हा, लेकिन तुम भी सयोग की कोई बात कर रही थी ?

अपर्णा (सजग-सी होती हुई) हा जी, मेरे ऑफिस मे अब यह जो के० टी० है पहली बार जब उसे देखा तो देखते ही मुझे लगा, इसे भी सतीश की आत्मा ने ही भेजा है। हूबहू सतीश अगर आज वह होता तो बिलकुल ऐसा ही दीखता और इत्तफाक देखिए कि के टी को भी सैगल के गाने बेहद पसद मैंने अपनी आवाज मे उस गाने का कैसेट उसे दिया झुलना झुलाय, झुलाओ रे—बेहद खुश हो गया वह मुझ पर।

बालाराव ओ ऽ हो, ओ। सुषमा जी आप ! यहाँ ? वा... घबरा गया था। (वह अपना हाथ छुडा लेती है) मेरा दिल धक-सा हो गया। लगा, गया काम से। कहीं बायजी सहसा यहां न आ टपकी हो ?

अपर्णा क्यो आने वाली थी ?

अच्छा चलती हूँ (कहकर सुषमा का मुस्कराते हुए प्रस्थान।)

बालाराव आ हां, आने वाली है।

अपर्णा (मुस्कराकर) ओ फ् ओ नहीं जी ! आप इत्मीनान से बैठिये जी ! पर अपना रोजाना क्लब का रास्ता छोडकर इधर कैसे आ गये ?

बालाराव अरी, क्लब के प्रेसिडेंट का निधन हुआ। शोकसभा है क्लब मे। सीधा वहा जाकर दो मिनट खडे होने से बेहतर है कि यहीं दो मिनट बैठ जाऊं। (हसते हैं) श्यामराव कहा गये ?

(बालाराव को गम्भीर और दबी आवाज से बोलने की आदत है। मुह मे दबाया हुआ सिगार शायद बुझा हुआ।)

अपर्णा श्यामू कहीं चला गया है। बायजी कैसी है ?

बालाराव अरी भला बायजी को कभी कुछ होता है। अच्छी-भली तो है। पूजा अर्चा अनशन—भजन-कीर्तन शिवजी को तीन लाख बेल के पत्तो का चढावा गणेशजी को पाच लाख दूर्वांकुरो का। कृष्ण भगवान को आठ लाख तुलसीदल का अरी, लाखो के नीचे बात ही नही। अलावा इसके कई साधु और मुनि महाराज और (वाजा)—और सतीश तुम्हारा। सदा सताता रहता है उसे, थका डालता है।

अपर्णा इस हफ्ते-भर मे दरअसल मैं वहा जा ही नही सकी। कल ही श्यामू से कहा कि जाना और सतीश को ले आना पर वह भी तो नही जा पाया।

बालाराव अरी पर श्यामराव गये कहा हैं ?

अपर्णा *आज उसकी मीटिंग है—अग्रेजी एसोसिएशन की।* (उठन हुए) बालाराव बैठिए, गरम-गरम चाय बनाती हू और उपमा

बालाराव ना, अरी मत बनाना कुछ।

अपर्णा क्यो जी ?

बालाराव दिन ढल गया है। चाय कॉफी दूध आदि सूर्यास्त के पहले ठीक है पर

अपर्णा हा जी समझी, पर इस वक्त आप जो पीते हैं वह यहा कैसे मिल सकता है ?

बालाराव हा हा, सिर्फ पानी तो मिल सकता है ना ? हा पर देखो, पानी स्टेनलेस के गिलास मे दो या तो लोटा और प्याला हो तो देना, (अपर्णा अन्दर चली जाती है। बालाराव सिगार जलाता है। वह लोटा प्याला ले आती है।

वा ह वा गुड। (प्याले म पानी उडेलते हैं। जेब मे से ब्राडी की छाटी चपटी बोतल निकाल कर कुछ प्याले म डालते हैं।) जब तू वहा थी तब रात को मेरे लौटने तक स्टूल पर गिलास, बोतल, पानी रखा करती थी। पर अब, सबकुछ मुझी को करना पडता है अरी, तुमने अभी तक फ्रीज नही खरीदा ? (अपने से ही चियस कहते हुए प्याला उठाकर मुह को लगाते ह।)

अपर्णा गजब की महँगाई है बालाराव। तनखा पूरी कहा पडती है ?

बालाराव हाँ सो तो है। जब रायजी नौकरी करती थी तब तो अपने घर मे दो-दो तनख्वाह आया करती थी तब भी पूरा नही पडता था। अब तो मैं अकेला उससे भी ज्यादा कमाता हू तिसपर भी पूरा कहाँ पडता है? मतलब कि पूरा न पडना पैसे का धर्म ही है।

अपर्णा अरे हाँ, आपको बताना भूल गई मैं—बालाराव, मुझे तरक्की मिल गई। (पेडे देती है।)

बालाराव वा वा गुड गुड। (उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर हस्तांदोलन करते हुए) कॉंग्रेच्युलेशन्स कॉंग्रेच्युलेशन्स कॉंग्रेच्युलेशन्स (वह मुस्कराती है पर भीतर स परेशान हाथ छुडा लेती है। कुछ देर दोनो चुप बालाराव सिगार का कश खीचन जात हैं। वह पसोपेश मे।)

अपर्णा बालाराव, आपसे एक बात पूछू? नाराज तो नही होंगे?

बालाराव बेशक पूछो! मैं तुम पर कभी चिढ नही सकता।

अपर्णा लेकिन देखिए सही-सही जवाब देना।

बालाराव हाँ हा, जरूर बिलकुल सही-सही। देखो, तुमसे हरगिज झूठ नही कहूँगा अरी तेरे साथ खुलकर बातें करना ही तो मेरे लिए कुछ रिलेक्सेन्स है, साबू पूछ बेटी

अपर्णा आपने बाहर कोई रखी है? (सहसा चौंक पडते हैं) बायजी को जबरदस्त शक है।

बालाराव झूठ, सरासर झूठ। (पीते जाते है।

अपर्णा पर उसके मन मे पक्का वहम है।

बालाराव वह सिफ मूर्ख ही नही, महामूख है। (एक घूट पीते हैं, सिगार जलाते हैं) दरअसल, हा, सिफ तुझे बताता हूँ, दरअसल हमेशा लगता रहता है कि बाहर कोई रखल

होनी चाहिए। वट आई हैव नो करेज उतनी हिम्मत ही नही मुझमे। तभी तो मन मारकर सबकुछ सह रहा हू। तिसपर भी वटपूजा करती रहती है, बेवकूफ कही की।

अपर्णा लेकिन क्यो ? आपको ऐसा क्यो महसूस होता है ?

बालाराव सावू यह सबकुछ तुम नही समझ सकोगी। तू अभी बच्ची है। (गट-गट पीते जाते हैं। एक घूट गट-गट पीकर कड़ुवा सा मुह करते हुए बोलते हैं—) शी इज डैम फ्रीज्ड वूमन, बिलकुल सुख नही। मन को जरा भी चैन नही मिलता। बस दो जून खाने भर के लिए इकट्ठे रहना है बस ! टेरिबल टेरिबल। यह (हाथ दिखा कर) यह भी जो मैं हर समय पीता रहता हू। क्यो ? कि बिछौने पर लेटते ही नीद आ जाए।

अपर्णा लेकिन समझ मे नही आता कि दाम्पत्य जीवन मे ऐसा क्यो होना चाहिए ?

बालाराव देखो, उसे मत बताना कि मै यहाँ आया था। मैं कभी देर से घर पहुँचा कि बस बार-बार पूछती ही जाती है (उसकी नकल उतारते हुए) क्या सावू के घर गये थे ? अरी, तुझे लेकर भी मुझपर शक। सो दर-असल तू मेरी बेटी जैसी। (कुछ देर पीते रहते हैं और फिर) तेरा वह लडका कौन री वह हाँ सतीश मिनकर

अपर्णा (सहसा चौंककर) हम पर, उसका क्या ?

बालाराव वह छत पर कविता गाया करता। तूने ही तो मुझे बतायी थी वह कविता (शराब के नशे मे तर भारी सिर झुकाकर अपर्णा के अस्तित्व को भूलकर भारी स्वरो में गाते जाते हैं।)

There is rain and decay
In the house on the hill
They all were gone away
There is nothing more to say

ठीक वैसी ही हमारे घर की आदत है There is nothing more to say

(पुनश्च प्याले मे शराब उडेलते हैं। दीन दृष्टि से प्याले की ओर देखते रहते हैं। अपर्णा करुणाभरी नजर से उनको ताकती रहती है।)

(सहसा दरवाजे पर खट-खट अपर्णा दरवाजा खोलती है। बाहर से बायजी की आवाज 'शाम क समय दरवाजे बन्द कर बैठते हो?" बालाराव की धाधली देख कर अपर्णा को हँसी। बायजी का प्रवेश। हाथ म बेल के पत्ता से भरी थैली। पैर म मोच आने से लंगडाती चलती है। मोटा कद आँखो पर ऐनक। दीखने म मटमली, गदी और नीरस।)

बायजी आप इस वक्त यहा?

बालाराव ओ, क्लब का प्रेसिडेंट मर गया। (बालाराव पीते रहते हैं।)

बायजी तो फिर यहा क्यो?

बालाराव इतनी जल्दी घर जाकर भी क्या करता। क्या बेल के पत्ते चुनते बैठू?

(बायजी एक पाँव पसारकर जमीन पर बैठ जाती है।)

बायजी (बालाराव की ओर देखकर) प्याले मे क्यो रमे रहे हो जी—तीर्थ जैसे? सारी दुनिया जानती है फिर छिपाना क्या? (अपर्णा से)तेरी मे सीढिया चढना जान

पर आ जाता है री। हाँ, सतीश के कपडे तैयार हैं ?

अपर्णा ओ फ ओ ! तुम्हें क्या जरूरत थी आने की बायजी कल श्याम ने ला दिये होते कालेज से लौटते वक्त।

बायजी (तख्त पर बठा हुए मुह बनाकर) अरी, सिर्फ कपडे लेने थोडे ही आ गई हूँ। सतीश पडौस की केतकी के साथ लॉरेल हार्डी की फिल्म देखने गया है। मैं गई थी दत्त-मदिर। वहाँ नांदुर्डीकर बुआ का भवन जो था। आऽहा कितना मीठा गला है स्वामी जी का। वाह वा और इस अवस्था मे भी कितने खूबसूरत दीखते हैं लाल लाल रौनक भरी देह (बोरियत भरी सूरत स) लगता है, सब औरतें मुई, उन्ही को देखने आई थी वहा।

बालाराव हा, और यह अकेली सिर्फ वहाँ कीर्तन सुनने गई थी।

बायजी हाँ हाँ, कुछ भी कहते रहते हैं जी।

अपर्णा (मुस्कराकर) और इस थैली मे इतना सब क्या भरके लाई हो ?

बायजी बेल के पत्ते अरी, मदिर के अहाते मे ही मिल गये।

अपर्णा सो तो ठीक है पर बेल के पत्ते सोमवार के दिन चढाती हो ना ?

बायजी हाँ, तो। पाँच लाख का सकल्प है। हररोज थोडे थोडे पत्ते चढाती हूँ।

अपर्णा (मुस्कराकर) बायजी, तुम इतनी बडी बी० ए० बी० टी० फस्टक्लास और—

बायजी उसका क्या फायदा यही न ?

(बायजी थैली से एक फोटो निकालती है। कागज लपेटा हुआ। अपर्णा को) कोले तेरी यह फोटो कल

अलमारी साफ कर रही थी तब मिली।

अपर्णा देखू तो, कौन-सी फोटो। (उस पर लपेटा हुआ कागज खोलन लगती है।)

बायजी अरी जब तू गर्भवती थी तब फूलो से सजाया हुआ तेरा रूप देख तो कैसी रौनक थी तब चेहरे पर

बालाराव (पीते हुए) और क्या अब नही है। क्यो ?

(बायजी नापसदगी से गरदन घुमाकर देखती है। बालाराव गदन नीचे कर मुँह म सिगार दबाए—घुमाते रहते हैं)

अपर्णा (फोटो दखकर छुई-मुई-सी होकर) छी —कितना बडा पेट आया है।

बालाराव दिखाओ तो। जरा मैं भी तो देखूँ। (फोटा लेकर देखते हैं।)

बायजी यहाँ इसी हाल मे टाँग दे (इशारा करती हुई) वहाँ।

बालाराव (फाटो की आर देखते हुए) ओह गभवती औरत और ही खूबसूरती और शान

बायजी (परेशानी से) ह रहने भी दो। लाइए इधर। (फोटो लेकर अपर्णा को द देती है।) अलमारी मे ही कही पडा था, ध्यान ही नही था मुझे।

अपर्णा तुम्हे तो बस शौक ही है कि सदा अलमारी साफ करो, जमाते रहो। रसोईघर के डिब्बो पर लेबल चिपकाओ चौली, मूग मठ

बायजी लेकिन आजकल कुछ भी याद नही रहता। एक बार पूरा घर साफ करना है। बहुत तिलचट्टे हो गये हैं।

बालाराव (ऊँची आवाज म) छट, घर मे एक भी तिलचट्टा नही है। पर वक्त काटने के लिए आदत जो डाल रखी है

इसने झाडन लिए तिलचट्टा को ढूढती रहती है, बस।

बायजी हाँ, हाँ ठीक ही तो है। आप कहा रहते है घर में। सिर्फ रात को दो कौर निगलने को आ जाते हो। (अपर्णा से) क्यो री, इधर नही है तिलचट्टे ?

अपर्णा नही हैं, लेकिन छिपकलियाँ बल्कि हैं।

बायजी देख, छिपकली को मत मारना कभी। कहते है छिपकली को मारने पर वश बढता नही। मत मारना छिपकली।

बालाराव (अंतिम घूटपीते हुए भारी आवाज म) हाँ, सिर्फ तिलचट्टे मारने चाहिए।

बायजी (बालाराव की ओर परेशानी से देखकर) साबू, जरा मेरे पाँव दबा दे री, सवेरे से ऐसा दद कर रहा है जैसे उसपर जोर से घाव पड रहे हो। जबसे तू गई है, कोई नही दबाता। यह तेरा सत्या, पैरो पर खडा हो जाता है। वह बच्चा, उसका भार भी कितना पडेगा ? (लेट जाती है। बालाराव पेंट का बटन खोलते हुए बाथरूम की ओर—अपर्णा खिडकी की सलाखो के सहारे खडी होकर पर दबाती है।) क्यो साबू, पूछा उनसे ?

अपर्णा किससे ?

बायजी (खीझ से गदन ऊपर उठाकर) क्या तुम्हे सब कुछ चिल्ला कर ही बताना होगा ? अरी पूछा तुम्हारे रावजी से ?

अपर्णा बालाराव से ना ? हाँ पूछा। (बायजी पेट के बल लेटी है—वैसे ही गदन ऊपर उठाकर देखती है।) बायजी, अपना यह शक्की स्वभाव तू छोड दे—

बायजी (अपने आप से) कतई नही। शक्की स्वभाव

अपर्णा हाँ, इस तरह तुम अपनी गहस्थी को बिगाड दोगी।

बायजी अब बचा ही क्या है बिगडने को। (पुन खीझकर) और तेरे ये रावजी क्या कम शक्की हैं ?

अपर्णा क्यो, क्या किया उन्होंने ?

बायजी अरी सारी पुरानी कथा बाचने से क्या फायदा ? (सहसा खीझ कर) वो तारकुडेजी पर शक कर-करके ही तो मेरी नौकरी छुडवाई और घर मे बिठा रखा है मुझे इन्होने। ऊपर से तुम मुँह बिचकाकर पूछ रही हो बी० ए० बी० टी० होने से क्या फायदा। हाय औरत का जन्म है

अपर्णा बायजी, जैसे-जैसे सुनती जाती हूँ मेरा तो कलेजा फटता जाता है। लगता है, घर गृहस्थी बेमतलब ही है—बेकार हैं।

बायजी (शाति से) किस्मत मे बदा होता है किसी-किसी के और क्या ? बस अब पैर दबाना

(बायजी बैठ जाती है। बैठे-बैठे खुद पैर दबाती जाती है। क्षणभर दोनो चुप।)

अपर्णा बायजी, चाय या काफी बनाऊँ तुम्हारे लिए ?

बायजी जानती नही मैं इस समय चाय-काफी नही पीती ? इतनी देर से चाय पीने से नींद नही आएगी। फिर रात भर बिस्तर मे छटपटाना पडेगा।

(बालाराव बटन लगाते हुए लौटते हैं। बैठ जाते है।)

अपर्णा क्यो, तुम्हे बहुत सताता है ना ? सत्या री ?

बायजी कुछ पूछो मत। बडा शैतान हो गया है। लेकिन कुछ भी हो, उसी के कारण तो उस घर मे जान है

अपर्णा श्यामू का कहना है कि छुट्टियाँ खतम होते ही उसे यहा लाएँगे —

बायजी और यहाँ उसकी देखभाल कौन करेगा। तेरी नौकरी

और श्यामराव का कालेज। कालेज से लौटने के बाद किताबो मे सिर खपाये। फिर सत्या की देखभाल

अपर्णा हाँ, श्याम मेरी नौकरी छुडाने पर तुला जो है। हाय रे दैया, मैं तो भूल ही गई। (पडे लाने जाती है।)

बायजी ना ना नौकरी कतई छोडना मत। औरत को कभी भी पराधीन नहीं होना चाहिए।

(बालाराव बुझा हुआ सिगरेट जलाने के प्रयास मे।)

अपर्णा बायजी, मुझे प्रमोशन मिल गया।

बायजी वा ह वा। बहुत अच्छा। नौकरी—नौकरी मत छोडना री। हाँ, मेरी हालत देख रही हो न तुम दरअसल, इस पति नामक जाति का विश्वास कतई नही किया जा सकता।

(बालाराव बार बार सिगार जलाने का प्रयास करते है—उठकर जाने को उद्यत।)

बालाराव अच्छा। मैं चलता हू री साबू

बायजी जरा रुकिए तो। मैं भी साथ चल रही हूँ

बालाराव (भाग जाने के इरादे से ही) ना, मुझे जरा और जगह हो आना है

बायजी (उनके पीछे जल्दी जल्दी चलती हुई) वह कुछ नही, सीधे घर चलिए। औरतो के चेहरे ताकते हुए घूमते रहने की कोई जरूरत नही।

(दोनो चले जाते हैं। अपर्णा लोटा प्याला आदि उठा कर अदर रख देती है। सगीत)

दरवाजे पर एक स्त्री। उसपर प्रकाश ढलती उम्र सफेद वस्त्र पहन दुशाले के समान वस्त्र से पूरे शरीर को ढका हुआ सिर्फ चेहरा दीखता है।

(सफेद बाल, भाल पर टीका नही । चेहरा फीका दीखता है । पान चबा-चबाकर रगे हुए होठ—दोनो हाथो से वस्त्र लपेटे हुए—एक हाथ मे कपडो की थैली—अपर्णा के बाहर निकलते ही उसे वह स्त्री दीख पडती है । क्षण भर उसकी ओर ताकती रहती है । तुरत पहचान नही पाती । स्त्री का मुस्कराने का प्रयास)

अय्या साबू ! साबू ! कितनी बडी हो गई मेरी साबू । अभी अभी बायजी और बालाराव चले गये ना उन्होंने पहचाना नहीं मुझे

अपर्णा (पशोपश मे) कौन है तू ?

अय्या तेरी माँ मैं तेरी माँ हूँ ,साबू तेरी मा (आशा से देखती है)

अपर्णा (चौंक पडती है । कुछ सँभलकर) साबू की अय्या मर गई है तुझे यह पता किसने बताया ? बोल । (अय्या कुछ बोलती नही सिर्फ देखती रहती है) बोल, तुम अब यहाँ क्यो आई हो ?

अय्या मुझे दो दिन अपने पास रख लो साबू

अपर्णा तो तू फिर से भागकर आ गई है

अय्या नही ।

अपर्णा क्या तुझे उस लवलची कासम ने छोड दिया ?

अय्या नहीं री ।

अपर्णा फिर क्यो आई हो यहाँ ? किसलिए ?

अय्या बेटी तेरा अपना घर जो बना है अब । दो दिन अपनी बेटी के घर रहने को जी चाह रहा है । दो दिन अपने तरीके का खाना खाने की चाहत है री । तेरे हाथ का केले के पत्ते पर परोसा हुआ दाल, चावल, गरम गरम सावन का महीना जो आ गया है री ·

अपर्णा उफ्, हमें दस साल की बेटी और भले-चंगे पति को छोडकर भाग जाते समय कुछ सोचना था।

अय्या (कुछ देर रुककर) अब उन पुरानी बातों को भूल जाना बेटी। (आशा भरे स्वर में) रह जाऊँ दो दिन मैं यहाँ ?

अपर्णा नही, मेरी और नानाकाका की तुमने जो दुर्दशा बना दी।

अय्या कितने साल बीत चुके अब ?

अपर्णा पर हाँ, जब आ गई हो तो यह बताओ कि मैं नानाकाका की या कासम की ?

अय्या ओफ्, क्या पूछ रही हो बेटी ?

अपर्णा हाँ, मैं तुमसे आज पूछ रही हूँ लेकिन दस सालों से सब मुझसे यही पूछते रहे हैं।

अय्या सब ? कौन सब ?

अपर्णा हाँ हाँ सब। नाना काका भी।

(अय्या कुछ क्षण चुप)

अय्या फिर रह जाऊँ मैं ?

अपर्णा नही।

अय्या अरी मेरे नाती की सूरत तो दिखा।

अपर्णा (चिढकर) नही नही। तू उल्टे पाव लौट जा। और देख, फिर कभी आना नही यहा, समझी। हाँ कहे देती हूँ।

(अय्या हताश होकर मुडती है, चली जाती है। पीछे से उसे निहारते हुए अपर्णा खडी है। धीरे धीरे अंधेरा। परदा—)

O

अंक दूसरा

(श्यामू का घर। एक-डेढ़ साल बाद। शाम का समय। घर में रोशनी। श्यामू धुले हुए कपड़ों को जमा रहा है। सतीश किसी पत्रिका के पन्ने पलट रहा है। ग्यारह-बारह साल की अवस्था—कुछ अलसायासा—जम्हाई लेता है। पत्रिका बंद कर श्यामू की तरफ देखता है।)

सतीश मैं रख दू कपडे ?

श्यामू ना। रहने दो, मैं रखता हूँ।

सतीश (पुनश्च पत्रिका के पन्ने पलटते हुए) पापा एक पहेली बुझाना। (श्यामू सिर्फ उसकी ओर देखता है) एक राजा ने अपनी रानी को दूर के गाँव एक चिट्ठी भेजी कबूतर की चोंच में। और साथ ही उसी कबूतर के साथ एक कठफोड़े को भी भेजा। बताइये क्यों ?

श्यामू क्यों ?

सतीश हार गये ? (श्यामू गरदन हिलाकर 'हाँ' कह देता है।) रानी के दरवाजे पर चोंच से खट-खट की आवाज करने (पढते पढते अपने से ही हँसता है।)

श्यामू क्या जी क्या हुआ ?

सतीश वाह, क्या दिलचस्प संवाद है। श्यामराव

श्यामू बोलो भी क्या है—बोलो

सतीश आप नही। यहाँ रामाराव श्यामराव से पूछ रहे हैं। श्यामराव, आप रात को सोने समय चश्मा लगाकर क्यो सोते हैं? (श्यामू से) वताइए क्यो?

श्यामू जिसमे कि रात को वे सुदर-सुदर सपने बिलकुल साफ देख सकें।

सतीश वा ह वा, शाबास—श्यामराव शावास।
(श्यामू कपडे उठाकर चला जाता है। मानसी का जल्दी-जल्दी प्रवश।)

मानसी (सतीश को प्यार करते हुए) क्यो रे, क्या कर रहे हो?

सतीश वस, मा की राह देखता बैठा हूँ।

मानसी श्यामू नही आया?

सतीश हैं ना—अदर है—अभी आयेंगे। (मानसी खिडकी से बाहर देखती है।) मौसीजी, वताऊँ उस कब्र पर क्या खुदा हुआ है?

मानसी अरे, मुझे पता है।

सतीश (परेशानी से) ऐसा क्यो? मैं वताऊँगा

मानसी अच्छा वावा तुम बताओ

सतीश उसपर खुदा है—

As you are now as once was
prepase for death and follow me

मनासी (उसके बालो को सहलाते हुए) वाहऽवा बडे होशियार (सयाने) हो तुम। (श्यामू बाहर आती है।)

श्यामू अरी, तुम कब आई?

मानसी वस, अभी। साबू नही आई?

श्यामू (कटुता स) वह इतनी जल्दी क्यो आने लगी? मीडिया कोऑर्डिनेटर जो है। क्या मालूम कहा क्या-क्या कोऑर्डिनेट करती फिरती है।

मानसी सावू इस समय घर पर होती तो अच्छा होता

श्यामू क्यों ?

मानसी हाँ, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी थी उसी के विषय मे। (नजर स मा सकेत कर देती है कि सतीश वहाँ ना हो)

सतीश (उस इशारे को भाँपकर) हाँ-हाँ मैं वहाँ छज्जे मे खडा रहकर माँ का इतजार करता हूँ।

(छज्जे म चला जाता है पर उसका सारा ध्यान अदर है।)

श्यामू (बैठते हुए) हा बोलो, क्या कहना चाहती हो ?

मानसी श्यामू, मुझे लगता है याने उसने मुझे जो कुछ भी बताया है उसीसे मैं यह सब-कुछ कह रही हूँ आय थिक श्यामू यू आर नॉट बिहेविंग अज यू श्यूड। श्याम। तुम्हे उसके साथ आम मर्दाने पतियो के समान वर्ताव नही करना चाहिए।

श्यामू क्या मतलब ? मैंने क्या मर्दानगी—जताई उसपर ? मैं रोज सवेरे दूध लाता हूँ चाय मैं बनाता हूँ नहाने के लिए पानी गरम करता हूँ सतीश साबुन के पानी मे धोने के कपडे भिगो कर रखता है हर रोज तरकारी—सब्जी गेहूँ चावल चीनी मैं ही तो लाता हूँ राशन के क्यू मे मैं ही खडा रहता हूँ और वह जब यहा होती है तो बस दिन का खाना भर बना लेती है रात का कूकर भी तो मैं ही लगाता हूँ कपडो को जमा कर रखता

सतीश (छज्जे स ही) मौसी जी बिस्तरे मैं लगाता हूँ। और बनिये की दुकान से सामान भी तो मैं ही लाता हूँ

(मानसी कौतूहल से मुस्कराती है। श्यामू गभीर।)

श्यामू अब बताओ, कैसी मर्दानगी दिखा रहा हूँ ? कैसी ज्यादती कर रहा हूँ ? और भी क्या-क्या करना चाहिए मुझे ?

मानसी अरे, एक नौकर रख लेने मे क्या हर्ज है ?

श्यामू मुझे कोई ऐतराज नही। ला दो नौकर ढूंढकर कही से। आजकल कहाँ मिलते हैं नौकर, तुम्ही बताओ हाँ और यह भी बता दो कि मुझे और क्या कुछ करना चाहिए।

मानसी (कुछ परेशानी से) ना, यह सब कुछ नही रे। घर के काम एक-दूसरे की सुविधा से करने चाहिए। पर यह कहना भी ठीक नही कि मैं अमुक करता हूँ, तमुक करता हूँ।

श्यामू आखिर उसकी शिकायत क्या है ?

सतीश पापा, मैं छत पर चला जाऊँ ? (जवाब की प्रतीक्षा न करके चला जाता है।)

मानसी अरे श्यामू मुझसे पूछ रहे हो कि उसकी क्या शिकायत है—उससे पूछने के बजाय मुझसे ? वाकई तुम दोनो के बीच इतनी दूरी पैदा हो गई है ?

श्यामू क्यो, फिर क्यो उसने भी तो मुझसे न कह कर तुमसे कहा ?

मानसी वह मैं क्या जानू भला ?

श्यामू पर यह तो बताओ कि आखिर उसका कहना क्या है ?

मानसी देखो श्यामू, अँज यू नो साम् तेज है स्माट है पर साफ-साफ कोई निर्णय नही ले सकती शायद। उत्साह मेआकर अपनी एफिशियन्सी दिखाने के जोश मे कुछ बात कर बैठती होगी। ऐसे वक्त तुम्हें उसे

गाइड करना चाहिए।

श्यामू अरी, उसे गाइडेन्स की जरूरत हो तब ना? वैसे जरा भी इंटेलिजेंट सक्सेसफुल औरतें होती है ना— आय डोण्ट अडरस्ड व्हाय योही अग्रेसिव और डॉमिनेटेड बनती जाती हैं साबू का भी आजकल वही हाल होता जा रहा है।

मानसी ठीक है—हो भी सकता है पर औरतो को पहली बार नये-नये क्षेत्र मिल रहे हैं सो मॅच्युरिटी की कमी भी हो सकती है।

श्यामू (चिढ कर) हाँ हाँ देखो, यह विमेन्स लिबरेशन का वप समझकर किसी सेमिनार की भाषणबाजी मेरे सामने नही करना समझी।

मानसी ना बाबा जानते हो, पिछले कुछ सालो से साबू ने अपने फील्ड मे बहुत करतब दिखाया है—दरअसल तुम्हे इसपर गव करना, चाहिए

श्यामू ऐ देखो, जो कुछ भी कहना चाहती हो थोडे से बताओ कि आखिर उसका कहना क्या है ?

मानसी उसकी शिकायत है कि तुम उसे अक्सर टालते रहते हो और ता और उसपर ऊपर से शक भी करते रहते हो

श्यामू इसका सबूत ?

मानसी सबूत ? पी० एच० डी० का बहाना बनाकर उसे टालते रहे उसके साथ कभी पार्टियो मे शरीक नही होते।

श्यामू देखो मानसी, मैं क्यो उसे टालने के लिए थोडे ही पी० एच० डी० कर रहा हूँ। मेरा भी तो कैरियर है। अगर पी० एच० डी० करु तो हेड ऑफ द डिपार्ट-

मेट बन सकता हूँ और रही पार्टियो की बात दरअसल शुरू-शुरू मे दो चार बार मैं उसके साथ गया था पर आय जस्ट हेट दोज पार्टीज किसी गदे पोखर के टरनिवाले मेढको जैसे चुटकुले मुंह बिचकाकर झूठी हँसी आँख मारी अग्रेजी के अलावा कोई भाषा जैसा जानते ही नहीं, ऐसी ढोग बाजी एक दूसरे की चिकोटियाँ काटना। छी यह भी सब कुछ किसी तीसरे आदमी के खर्चे से मुझे यह सब-कुछ कतई पसद नही खासकर मेरी पत्नी मुझे उगली पकडकर ऐसी होटल पार्टियो मे ले जाए। ना कतई नही। बेकार वक्त जाया करने के बदले आय केन सिट हियर विद शेक्सपियर और सेवरल अदर ऑथर्स यह मेरी पसनॅलिटी का हिस्सा है।

मानसी तो फिर तुम कम-से-कम उसपर शक मत करो। अक्सर उसपर नजर मत रखा करो।

श्यामू मैंने कब उस पर शक किया ? कब उसपर नजर रखी ? प्रदर्शनी के बहाने वह अक्सर बाहर जाती रहती है—कभी अहमदाबाद—कभी दिल्ली—कभी पजाब, और हम शेरे पजाब आलू मटर, नान खाकर रह जाते हैं।

मानसी हाँ, पर श्यामू क्या यह सब उसके कैरियर का हिस्सा नही है ?

श्यामू है तो, मैं कब इन्कार करता हूँ मानसी। लेकिन हर बार उसके साथ वह के० टी० क्यो ?

मानसी हाँ, जरा यह सोचो कि तुम्हारी नौकरी इसी तरह की होती और तेरी कोई बॉस मुंह फटहोती (मुस्कराती हुए) याने कि तेरे जैसी तब तुम भी तो उसके

साथ गये होते या नही ? गोवा चलने के लिये वह तुम दोनो को आग्रह कर रही थी। क्यो नही गये ? सतीश को क्यो नही जाने दिया ?

श्यामू ना ? महँगे होटल मे मुझे ठहरना पसद नही इधर रोज वह बडी देर से रात मोटर से घर आती है, ड्राइवर हो तो मोटर यहाँ तक आती है और अगर के० टी० चलाता हो तो कार वही नुक्कड पर इरानी के होटल के पास रुक जाती है और वहाँ से वह पैदल चली आती है। तुम्हे झूठ लगता हो तो सतीश से पूछ लो —तभी तो उसने छज्जे मे अपनी ड्यूटी जो लगा रखी है—

मानसी सचाई क्या है ? ड्यूटी उसने लगा रखी है या तुमने लगाई है ? फिर अगर उसे यह महसूस हो कि तुम सतीश के मन मे उसके खिलाफ विष घोलते रहते हो, गलत ही क्या है ? और के० टी० उसे कार से छोडता हो तो इसमे क्या बुराई है ? तुम्हे इससे क्यो एतराज हो ?

श्यामू नही तो, मुझे क्यो एतराज हो ? लेकिन फिर वह उसे छिपाना क्यो चाहती है ?

मानसी ना, मुझे नही लगता कि वह छिपाना चाहती है। तिस पर भी तुम्हारा बर्ताव अक्सर उस पर शक करते रहना, उसके साथ अविश्वास दिखाना नही है ?

श्यामू उसका बर्ताव भी तो ऐसा नही होना चाहिए जिससे कि मेरे मन मे अविश्वास पैदा हो।

मानसी श्यामू, मुझे लगता है कि तुम्हे इससे कुछ ज्यादा समझदारी से काम लेना चाहिए। अक्सर बिलावजह

खीझा मत करो।

श्यामू विलावजह, आज मुझे धुआ जो दीख रहा है तो आग का शक क्यो न करूँ, वस इतना ही।

मानसी ना ना। शक अनथ का मूल है। जानते हो ना रामायण मे इस शक ने ही तो *क्या-क्या गज़ब*—

श्यामू मानसी, यह सब कुछ तुम मुझसे कह रही हो ? तेरे पहले पति ववन्या फडणीस ने जब तुझ पर ज़रा-सा *शक किया उस वक्त तुम क्या-क्या करतव कर* रही थी ? और अब रामायण की बाते सुना रही हो। वाह ! *क्या* खूब।

मानसी (घडी मे देखकर) आइ थिंक आइ बेटर गो नाऊ। तुम तुम गुस्से मे हो। गुस्से से समस्या कतई सुलझा नही सकते श्यामू। तुम दोनो को आपसी समझौते से ही यह सब मिटाना होगा।

श्यामू वाऽह री वाह ! क्या तुम अपने आपको प्रधानमत्री समझने लगी हो। समझौते से हल निकालने की सलाह जो दे रही हो।

मानसी (जोर से ठहाका लगाते हुए) वाप रे बाप, आज मुझे बडा प्रमोशन मिल गया। हाहा। खैर, अब मैं चलती हूँ। उसके साथ कुछ सब्र की बातें करना। तुम दोनो की गृहस्थी देखकर कितनी खुशी होती थी मुझे ! (भावविवश होकर प्रस्थान।)

(श्यामू बेचैनी स टहलता हुआ छज्जे म जाता है। छत की ओर देखकर सतीश को पुकारता है।)

श्यामू सतीश ए ऽ सतीश। चलो, नीचे आ जाओ। (कुछ देर परशानी मे सतीश आ जाता है। छज्जे म खडा रहकर नाखून चबाने लगता है।) सतीश। सतीश नाखून

मत कुतरो। (बेचैनी से घूमता हुआ। पाजामे पर पैंट पहनी है। कमीज पहनकर बटन लगाते हुए सतीश को फिर से नाखून कुतरते देखकर खीझकर) अबे सेर नाखून कुतरते मत रहना—समझे। (थोडी देर से) देखा, आज भी खाना बनाया हुआ नही। क्या मालूम कितने बजे आयेगी। कूकर चढाने को आज जी नही कर रहा, चलो, हम कही बाहर ही खाना खा लेंगे।

सतीश नही पापा, मुझे भूख नही है। (पुन नाखून कुतरने लगता है।)

श्यामू (शातिपूवक प्यार से) मेरे बेटे, नाखून खाने से थोडे ही पेट भरेगा। (हाथ नीचे करके) देख, हम ऐसा करते हैं, बाहर ही किसी होटल मे खा लेते हैं।

सतीश नही। मुझे वाकई भूख नही पापा। आप बाहर से खाना खाकर आइए। मैं यहाँ माँ का इतजार करता हूँ।

श्यामू देखो, तो फिर ऐसा करते हैं। हम इरानी के होटल मे आम्लेट और दाल रोटी खा लेंगे। चलो, तुम्हे आम्लेट पसद है ना ? और ऊपर से अच्छी-सी आइस्क्रीम खिलाऊँगा, बस। चलो। (बुशट पहनता है। पर्स और चाभियाँ लेता है।

सतीश (छज्जे म से) पापा, माँ आ गई। (अदर बाहर आते-जाते कॉमेंटरी जैसा बोलता है।) ईरानी के होटल की तरफ से आ रही हैं। साथ मे मोटर नही रुकी। माँ पैदल ही चली आ रही हैं। साथ मे सुषमा आटी भी हैं। आज कार नही है पापा।

श्यामू ऐसा ! तो फिर कुछ देर रुकेंगे हम। (जल्दी से पुस्तक उठाता है। पढने का अभिनय)।

(सतीश नाखून कुरेदते हुए दरवाजा खोलने के इंतजार मे। खटखट होते ही दरवाजा खोलता है। अपर्णा का प्रवेश। उसे पास लेकर प्यार करती है, सहलाती है। चूमती है। अपर्णा पहले से अधिक फैशनेबल है। मेक अप और बालो की स्टाइल नूतन। भारी साडी। पर्स रखने के लिए मेज की ओर बढती है। सतीश संदेहभरी नजर से उसकी ओर देखते हुए दरवाजे मे खडा है। अपर्णा का ध्यान खीडकी मे से श्मशान की तरफ जाता है। क्षणभर देखकर।)

अपर्णा लगता है आज मिसेज अल्मेडा आकर गई है। देखो तो, कितनी सारी मोमबत्ती जलाई हैं। (श्यामू पुस्तक मे खोया, सतीश नाखून कुतरता हुआ—एक बार माँ की तरफ एक बार पिताजी की तरफ देखता परेशान) क्यो, खाना नही खाया अभी तक?

श्यामू (खीझकर) वही कहने जा रहा था मैं कि उस मिसेज अल्मेडा की मोमबत्तियो के बदले हमारे भोजन की चिंता कीजिए।

अपर्णा क्या खाना बनाना है?

श्यामू हाँ जी। कूकर चढाने का भी आज जी नही करता।

सतीश (नाखून कुतरते हुए) मैं खाना नही खाऊँगा। मुझे भूख नही। (दोनो एकदम सतीश की तरफ देखते हैं।)

अपर्णा इस तरह नाखून कुतरते नही बेटे। (श्यामू से) मुझे तैयार होकर पार्टी मे जाना है ओकरीज बीअर का लॉचिंग है 'ओबेराय' मे।

सतीश हाँ हाँ जाओ। जाओ ना शौक से। (उसके वाग्बाणो से वह चौंकती है।)

अपर्णा देखो, मैं डबल रोटी और अण्डे लाई हूँ। अभी फटाक से तुम्हें आम्लेट बना देती हूँ।

श्यामू हाँ-हाँ उसमे ईरानी के होटल मे डबल रोटी खाना क्या बुरा है? इतनी ही तुम्हारे समय की भी बचत हो जाएगी। और फिर हाथो से प्याज की बदबू भी नही आएगी।

अपर्णा (गुस्से से उसकी ओर घूरती रहती है।) श्यामू, तुम्हारा टीजिंग अब दिन-ब-दिन बढता ही जा रहा है। सुबह तुम्हारी रुमाल पर परफ्यूम लगा रही थी तब भी तुमने कहा कि प्रोफेसर की तनखा उसके लिए पूरी नही पडती।

श्यामू हा फिर? इसमे क्या झूठ है। पूरी पडेगी ही नही। इत्ती-सी बोतल—दो सौ पचपन रुपये—फ्रेंच परफ्युम मेरे लिए कैसे मुमकिन हो सकता है।

अपर्णा (कुछ देर और ताकती रहती है।) हा हा पर अपने काम के लिए यह सब कुछ जरूरी है श्यामू।

श्यामू तो फिर करो न बेशक। मैं कब मना कर रहा हूँ? वरना फिर से मानसी से शिकायत करोगी!

अपर्णा क्या मानसी आई थी?

श्यामू उफ, एक जमाना था जब तुम सगीत मे कैरियर बनाना चाहती थी—नाना काका के जैसी क्लास खोलनी थी—पर आज तानपुरा बायजी के घर धूल खाता पडा है। काश, तुम्हारी आज की इस कैरियर की अपेक्षा वह लाख गुना अच्छी लगी होती।

अपर्णा हाँ-हाँ क्यो अच्छी नही लगती, क्योकि सगीत की क्लास मे कोई केटी नही होता—यही ना?—लेकिन तब भी तुमने शक किया ही होता कि अय्या के समान

मैं किसी तवलची के साथ कहीं भाग न जाऊँ। जब कुछ मैं नहीं करती थी तब भी वालाराव पर से शक। तुम्हें तो बस समय बिताने के लिए एकाध शक की जरूरत पड़ती ही है।

श्यामू नादानों जैसी बातें मत करो।

अपर्णा (निष्पर्तात्मक स्वर में) आयू थिंक श्यामू दैट्स माय बिजनेस। मैं अपनी खुशी के लिए कौन-सा कैरियर अपनाऊँ यह मेरा निजी मामला है, सख्त निजी।

श्यामू यही है—बस। यही तो मेरा कहना है। वरना क्या उस वक्त तुम मुझे यूँ उत्तर दे सकती थी—मेरी कल्पना में जो पत्नी है वह कतई ऐसा नहीं कर सकती। कतई नहीं। जब तुझे माँगने मैं बायजी के घर गया था तब कभी यह नहीं सोचा था कि वह सीधी-सादी भोली-भाली साबू इस प्रकार से उत्तर देगी, मेरी बात को तोड़ेगी।

अपर्णा आजकल तुम कुछ बोलते रहते ही हो इस ढंग से कि—

श्यामू क्यों? क्या कहा मैंने किस गलत ढंग से अब तुम इतनी देर से घर लौटी हो लेकिन क्या मैंने पूछा भी कि देरी का क्या कारण है?

अपर्णा आज मुझे सुषमाजी के साथ डॉ० पावरी के यहां जाना था—ग्रंट रोड पर।

श्यामू किसलिए?

अपर्णा उसे अबॉर्शन कराना है।

श्यामू उसे ही ना?

अपर्णा (फटकारकर) श्यामू, देखो श्यामू, तुम मेरे साथ इतना नीच वर्ताव मत करो। किसी तरह मैं नौकरी छोड़ने

वाली नही हूँ ।

श्यामू अरी, पर मैं तेरी नौकरी के खिलाफ थोडे ही हूँ ।

अपर्णा तो फिर विना वजह ये सारे सशय के भूत क्यो खडे करते हो ? इसीलिए ना कि मैं नौकरी छोड दू ?

श्यामू हाँ । शादी के बाद मैं तुम्हारे पीछे पडा था कि बी० ए० पास कर लो—

अपर्णा हाँ-हाँ बी० ए० पास कर लो और मास्टरनी वन जाओ । कभी यह नही कहा था तुमने कि एम० ए० करो, प्रोफेसर बनो । समझे ।

श्यामू साबू देखो, तुम यह नौकरी छोड देना, हम दूसरी ढूढेंगे ।

अपर्णा और दूसरी नौकरी मिल भी गई तो वहाँ पर कोई ना कोई बॉस होगा ही । उसपर भी तो तुम्हे शक होगा ही ।

श्यामू तो फिर ऐसा बर्ताव ही नही करना चाहिए जिससे मुझे शक हो । वरना नौकरी ही नही करनी चाहिए ।

अपर्णा हाँ अब आ गये ना सही मुद्दे पर ।—आखिर मुझे करना क्या चाहिए सुबह बच्चे की और पति महोदय की सेवा करो, दोपहर समय काटने के लिए गदी पत्रिकाएँ पढो, रेडियो सुनो या पडोसन से फिजूल गपशप करते रहो या ताश खेलो, वे भी पैसे लगाकर —और मुझे यह सब क्यो करना चाहिए— इसीलिए ना कि तुम्हारा मुझपर भरोसा नही ? इसीलिए कि तुम भूल नही सकते कि मैं अय्या की बेटी हूँ ? (श्यामू गुस्से से बाहर चला जाता है । अपर्णा चीखती है ।) श्याऽमू । श्यामू मैं जहाँ जाना नही चाहती, वहाँ मुझे मत धकेलो श्यामू । (सतीश की ओर देखकर) खाना

खाओगे ?

सतीश नही।

अपर्णा और वह तकिये के कपडे का पाजामा क्यो पहनते हो ? मैंने सफेद पाजामे सिलवाये हैं ना ?

सतीश रहने दो। मुझे नही पसद है।

(अपर्णा थकान महसूस कर तख्त पर बैठ जाती है। फि शांताबाई का जल्दी जल्दी प्रवेश।)

शांताबाई लगता है अभी-अभी आई हैं अपर्णाजी।

अपर्णा जी हाँ। बहुत देर हो गई आज। और फिर पार्टी मे जाना है।

शांताबाई *(खिडकी मे से देखते हुए।)* हाय रे दैया, अल्मेडा अभी तक खडी है। कितना बडा दिल है बेचारी का। पूरे बारह साल तक पति की यादगार लिए जिंदा रहना कोई मामूली बात नही।

अपर्णा *(ध्यान न देकर)* हाँ !

शांताबाई केले के पत्ते लाई है ?

अपर्णा जी हा, अभी—आपके साहब के पास दे दिये है। आप कहाँ ऊपर गई थी।

शांताबाई हाँ जी, जरा सुषमाजी के घर हो आई। कल मेरी सासजी आने वाली हैं वसई से। मेरे देवर जी के साथ रहती हैं वहाँ। केले के पत्ते पर ही खाना खाती हैं। वह भी खाने के पहले पत्तल पर कौए को भोग परोसकर रखती हैं ओह, ऐसा प्यार करने वाला जोडा भला कही ढूढने से भी मिल सकेगा क्या ?

अपर्णा कौवे को भोग क्यो भला ?

शांताबाई अरी अपर्णाजी, कौए के रूप मे हमारे ससुरजी आते हैं।

अपर्णा अच्छा ! अच्छा ! (उठते-उठते कर्णफूल खोलते हुए)—
चलो अब मुझे चलना चाहिए।

शांताबाई हा-हा—आप चलिए। मेरी मुई की बकबक हमेशा
(जाने को मुड़ती है—चलते-चलते रुककर दबी आवाज में)
ऊपर कुछ गडबड घपला है।

अपर्णा किसका ?

शांताबाई सुषमाजी का और किसका ?

अपर्णा हा पर कैसी गडबड ?

शांताबाई मुझे तो शक है, कही तो जरूर कुछ गडबड है दो
महीने से बैठी नही। अब दवा लेंगी। हर साल
यही कार्यक्रम। कभी चूकने का नही। भले गौरी
गणपति के उत्सव चूक सकते हैं लेकिन हम कर ही
क्या सकते हैं। खैर, चलती हूँ। (जाती है। अपर्णा
दरवाजा बद कर लेती है। मेकअप करने लगती है। आयने
म देखती है।)

सतीश बार-बार आयने मे देखा मत करो। (अपर्णा गभीर)
और कितनी सारी लिपस्टिक लगाती हो। छी।
(खुद अपने बच्चे की ये बातें सुनकर अपर्णा चौंक
पडती है। मुडकर उसकी ओर ताकती रहती है।)

अधेरा।

प्रकाश।

(श्यामू का घर—सायकाल—अपर्णा और सुषमा
बातें कर रही हैं।)

अपर्णा सुषमाजी एक बात पूछूँ ?

सुषमा हा हा, क्यो नही ? पूछिए ना।

अपर्णा घर गृहस्थी अपत्यजीवन का मतलब क्या है ? पति-
पत्नी के बीच आपसी रिश्ता दरअसल कैसा होता है ?'

सुषमा आज अचानक ये ऐसी बातें क्यो ?

अपर्णा याने कि क्या आपको जीवन मे कभी एकाध बार ऐसा महसूस हो उठा है याने कि किसी एकाध पुरुष के प्रति जबरदस्त खिचाव—कभी महसूस किया है कि उसके बिना सच्चा सुख पा ही नही सकेंगे उसके बिना जैसे आप जी ही नही सकती। आपको समझ सकने वाला उसके बिना कोई और हो ही नही सकता।

सुषमा (माथे पर हाथ मारकर) अजी, कुछ वैसा ही महसूस हुआ था, तभी तो विश्वास का हाथ पकडकर भाग गई थी मैं।

अपर्णा उस वक्त की—जवानी की बात नही कह रही हूँ। आज की आज ।

सुषमा आज ? अब मुझमे बचा ही क्या ? अब तो बस मैं केवल विश्राम की ताबेदार जो हू। उसकी चाह जब जैसे हो, उसे देते रहना बस। मेरी सारी इच्छाए अब जैसे मर गई है।

अपर्णा सुषमाजी, आपकी तो शादी के पहले दो साल से जान-पहचान थी ना फिर विश्राम के स्वभाव का अदाज नही लग पाया आपको ?

सुषमा हा, क्यो नही ? पर वह सब कुछ झूठ था—शादी के पहले आप एक दूसरे के साथ कितने ही रहीं लेकिन असली पहचान कभी होनी ही नही। मुझे तो लगता है कि आदमी की असलीयत की पूरी पहचान होती ही नही। जीवन-भर के तजुरबे के साथ-साथ कुछ-कुछ पहचानते जाते है। तिस पर यह कि शादी के पहले हमारी आखो मे नजर होती ही कहा है ? होता है सिर्फ शरीर का मोह, रूप का खिचाव।

(क्षण भर दोना चुप। अपर्णा अपना धुन म। सहसा लॅच खोलकर श्यामू अदर आता है। दोना की आर देखता है। चेहरे पर अजनबीपन का भाव। मेज पर रखी किताबें इधर-उधर करके दो एक पुस्तकें उठाकर चलने लगता है।)

अपर्णा श्यामू, चाय लोगे ?

श्यामू नही।

अपर्णा कहा जा रहे हो ?

श्यामू लायब्रेरी मे।

अपर्णा मुझे लगता है श्यामू, इस वक्त तुम्हें घर पर रहना चाहिए। (वह मुडकर उसकी ओर देखता है।) केटी आने वाले हैं उन्हें तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं। तुम्ही से पूछकर यह समय तय किया था ना ? (वह कुछ बोलता नही। नफरतभरी निगाह डालते हुए चल देता है। सुषमा से)—बस यो ऐसा ही सब चल रहा है।

सुषमा हा, पर तुम चिढा मत करना। सब पति एक जैसे। एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। रात को पास आने पर ऐसी मीठी मीठी बाते करेगे। (चलते हुए) अच्छा, चलती हू—विद्या चोणकर के घर हो आना है। वैशाली कहकर तो गई है कि वहा जा रही हूँ—कुछ कहा नही जा सकता। कि कहा जाएगी। और तो और विद्या का एक भाई है—नालायक कही का— (क्षणभर सोचती हुई।) पर किस्मत का खेल देखती कि उसकी उमर की थी तब मैंने जो कुछ किया, ठीक वही वह आज कर रही है। और उस पर रोक लगाने के लिए मुझी को अब भागदौड करनी पड रही है—

अपनी अपनी तकदीर है—नियति का लेख, करनी के फल और क्या।

अपर्णा अरी नही, अभी तो वह बच्ची है। जरा ठीक-ठीक समझा देना उसे।

सुषमा खाक समझाए। अपर्णा जी सब कुछ फितरत है! यहा हर एक का अपना रास्ता अलग। आखिर जो जैसा अनुभव पाएगा, वही उसकी अपनी पूँजी, यही कमाई है। क्या मेरे मा-बाप ने मुझे कम समझाया था।

(दरवाजे से बाहर झांकती है। बालाराव को आते देखकर) अपर्णाजी बालाराव आ रहे हैं।

(बालाराव आते हैं। मुह म सिगार—हैट नही—रिटायर होने के कारण पोशाक म कुछ बदलाव)

अपर्णा आइए आइए बालाराव। क्यो आज क्लास नही गये? (बालाराव के अदर आते ही दरवाजा बद कर लेती है।)

बालाराव अरी, दरवाजा मत बन्द करना, बायजी आ रही है। ये सीढियाँ अब उससे चढी नही जाती—

सुषमा (कुछ मुड़कर) अच्छा अपर्णाजी अब मैं चलती हूँ।

अपर्णा अच्छा। फिर आना (सुषमा चली जाती है।) कहिए आपकी रिटायरमेंट के हाल कैसे हैं बालाराव?

बालाराव (सिगार पीत हुए) सजा। सख्त सजा, पत्थर तोडने की। बायजी की सूरत देखते-देखते दिन काटने का मतलब जबरदस्त सजा। कुछ मतलब ही नही किसी बात का। जरा सा कही चूहा दीख पडा कि बस, दिनभर हाथ मे लाठी लिए चा~। और ठाकती रहती हैं। जरा सा कही एकाध तिलचट्टा दीख पडे कि बस

झाडन लेकर लगी उसके पीछे—किसी से कुछ मत-लब नही—लो, वह आ गई—(हिलते-डोलते अपने पैर को खीचती हुई बायजी का प्रवेश)

अपर्णा थक गई ना, बैठ जाओ यही—मैं अभी चाय बना लाती हूँ। (अदर जाने को मुडती है कि)

बायजी (खडी-खडी गुस्से मे) ना—कतई नही, बस अब पानी की एक बूद भी नही पिऊँगी तेरे घर मे।

बायजी (चौंककर) लेकिन हुआ क्या ? पहले तुम बैठो तो सही बायजी।

अपर्णा नही मैं यहाँ बैठने नही आई हूँ—बच्चे को लेने आई हू बस—(बैठ जाती है।)

अपर्णा सतीश अभी-अभी बाहर गया है।

बायजी बस, क्या मालूम अधेरा होने पर कहाँ घूमता रहता है। तेरी मनहूस सूरत नही देखना चाहता सो बाहर ही समय काटता रहता है और क्या ! इतना छोटा बच्चा, पर कितनी समझदारी

अपर्णा (निश्चयपूर्वक) हाँ लेकिन बायजी, तुम्हारी इतनी नाराजगी की आखिर वजह भी तो जानूँ !

बायजी (सहसा खीजकर) मुह तोड दूगी तेरा सावू। ऊपर से मुंह विचकाकर पूछ रही है कि क्या हुआ ? जरा भी शरम नही आती ? सारे नगरभर मे ढिंढोरा पिट गया है और क्या मैं नही जानती ?—इतने दिन सिफ सुनती आई हूँ। दो-चार बार तुमसे पूछा भी तो कहती रही (हेकडी दिखाकर) झूठ है, सब—कुछ झूठ है, बायजी। सरासर झूठ। लोग कुछ भी बातें उडाते रहते है, बायजी। तू कुछ भी कह लेकिन मैं पहले से जानती थी, तभी तो तुझे कॉलेज नही भेजा था मैंने—तू उस

डायन पिशाचिनी दूसरी आयशी के रास्ते पर जाएगी और क्या ! उसी चुड़ैल का खून तेरी नसों मे भरा हुआ है। जब तक मुझपर तेरी जिम्मेदारी थी तबतक सँभाला मैंने। अब तू है और तेरा भाग। (कुछ रुककर) वह जो तेरा केटी या फेटी है क्या वह भी तबलची है क्या ? (सावू बिना उत्तर दिये केवल ताकती रहती है।) सुन सावू, याद रखना हाँ, श्यामराव जसे शरीफ और नेक पति को छोड रही है, यह कतई ठीक नही है। हा, बताए देती हूँ।

अपर्णा क्या ? मैं श्यामू को छोड रही हूँ। झठ—सरासर झूठ। किसने कहा बायजी तुमसे यह सब-कुछ ?

बायजी श्यामराव ने ही खुद बताया है। वे थोडे-ही झूठ बोलेंगे ?

अपर्णा लेकिन बायजी यह सरासर झूठ है। बल्कि वही मेरे साथ आजकल ऐसा बर्ताव करता है, जैसे मैं उसकी पत्नी नही हूँ।

बायजी बस बस। कुछ मत कहो। मुझे तुमपर जरा भी भरोसा नही।

अपर्णा (परेशान होकर) उफ्। तो फिर बायजी तुम कहना क्या चाहती हो ?

बायजी (रोती सी सूरत करके, रुआँस स्वर म) आखिर मैं कर ही क्या सकती हूँ ? यही अफसोस की बात है कि मैं कुछ भी नही कर सकती। अगर मैं साफ-साफ कहूँ कि तुम जो कुछ कर रही हो उससे तुम्हारे हाथ दुख ही आएगा तो तुम्ही मुझसे पूछ बैठोगी कि बायजी तुमने भला कौन सा सुख पाया है ? (आँखें पोछती है। अपर्णा उसकी ओर देखती हुई चुप है।)—कल सवेरे सतीश को

मेरे पास भेज देना। इस बखेड़े मे उसकी हालत और बुरी न हो। नही, तेरी आँखें अब नही खुलेंगी। कल जब तेरा शरीर थक जाएगा तब यही जाग जाओगी, समझी मैं चलती हूँ—

(जाने के पहले कुछ और कहना चाहती है कि दरवाजा खटखटाकर केटी का प्रवेश। सहसा उसे देखते ही अपर्णा कुछ संकोच और उलझन म। फिर सँभल जाती है। और उसका स्वागत करती है। बायजी उसे शक्की नजर से निहारती है। बालाराव उससे मिलने खड़े हो जाते हैं। केटी फुर्तिला व्यक्तित्व। टन-टा करता हुआ प्रवेश—अवस्था चालीस के आसपास—सुदर और उमदा चंचल चाल—माथे पर बिखरी बालों की लटो को पीछे सवारने का खास ढंग। बीच मे सीटी बजाना, बोलते समय बीच म ही आँख मारने की आदत—चाभी घुमाते रहना—आदि।

अदर आते ही गर्दन झुकाकर सबको हॅलो-हॅलो कहते हुए चाभी घुमाता रहता है। अपर्णा उसका परिचय करा देती है।)

अपर्णा आइए—ये हैं मेरी बुवाजी। बायजी, इन्ही के घर मैं पली।

केटी ओऽ, आप जो तुमने जिक्र किया था। हाँ, हॅलो नमस्ते।

(बायजी को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। पर वह कोई रिस्पॉंस नही देती। केवल किसी लड़ाकू भैस-सी उसकी ओर घूरती रहती है। जैसे ही वह कमरे भर म घूमता है, बायजी की नजर भी उसके पीछे पीछे घूमती जाती है।)

अपर्णा और ये हैं हमारे बालाराव (दोनो हॅलो-हॅलो हाऊ आर यू कहते हुए हस्तांदोलन करते हैं।) बायजी के पति

केटी यस यस, आय नो साबू आपके बारे मे बार-बार कहती रहती है।

बालाराव (अपर्णा से दबी अवाज म) साबू, ये कौन भला ?

अपर्णा इस्स्। मैं तो भूल ही गई। ये हैं केटी—कृष्णकांत ठोसर माय बॉस।

केटी ओ नो। बेटर से 'ए फ्रेंड'। ए गुड फ्रेंड।

बायजी (केटी के अस्तित्व को भुलाकर निग्रह पूर्वक) और साबू, देख तुझे बता देती हूँ—मैं इसके बाद तेरे घर मे कभी कदम नही रखूगी। हाँ तुझे बताए दे रही हूँ। (केटी असमजस मे) और तू तू भी हमारे घर कभी मत अना। तेरे कारण हमे सर नीचा न करना पडे। (बालाराव कुछ पशोपेश मे 'डाट टक इट सीरियसली' कहते हुए केटी को कुछ बताने की कोशिश म है कि) चलिए जी। (बालाराव जल्दी-जल्दी सिगार का धुआ छोडते हैं और उसके पीछे-पीछे हो लेते हैं। वह भी वह ले जाती है।)—और सुनिए आप भी इस घर मे कदम नही रखेंगे। बताये देती हूँ।

(वह जाने लगती है। उसके पीछे जाते हुए बालाराव हाथ के इशारे स अपर्णा का धीरज बँधाते है कि तू शाति से काम ले, सब्र कर—दोना चले जाते हैं। अपर्णा दरवाजा बद कर लेती है।)

अपर्णा बैठिए ना। (वह और केटी बैठ जाते हैं।)

केटी लगता है, तेरी बायजी तो आपे से बाहर हो गई है।

अपर्णा कुछ समझ मे नही आ रहा है कि क्या कहूँ ? कोई यह नही सोच रहा कि श्यामू मेरे साथ कैसा बर्ताव करता है। हर किसी की निगाह मे मैं ही गुनहगार

हूँ। सारी गलती मेरी ही है।—बायजी का कहना है भूल तेरी ही है। श्यामू कहता है मैं गलत हूँ। क्यो, मैं औरत हूँ इसीलिए ना ?

केटी श्यामराव कहाँ गये है ?

अपर्णा कही वाहर गया है।

केटी तुमने उन्हे वताया नही था कि मैं उनसे मिलने आने वाला हूँ।

अपर्णा बताया तो था।

केटी ओ। आय सी। फिर आ जाएगे शायद। मै कुछ देर इनजार करूँगा।

अपर्णा ठीक है। अच्छा, वताइए आप क्या लेगे चाय या शरवत ?

केटी ना। कुछ भी नही। मुझे यहाँ से सीधे स्टुडियो पहुँचना है -वहा कुटे आनेवाला है—यूनियन का लीडर। मागें, धमकियाँ—हडताल, तोड-फोड—ये लोग न खुद ठीक काम करते हैं, और न औरो को करने देते हैं।

अपर्णा गीत का कैसेट लगाऊँ ?

केटी रहने दो। अभी नही। मैं ज्यादा देर नही रुकूगा।
(घडी म देखता है और टहलने लगता है।)

अपर्णा आज श्याम् से क्या कहने वाले थे ?

केटी आ हा। दरअसल वाते शब्दो मे व्यक्त करना बडा मुश्किल हो जाता है। लेकिन फिर भी मुझे धीरज करके वताना ही पडेगा। कहना पडेगा कि आप अपनी पत्नी पर लगातार अन्याय और ज्यादतियाँ करके उसे अनचाहे रास्ते पर मत धकेलिए। पिछले कुछ दिनो से देख रहा हूँ आपकी पत्नी बहुत, शी

लुक्स वरी ।वह पहले अवसर चिअरफुल, खुशतबीयत रहा करती थी। अब जैसे जबरदस्ती मुस्कराती है— कई बार उसकी आँखें लाल दीखती हैं।—इसका नतीजा यह है कि उसके दिल पर और काम पर भी तो बुरा असर होगा ही। उसके एक मित्र, एक चहेते की हैसियत से, एक वेलविशर के नाते आपको आगाह करना मेरा फर्ज है—इस बात को गभीरता और सजीदगी से सोचना जरूरी है—खासकर उस पर हमेशा शक न करके सही ढग से सोचना चाहिए।

अपर्णा उफ्, कुछ फायदा नही। श्यामू एकतरफा है। वह सुनने वाला नही। जब तक मैं बायजी के जैसे नौकरी छोडकर घर मे नही बैठती तब तक उसे चैन नही आ सकता।

केटी अरी, पर यह सब एक बार उन्हे समझा-बुझाकर तो देखा जा सकता है।

अपर्णा मैं तो कहती हूँ वह आपसे मिलेगा ही नही। देखिए, वरना आज नही यहाँ रुक जाता?

केटी (कुछ रुककर) ठीक तो है। लेकिन श्यामराव सशय के शिकार जो बने हैं। ऑफिस के काम के दौरान अगर हमे एक-दूसरे की पसर्नेलिटी पसद हो और अगर कही साथ-साथ घूमे—एक-दूसरे से मिलें तो किसी को बरदाश्त नही होता मेरी पत्नी भी तो सदा जलती खीझती रहती है। और ऐसी गुस्सैल, ईर्ष्यालु, गरम-मिजाज औरते ऐसी दशा मे कुछ अलग ही दीखने लगती है। भयकर! न जाने उनकी सुदरता कहाँ गायब हो जाती है, सिर्फ बोर उक्ताऊ-सी लगने लगती हैं बस।

अपर्णा कभी-कभी लगता है नौकरी—नौकरी छोड दूँ और घर-गृहस्थी ही निभाती रहूँ। उसी मे ही अपने को डुबो दूँ।

केटी लेकिन साबू तुम्ही मुझे बताओ इस क्षण तक क्या हमने कोई गलत काम किया है? मैं रागिणी से भी बारबार यही सवाल पूछता हूँ। पर उसका हमेशा यही कहना है कि ताल वृक्ष के नीचे बैठकर छाछ नही पिया जाता।

अपर्णा मैंने भी श्यामू से यही कहा कि अगर मैं कही दूसरी नौकरी भी करूँ तब भी वहाँ केटी नही होंगे पर कोई और बॉस तो होगा ही—कोई और पुरुष।

केटी और तो और वह मेरे जैसा नही होगा। आय हैव ऑलवेज रिस्पेक्टेड यू। यह सच्चाई है कि तुम मुझे अच्छी लगती हो। बहुत प्यारी! क्यो? ठीक-ठीक शब्दो मे कह नही पाऊँगा। पर जब भी तुम मेरे साथ रहती हो तब मैं खुश रहता हूँ, खूब, बहुत खुश। तुम्हारी सगत मे अजीब-सी मस्ती छाई रहती है मुझमे। यह सुख, यह मस्ती और खुशी रागिणी की सगत मे कतई नही मिलती।—और रागिणी भी तो बदल चुकी है इस बिजिनेस के कारण जबसे मेरी सोशल लाइफ कुछ बढ गई है, तब से लगातार सशय का भूत उसके सिर पर सवार है। सशय के कारण जैसे दबोची जा रही है, टूट रही है—शायद इसीलिए मैं भी तुम्हारी सगत की चाह मे तरसता हूँ लेकिन मैं यह भी नही छिपाऊँगा तुम्हारे साथ होने पर मुझे बहुत एक्साइटमेट मिलती है—

अपर्णा हा। मैं तो इस नजरिये से कभी सोचती [illegible]

क्योंकि मेरे मन मे अक्सर बैठा हुआ होता है—मेरा अपना घर। सोचती हूँ घर-गृहस्थी—श्यामू—सतीश —तिसपर भी सब जन मुझसे किनारा करते रहते हैं। बेटा सतीश, छोटा-सा लडका पर वह भी मुझसे दूर दूर भागता है।

केटी (घडी मे देखकर) चलो, मुझे अब चलना चाहिए। स्टुडिओ पहुँचना होगा। कुटे आ गया होगा। लेकिन साबू तुमसे एक बार बल्कि कहता हूँ कि कितना भी पेचीदा, बाका प्रसग क्यो न हो घर मे तेरे या मेरे घबराना नही मैं जो हूँ। तेरे पीछे पहाड-सा खडा रहूँगा, डोण्ट वरी अबाउट दँट।

अपर्णा (साश्चय) मतलब ? आप सुझाना क्या चाहते हैं ?

केटी (कुछ सोचकर मुस्कराते हुए) नही, कुछ नही। (कॉलर खोलते हुए) देखो, गले पर यह घाव देख रही हो ? रागिणी से शादी करने मे घर मे सख्त विरोध था। तब गला काटकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी मैंने—यस्—बीस साल की आयु थी तब—एक स्वप्नालु बच्चा। और अब ? अब व्हेअर एम आय ?

अपर्णा ओफ्, यह सबकुछ आप मुझे बता चुके हैं जी।

केटी अब मेरे दो बच्चे भी बडे हो गये हैं। फिर भी वैसी ही कोई हालत पैदा हो जाए तो मैं तुम्हे योहि मझधार मे नही छोड़ूँगा—आखिरकार शादी शादी भी तो क्या है ? एक उपचार जस्ट ए होपलेस फॉरमैलिटी। शादी के कारण रिश्ते थोडे ही पक्के बन जाते हैं ? प्रेम थोडे ही बढता है ? तेरे मा बाप की भी तो शादी हुई थी ना ? बालाराव और बायजी की भी शादी हो ही गई है—और तेरी और श्यामराव की

भी शादी हुई है—ठीक वैसी ही मेरी और रागिणी की शादी हो चुकी है बस। तिसपर भी हम कहाँ हैं ?

अपर्णा (हताशा से) ओफ्, यह सब कुछ—मेरी समझ मे कुछ नही आता, बडे पशोपेश मे फँस गई हूँ।

(केटी चला जाता है। अपर्णा कुछ देर बेचैनी मे बैठती है। दोनो हाथो से सिर दबाये। मन की बेचैनी को व्यक्त करने वाला पार्श्व-सगीत। सहसा खुले दरवाजे मे से श्यामू आता है, उसके पीछे पीछे सतीश।)

अपर्णा आओ चलें खाना खाएगे।

श्यामू नही, मैं खाना खा चुका हूँ।

अपर्णा और सतीश तुम ?

सतीश मैं भी खा चुका।

अपर्णा अच्छा। तुम्हें पापा कहाँ मिले ?

सतीश मैं उनकी लाइब्रेरी गया था। (अन्दर के कमरे मे चला जाता है।)

अपर्णा बायजी और बालाराव आये थे।

श्यामू और भी कौन ?

अपर्णा और केटी आये थे। बायजी के सामने ही (श्यामू उसकी ओर सशयभरी निगाह से देखता रहता है।) दरअसल वे तुमसे मिलने आये थे तुम्हे उनसे मिलना चाहिए था।

श्यामू नही। मैं उससे नही मिलूगा। मुझे तुम दोनो के बारे मे कुछ कहना नही। और अब मेरे कहने का कोई मतलब ही नही रहा है।

(सतीश छज्जे मे बिस्तर लगाता है।)

अपर्णा (क्षणभर उसकी ओर ताकती हुई) श्यामू, अपने ऐसे बर्ताव से तुम मुझे अनचाहा रास्ता अपनाने पर मजबूर

करोगे। (सतीश आँखो पर तकिया रखे लेट जाता है।) क्यो रे सिरदद है क्या ?

सतीश नही।

(वह सतीश के पास जाकर देखती है कि उसे बुखार तो नही है फिर वहाँ का दिया बढाकर अदर जाने लगती है।)

श्यामू जरा ठहरो। मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात करनी है। (वह बैठ जाती है।) याने कि तुम्हे समझाने-बुझाने, या कि हृदय-परिवतन के लिए नही। बट सॉट ऑफ लाउड थिंकिंग। बस तुम शायद समझ रही हो कि कैरियर, व्यवसाय—नारी-मुक्ति आदि के लिए तुम केटी के पीछे जा रही हो—पर यह सचाई बिलकुल नही है। कैरियर के लिए इन बातो की जरूरत नही होती। जानती हो कि असल मे होता क्या है ? नौकरी, कैरियर, व्यवसाय के बहाने नारी-पुरुष इकट्ठे आ जाते हैं भले आ भी जाएँ उसमे गलत कुछ भी नही लेकिन उसमे अगर कोई खतरा है तो यौन-आकर्षण का—खिचाव का। आखिरकार उस खिचाव के कारण कैरियर, नौकरी, नारी की आजादी के विषय मे झूठ, नकली आरग्युमेंट्स शुरू हो जाते है। शारीरिक मोह के कारण ही तो गहस्थिया टूट जाती रही है—और इसके बाद और बडे पैमाने पर टूटती जाएगी। हा यह सब कुछ सावधानी से सोचना-विचारना चाहिए।

अपर्णा श्यामू, मैं एक बात साफ कहती हूँ, तुम मेरी बात पर विश्वास करो। मैंने सोच समझकर अपने को पूरा-पूरा सँभाला है। जानते हो केटी मेरी ओर कितना

आकर्षित है, मुझे कितना चाहता है पर मैंने कभी उसे इस प्रकार साथ नही दिया, प्रोत्साहित नही किया। एण्ड परहप्स दॅटस व्हाय ही रिस्पेक्टस मी !

श्यामू लेकिन ऐसे खतरे की सीमा पर हम रहे ही क्यो?

अपर्णा तो फिर क्या करना चाहिए ? मैं नौकरी छोड दूँ यही ना ? (श्यामू का सम्मतिदशक मौन। उसकी ओर देखता है। निश्चयपूवक कहती है।) नही, मैं नौकरी नही छोडूँगी। तेरे साथ पूरी-पूरी वफादार रहूँगी। मेरे लिए यह बात मुश्किल नही है श्यामू बिकॉज आय लव यू आय लव माय सन आय लव माय होम। लेकिन फिर भी नौकरी छोडकर अपना कैरियर गंवाकर औसत औरत के समान मैं पति की सेवा मे मरूँगी भी नही आय शॅल नेवर बी एक ट्रेडिशनल हाऊस वाइफ।

श्यामू (कुछ देर बेचैनी से सोचता हुआ) उफ् समझ मे नही आ रहा है कि हम कहाँ पर गलत हुए शायद हमने एक दूसरे को ठीक-ठीक समझा ही नही होगा—पूरी-पूरी तीव्रता का अनुभव नही किया होगा एनी वे, इट इज टू लेट नाऊ। दरअसल तेरी निगाह मे मैं नालायक जो हूँ। क्योंकि तेरी इस नई जिंदगी के सोशल क्लाइंबिंग को मैं निभा नही सकता। मैं सोशल क्लाइंबर नही हूँ। समाज की जिस ऊपरी सतह पर यह सब कुछ छाया रहता है, वहाँ मैं नही चल सकता। नही, मुझे उस सामाजिक तबके का आकर्षण भी है। मैं बल्कि मैं अपने इस निचले आम तबके पर ही सुखी रह सकता हूँ। मैं यह सब-कुछ तुम्हें समझा नही सका। मे बी आय फेल्ड, इटस ऑल राइट। (उठते हुए मुस्कराता

है।) लगता है, मैं कुछ बहुत ज्यादा बोल चुका हूँ आज।

(कुछ देर खिड़की की सलाखा मे स स्मशान की तरफ देखता रहता है। वह उठकर बेडरूम की तरफ जाती है। वह मुड़कर कपड़े उतारने लगता है कि उसका ध्यान करवट लिए लेटे सतीश की ओर जाता है। उसको चादर ओढ़ाता है। कान की चटाई उठाकर सारे दिय बुझा देता है। फिर छज्जे म चटाई बिछाकर नगे बदन सो जाता है। (विषण्ण उदास सगीत) नीद न आन के कारण पुन उठकर बैठ जाता है। फिर पुस्तक खोलकर पढ़न लगता है। यह सब करते समय उसे शादी के पहले साबू के साथ चोपाटी पर बैठे कुछ सवाद याद आते है।)

श्यामू साबू, मैंने बायजी के घर आकर तुम्हारा हाथ मागा है तो क्या हुआ। सिफ इसीलिए हाँ कहना पडे ऐसी तो बात नही। अगर मैं तुम्हे पसद हूँ तभी ।

साबू हाँ हाँ, आप मुझे वाकई बहुत पसद है। दरअसल मैं ठहरी एक आम लडकी सिफ मैट्रिक पास। और आप इतने बडे पढे-लिखे प्रोफेसर। अच्छी-खासी तनखा। दीखने मे भी खूबसूरत (बस मुस्कराती है) और एक बात पूछूं ?

श्यामू हाँ-हाँ पूछो ना !

अपर्णा भला आपने मुझे ही क्यो पसद किया ?

श्यामू हाँ, अपनी पत्नी के बारे मे जो एक कामना मेरे मन मे बैठी है ना तुम बिलकुल वैसी ही हो। पहली बार जब तुम्हे देखा था तब उसी क्षण तुम्हारा दीवाना हो गया था मैं।

अक तीसरा

(श्यामू का घर। लेकिन उसम पिछले लगभग दस वर्षों स अपर्णा के साथ केटी रहता है। इसलिए घर वही होते हुए भी वह उच्च मध्यवर्गी का घर लगता है। अच्छा मा फर्नीचर टेबल लैंप—कीमती परदे। दीवारा की बढिया आकपक रगसगति। दीवारा पर चुनीदा पंटिग्ज। टेपरिकॉडर। मेज पर तरह-तरह की परफ्यूम्स की बोतलें।

बीच म दस वप की अवधि बीत चुकी है इतनी अवधि का अपरिहाय प्रभाव। रगभूषा मे परिवतन। सवेरे के आठ वज रहे है। वड पूजा का दिन। केटी सोफे पर बैठा समाचार पत्र पढ रहा है। सामने कीमती कप टू। चाय पी चुका है। पाश्व मे रेकाड वज रहा है। आवाज़ इतनी धीमी है कि सवाद सुनन म दिक्कत नहीं होती। केटी बाहर जाने की तयारी मे पेपर पढते-पढते सिगरेट पी रहा है। उससे आगे बढिया आकार का शीशे का एश-ट्रे। सहसा किसी बात की याद से समाचार पत्र हटाकर एश ट्रे मे *सिगरट बुझाता है और*)

केटी सावू!

(सावू बाहर आती है। वह यद्यपि घर के कपडो म

है फिर भी व्यवस्थित और आकर्षक। वह कुछ कहना चाहती है पर केटी को बाहर जाने की तैयारी मे देखकर—)

अपर्णा अब तुम कहाँ जा रहे हो ?

केटी पहले स्टुडियो जाऊँगा—हडतालियो के प्रदशन हो रहे हैं—देखता हूँ।

अपर्णा हर दो साल बाद ये हडतालें क्यो ? मैं चलूगी साथ मे ?

केटी ना। तुम किसलिए तुम वहाँ आकर क्या करोगी ?

अपर्णा लेकिन दूर से देखना। कही पत्थर आदि न फेंकें।

केटी (उठते हुए) मुझे तो इन मजदूरो का बडा अजीब लगता है— वैसे और समय वे इतने अच्छे-भले होते हैं पर बस जब मांगें, प्रदशन और हडताल सब हुआ कि साले एकदम अलग, अनाडी बन जाते हैं।

अपर्णा वह यूनियन का कुटे है ना ?—वह जानबूझकर उन्हे भडकाता रहा होगा।

केटी कुटे को भी अपने पेट का सवाल है। अगर हडताल नही हुई तो यूनियन नही रहेगी—यूनियन नही रहेगी तो कुटे का पेट नहीं भरेगा। यूनियन का भी धधा ही है।—आजकल कारखानादारी या मजदूरी ये दो पैसे कमाने के बडे साधन है।

अपर्णा बहुत गदा आदमी है कुटे। उसपर मानहानि का दावा दायर करना चाहिए।

केटी हाँ-हाँ ! मतलब हमारी और ज्यादा खुली बदनामी !

अपर्णा तुम दोपहर मे खाना खाओगे ना ? जरूर आना—आना ही पडेगा। (वह सोचते हुए खडा है।) सोच रहे हो ?

केटी (सहसा चौकन्ना होकर) यहाँ ! ना भई ? दोपहर का खाना—आय एम नॉट श्योर।

अपर्णा ना। वह कुछ भी नही चलेगा—आज छुट्टी का दिन है—और फिर मुझे तुमसे कुछ बातें भी करनी हैं। (उसी समय फोन की घंटी बजती है। सावू झट से फोन उठाती है।) जी हाँ, जी हाँ। आप कौन कुटे ? अजी कुटेजी, मैं सावू बोल रही हूँ—(खीझकर) कुटेजी मैंने आपसे कभी इस तरह बातें नही की पर आज बोलने की नौबत जो आ गई है—आप हमारे घर आते हैं, खाना खाते हैं। पिछले साल पूरे महीने-भर हमने आपकी फैमिली के लिए अपने खर्चे से महाबलेश्वर मे बगला बुक कराया था गोदरेज का फ्रीज दिया (केटी उसे रोकने का प्रयास करता है।) पर तिस पर भी आखिर आप हम पर ही पलट गये हैं ? मुझे हड़ताल के बारे में कुछ कहना है। हड़ताल के संबध मे जो कुछ भी है केटी देख लेंगे। पर समाचार पत्र मे फोटो छपवाया उसके सबध मे मैं कह रही हूँ कुछ भी मत बताइए वह फोटो आपने ही जानबूझकर छपवाया है उसी फोटो का पोस्टर भी आपने छपवाया है ना ना कुटेजी आप किसी तरीके की बहानेबाजी मत कीजिए उस फोटो मे आप भी हमारे साथ महाबलेश्वर मे थे कि नही ? बताइये थे या नहीं ? फिर आपकी फोटो छोडकर हम दोनो का ही फोटो कैसे छपा ? वापिस आते समय हमारी गाडी का एक्सिडेंट होने की खबर समाचार पत्र मे किसने छपवायी ? हम शराब के नशे मे धुत्त थे क्या ? और क्या मैं केटी की मलिन मनरो हूँ ? और यह सब-कुछ

होता भी है हडताल शुरु होते-होते। मुझे आप इतनी बुद्धू मत समझिए याद रखिए मैं आपसे जबरदस्त नाराज हूँ। चाहे जब हुआ हमारे घर चीजो पर हाथ मारते रहे मटन बनाइये—मुर्गी बनाइए

बेडी (सावू को चुप कराते हुए) अरी, इस तरह गुस्सा करने से काम नही निभता। तू खामखाह दिमाग खराब मत कर। अजी कुटे जी (कुटे की बात सुनकर) ना भाई, जरा भी गुस्से मे नही हूँ। पर वह खबर छपवाना, पोस्टर के लिए उसका इस्तेमाल करा लेना, और बाकायदा पोस्टर बाँटना यह सब कुछ मुझे कतई पसद नही। आखिरकार मैं भी बडे एडव्हर्टाइजिंग का डाइरेक्टर जो हूँ इस कपनी को सनराईज एडस मे मर्ज करने की बातें हो रही है और ऐसे मौके पर यह खबर छपवाना याने दिस इज इन रियल बैड टेस्ट। मेरे घरवालो को इसपर गजब की नाराजगी है। पिछले कई सालो से हम इकट्ठे हैं—लेकिन उसका इस प्रकार पब्लिक स्कैण्डल बनाने की क्या जरूरत थी? यह सारा सुनकर मेरे बच्चे क्या सोचेंगे? खैर जाने दीजिए। यह तो बताइए कि आखिर आप कहना क्या चाहते है? लेकिन आपके ये प्रदर्शन तो जारी हैं? आज स्थिति कैसी है? चक्रीय उपोषण? (हँसता है) वाऽहवा। अरे भाई, वे सब अपने आप खाना-वाना खाकर आते ह और उपोषण के लिए बैठ जाते है और क्या? क्या मेरे आने पर मुरदाबाद के नारे लगवाये जाएगे? अच्छा भाई, फिर मैं पद्रह मिनट मे आता हूँ। (फोन रख देता है।)

अपर्णा योगेश और योगिता मिले थे?

केटी हाँ, वे दोनो यह खबर सुनकर बडे नवस हो गए हैं।
इन बदमाशो ने वह पोस्टर घर भेज जो दिया था।

अपर्णा मुझसे कहा नही कि तुम उनसे मिले थे ?

केटी ह उसमे कहने लायक क्या है ?

अपर्णा कहाँ मिले थे ?

केटी घर पर।

अपर्णा रागिणीजी थी ?

केटी हाँ। वह भी बहुत अप्सेट है।

अपर्णा केटी तुम दोपहर खाना खाने आओगे ना ?

(केटी सोच म डूबा हुआ। सिगरेट सुलगाता है। अपर्णा झुझला उठती है—वह उसके मुह स सिगरेट खीच लेती है और एश ट्रे मे मरोड डालती है।)

अपर्णा कितनी सिगरेट पी रहे हो लगातार ?

केटी कहाँ ? लगातार कहा ? सुबह से यह तीसरी होगी।

अपर्णा ना, सिगरेट मत पीना !

केटी लेकिन क्यो ?

अपर्णा क्यो ? मुझे पसद नही ! बस ! तुम्हारे मुँह से बदबू आती है। फिर

केटी (मुस्कराते हुए) गनीमत समझो कि मैं सिगार नही पीता तुम्हारे बालाराव जैसा। वरना (वह खुलकर हँस पडती है।) क्यो हँसी क्यो भाई बालाराव के होठ और बायजी का चुबन यही ना ? (हँसता है।)

अपर्णा (बनावटी गुस्से से) रहने भी दो। बालाराव बायजी याने तुम जैसे रसीले नही होगे। फिर भी बायजी है मेरी बुवा, समझे ? (केटी कुछ सोच म परेशान-सा) केटी, आजकल तुम्हारा कुछ न कुछ जरूर बिगड गया है।

केटी नही तो ? कहाँ क्या ?

अपर्णा आजकल तुम पहले जैसे नही दीखते।

केटी अच्छा ? याने कैसा ?

अपर्णा जब देखो तब किसी सोच मे डूबे हुए, खोये खोये रहते हो।

(बाहर सीढ़िया पर सहसा पाँच-छ औरतो के हँसने और बक-बक करने की आवाज। केटी कुछ देर गाना सुनता है फिर गैलरी म देखता है।)

केटी (सहज ढग स) ये औरतें पूजा के लिए जा रही हैं। (सहसा कुछ याद करके)ओ माइ गुडनेस। (माथे पर मुट्ठी से मारते हुए) छी छी आज बडे पूजन ! ये औरतें पूजा के लिए जा रही हैं। साबू आज तुम्हारी वरस-गाँठ। ओ आय एम फुली, सॉरी साफ भूल गया था। साबू, माफ कर दो मुझे। (उसका हाथ अपने हाथ मे ले लता है।)

अपर्णा (अफसास से) रहने भी दो। पिछले दस साल से लगा-तार तुम मेरी वर्षगाठ इतनी अच्छे ढग से जोर-शोर से मनाते आये हो कि उन खुशियो की याद मे मैं पूरा जीवन बिताऊँगी।

केटी इव्हन देन ओफ्, फिर भी समय मे नही आ रहा कि अपने जीवन के इतने वडे इव्हेंट को मैं भूला ही कैसे ?

अपर्णा हाँ वही तो, मैं तुमसे अभी जो कह रही थी, यही कि आजकल तुममे कुछ बदलाव आ रहा है

केटी देखो अब हर साल के जैसी वडी पार्टी इतने शॉर्ट नोटिस से तो नही दे सकेंगे पर कुछ लोगो को इकट्ठा करेंगे। मानसी, जमन, बालाराव, राजेबाई एड

पयुअदर्स व्हेरी इजी चॉप सुज मैं ऑर्डर दे देता हूँ।

अपर्णा' (भीतर से खुश पर फिर भी विषाद भरे स्वर म) ना ना

केटी क्यो, क्यो नही ?

अपर्णा नही, आज नही, मुझे कुछ ठीक नही लग रहा है।

केटी क्यों ?

अपर्णा आज सतीश आयेगा मुझसे मिलने।

केटी तेरा सतीश ? गुड हेवस।

अपर्णा घर छोड जाने के बाद पहली बार आ रहा है। मुझे बहुत डर लग रहा है। क्या मालूम उसे देखने पर मेरी क्या हालत होगी ?

केटी तो फिर रुक जाऊँ शाम को ?

अपर्णा नही। उसने कहा कि तुम्हारी गैरहाजिरी मे ही वह मुझसे मिलेगा।

केटी ठीक है, लेकिन तुम्हे तो आज खुश होना चाहिए था। और घबराती क्यो हो ?

केटी इतने सालो बाद उसे देखूँगी ना इसीलिए। पिछले हफ्ते मैंने उसे तीन सौ रुपये भेजे थे। बी० ए० मे फर्स्ट क्लास पाया उसने इसलिए।

केटी (खुशी से) गुड-गुड, आय एम व्हेरी हॅपी फॉर यू सावू आज तेरे बरसगाठ के दिनपर जरूर तुझे विश करने आता होगा। (सावू के चेहरे पर खुशी) यही खास खबर सुनाने वाली थी तुम ?

अपर्णा नही। तुम खाना खाने आओगे उस वक्त बताऊँगी।

केटी उस वक्त। अरी, अभी क्यो नही बता देती ?

अपर्णा पता नही, तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी ?

केटी ए चल, वहाँ बैठ भी। हाँ, अब बोलो व्हाट इज दैट, सावू ? इतना क्या बताना है री ?

अपर्णा ना, तुम पहचानो

केटी मैं कैसे पहचान सकता हूँ भला ?

अपर्णा तुम तो पक्के वो हो केटी

केटी क्या ?

(अपर्णा उसके कान मे कुछ कहती है ।)

केटी ओफ्ओ, यह कैसे सभव है ?

अपर्णा क्यो नही ?

केटी (ठडे स्वर मे) मैं पहले भी तुमसे कह चुका हूँ सावू कि मैंने ऑपरेशन करा लिया है।

अपर्णा (रुआसी) लेकिन एकाध बार ऑपरेशन फेल भी हो सकता है, केटी ।

केटी इन दिनो कब गई थी ?

अपर्णा कहाँ ?

केटी *श्यामू के पास ।*

अपर्णा मैं उसके पास कभी भी नही गई। यू नो इट वेरी वेल, चार साल पहले जब सतीश एस० एस० सी० मे अट्ठाइसवें नबर पर आया था तब बस एक बार सतीश से मिलने गई थी ।

केटी लेकिन यह सब मैं आज पहली बार सुन रहा हूँ सावू ।

अपर्णा उसमे जानने लायक, बताने लायक क्या है ? (रोने लगती है ।)

केटी ओके ओके । दैटस ऑल राईट, सावू । इसमे इतना रोने जैसा कुछ नही । अपर्णा, आय एम सॉरी । मैंने कुछ गलत ही कहा पर आय डिडण्ट मीन यू । लेकिन वह सबकुछ सुनकर मुझे सहसा कुछ शॉक-सा लगा । (उसे पास लेते हुए) एनी वे, यू डोण्ट वरी । इट कॅन बी

अटेण्डेड टू इजिली

अपर्णा मैं गभपात नही कराऊँगी ।

फेटी यू विल हैव टू । हमे यह नही चाहिए, सावू ।

अपर्णा लेकिन मुझे चाहिए ।

फेटी डोण्ट बी रिडीक्युलस ।

(वहुत बेचैन होकर वहाँ से चला जाता है । अपर्णा को अकेलापन असहनीय सगीत । सुषमा का प्रवेश ।)

अपर्णा आइए, सुषमाजी, आप शातावाई के मोर्चे में वडपूजा मे नही गई ? जन्मजन्मान्तर इसी पति का ।

सुषमा ना भाई । मैं आजकल जाती ही नही । (कुछ रुककर) वधाई । आज तुम्हारी वषगाँठ है ना ? (सावू का हाथ लेकर उसे बधाई देती है । उसे नजदीक से निहारती है ।)

अपर्णा क्यो जी, ऐसे क्यो घूर रही हो एकटक ?

सुषमा क्यो, कुछ गडवड है ?

अपर्णा आँ कैसी गडवड (सयमपूवक) नही तो ।

सषमा शातावाई भी पूछ रही थी ।

अपर्णा अजी, वे तो यहा जरा भी नही फटकती । फिर उनको क्यो इतनी पडी है ? रास्ते मे मिलने पर अनदेखा कर जाती है फिर भी ।

सुषमा पर कुछ भी कहे, मुझे तो कुछ शक हो रहा है ।

अपर्णा (परेशानी स) हमारी कैसी वषगाठ और कहाँ की ? बस, तो हमारा करम दिन निकाल दिन ही

अपर्णा वस, बस । आपकी उमर क्या इतनी थोडे ही हो गई है ।

सुषमा उमर की वात नही जी । लेकिन फिकर करते-करते बुढापा जल्दी आ जाता है । देखो ना, आँखो मे तेल

डालकर बच्ची की इतनी निगरानी करती रही फिर भी आखिर नालायक भाग ही गई ना ? दिन रात विद्या चोणकर के घर जाया करती थी मैं तो उस पर कडी नजर रखा करती थी लेकिन वह किसी और के साथ भाग गई ।

अपर्णा लेकिन यह सुभाष देशमुख लडका वैसे अच्छा है ना ?

सुषमा हाँ वही हमारी खुश-किस्मती है। अच्छा-खासा इजीनियर है। खानदान भी ऊँचा है—मैंने पूछताछ कर ली है । लेकिन मैं कहती हूँ भाग जाने की क्या जरूरत थी ? मैं कौन बडा विरोध करती ?

अपर्णा हाँ, उसे लगा होगा कि आप लोग उसे मना करेंगे।

सुषमा अगर मना किया भी होता तो आजकल माँ-बाप की मनाही की परवाह कौन करता है ?

अपर्णा उसकी चिट्ठी आई या नही ? नागपुर मे रहती है ना ?

सुषमा यही तो दु ख है । दो लाइन चिट्ठी तक नही । कैसी ये बेटियाँ इतनी जल्दी रिश्ता तोड देती हैं (उदास मुस्कराहट) वैसे मेरा यह कहना भी तो फिजूल है। मैंने अठारहवें साल जो किया नही मेरी बेटी

अपर्णा जाने भी दो खुशी तो इस बात मे है कि जमाई अच्छा है । वरना किसी नाटकवाले या सिनेमावाले का हाथ पकडा होता तो ? हमारे ऑफिस की एक औरत की लडकी ने मोटर गैरेज के किसी लडके से शादी तय की है । डेढ सौ रुपये कमाता है, उसमे क्या आप खाएगा और क्या उसे खिलाएगा ? पूरा दिन नीली वर्दी मे ऊपर से सारे बदन मे पेट्रोल और

ग्रीस की चिकनी बदबू, छी । उससे तो देशमुख अच्छा। इजीनियर है इजीनियर की तनखा भी तो अच्छी-खासी रहती है

सुषमा यह बात नही जी, पर घर यो सूना सूना-सा हो गया है कि पूछो मत। मैं बिलकुल अकेली-सी रह गई हूँ। (सहसा फोन की घटी बजती है। साबू फोन उठाती है—दूसरी तरफ से सतीश बोल रहा है।)

अपर्णा हलो। कौन ? (खुशी से) क्यो रे सतीश ? हाँ, तो आओ ना। हा हाँ, आ जाना। ना, केटी नही है। (फोन रख देती है।) सतीश आ रहा है, शाम को आने वाला था, पर कहता है अभी आता हूँ।

(वहाँ बिखरी हुई वस्तुएँ सँवारती है। सुषमा उसकी धाँधली देख रही है।)

सुषमा पहली बार आ रहा है ना ? चलो, अच्छा हुआ। दो-तीन बार रास्ते मे मिला था। मैंने अपनी ओर से समझाने की कोशिश की थी अरे आखिर तेरी माँ ही तो है। कभी-कभार मिलते रहना चाहिए—लेकिन बस अनसुना कर दिया था उसने, हर बार।

अपर्णा (रुआसी सी होकर) दरअसल उसने मेरा घोर अपमान किया है। उसके मन मे मेरे बारे मे माँ का प्यार कतई नही। आज आ रहा है (रोती है।)

सुषमा (सात्वना के स्वर मे) हूँ हूँ रोइए नही। आजकल के बच्चे ऐसे ही हैं। उन्हे मा बाप से जरा प्यार ही नहीं। हमारी बेटी को ही देखिए न। बिना कहे-सुने उसका हाथ पकडकर सीधे नागपुर भाग गई। जरा भी परवाह की उसने माँ-बाप की ?

(साबू रोने लगती है। कुछ देर बाद अपने को समाल (कर

अपर्णा (रुआँसी आवाज मे) बी० ए० पास हुआ ! किया मुझे वताया उसने ? एमेस्सी मे अट्ठाइसवाँ नंबर पाया ! क्यो मुझे खुशी नही होती ? वताया मुझे ? (रोती है) यहाँ आपको, शातावाई को सवको पेडे खिलाए उसने पर मेरे पास आया तक नही ! मुझे तो आपसे और वालाराव से मालूम हुआ। इतने पर भी सारा अपमान पीकर मैं श्यामू के घर गई। श्यामू ने मुझे दरवाजे पर ही खडा कर वताया कि सतीश ट्रिप के लिए पूना गया है। आने के वाद भेज दूंगा। कहा था उसने पर वह आया नही। उसने वी० ए० पास करने की खवर तो भेजी है। पुरस्कार के रूप मे तीन सौ रुपयो का मनिऑर्डर भी भेज दिया मैंने—पिछले हफ्ते मे (अनोखी वदली हुई आवाज मे) आज इतने सालो के वाद आ रहा है आप ही आप। हाँ-हाँ अपना ही वेटा अपने आप मिलने के लिए आ रहा है मैं वस इस विचार से ही इतनी गद्गद हो रही हूँ। कैसी है यह मेरी हालत ?

सुषमा आज आपको क्या हो गया है, अपर्णाजी ? ठीक है कि सतीश आने वाला है पर सिर्फ यही एक कारण नही हो सकता।

अपर्णा आपको जिस वात का शक है, वह सही है सुषमाजी। पर केटी सतान नही चाहता—'डोण्ट वी रिडिक्यूल्स' कहा उसने।

सुषमा उसमे भला उनकी क्या गलती है ? सोचिए तो सही आखिर वह वच्चा किसका नाम लगायेगा ? कुछ भी कहिए पर सवसे पहले ही वहुत खीचातानी हो जाती है उसी मे और उस छोटे वच्चे की क्यो दुर्दशा ?

अपर्णा मतलब कि इसमे भी सारा कसूर मेरे ही माथे ? सब लोग बचपन से ही मेरी ओर उगली उठाते रहे कि मैं भी कही अपनी माँ के समान भाग न जाऊँ। आखिर श्यामू भी मुझे छोड कर चला गया। बताइए क्या उसका वह बर्ताव जिद का नही था ? तिसपर भी बायजी उसके घर जरूर जाएगी और मेरे घर मे कदम तक नही रखती सतीश भी वैसा ही है। क्या मैंने केटी को उसका घर-बार छोडने पर मजबूर किया है ? वह भी तो अपने घर जाता है, अपनी औरत और बाल-बच्चो से मिलता है उसके बच्चे भी तो मेरे घर नही आयेंगे

सुषमा हूँ, औरत का जनम, और क्या ?

अपर्णा अजी लेकिन इस गृहस्थी का मतलब ही क्या ? पति-पत्नी के रिश्ते का सही मतलब क्या है ?

सुषमा शात हो जाइए, अपर्णा जी धीरज रखिए। अभी सतीश आ जाएगा। ज़रा, हाथ मुँह धो लेना खुले दिल से उससे बातें करना। अजी, गृहस्थी मे सुख किसके नसीब है जी ? जाओ। (साबू अन्दर चली जाती है। बेल बजती है। सुषमा दरवाजा खोलती है।)

(सतीश आ जाता है। सुषमा को देखत ही चौंक पडता है।)

सुषमा आओ सतीश, बैठो ना।

(वह खडा है। सतीश के आने की सूचना साबू को देती है।)

सुषमा बैठो भी। आगे क्या करने का इरादा है तुम्हारा सतीश ?

सतीश अब तक कुछ भी नही लेकिन आइ० ए० एस० करने

का विचार है।

सुषमा अरे वैशाली की शादी का पता चला तुम्हे ?

सतीश हा जी। शाताबाई बायजी से कुछ कह रही थी (बातें करने मे उसका ध्यान नही है।)

सुषमा (अपनी बातो मे उसे जरा भी इटरेस्ट नही है, यह जानकर) अच्छा अब मैं चलती हूँ। चलती हूँ अपर्णा जी। (जाते हुए कुछ रुककर) माँ के साथ जरा ढँग से बाते करना। उसकी मनस्थिति ठीक नही है।

अपर्णा बैठ तो सतीश। कुछ खाएगा ? झट से बना देती हूँ।

सतीश ना। (उसके हाथ म लिफाफा द देता है। उसे लगता है कि जन्मदिन की भेंट होगी) पूरे गिन लो, तीन सौ रुपये हैं फिर कभी मुझे मत भेजना। और एक बात परसो एक सनसनीखेज खबर पढी।

अपर्णा हाँ इधर, केटी के स्टुडियो मे हडताल जारी है। मजदूरो ने वह बदमाशी की है।

सतीश पापा ने जो कहा वही हरकत तो आप लोगो ने की है, मजदूरो ने तो केवल ज्यादती की है बस।

अपर्णा अरे क्या बोल रहा है तू ?

सतीश तुम्हारे फोटो के नीचे श्रीमती अपर्णा श्यामसुदर खाडेकर छपा है। क्या तुम अभी तक मेरे पापा का नाम लगाकर हमे बदनाम कर रही हो ? उस केटी का नाम क्यो नही लगाती ? और वह पोस्टर। नाम लगाती हो पापा का और उस केटी की मर्लिन-मनरो हो।(अपर्णा चौंकती है।) देखो मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ, ध्यान से सुनो आइदा कभी सबध जोडने की कोशिश मत करना फिर कभी हमारे यहाँ न आना।

बालाराव साबू की राह देखता हुआ मैं नीचे खड़ा था कि वह आई मेरे पास चाभी देते हुए बोली, ऊपर बैठिए, मैं तरकारी ले आती हूं यही नुक्कड पर गई है, अभी आ जाएगी। बैठिए।

सुषमा क्यो जी बायजी आने वाली हैं ?

बालाराव ना। वह अब यहां नही आती।

सुषमा अभी मिली थी मुझे दत्तमदिर के पास।

बालाराव कुछ पूछ रही थी क्या ?

सुषमा अपर्णा जी के बारे मे ? नही जी। हां पर पूछ रही थी कि क्या आप यहा आते हैं ?

बालाराव बाप रे। फिर आपने क्या कहा ?

सुषमा मैंने कहा, कभी दीखे तो नही।

बालाराव (छुटकारे की सांस लेकर) वाह वा। व्हेरी गुड। शाब्बास बहुत शकी है वह। बैठिए ना। (वह बठती नही।)

सुषमा क्या आप पी रहे है ?

बालाराव जी हां। क्यो ?

सुषमा नही, एकदम उग्र बदबू आ गई। (कुछ रुककर) एक बात पूछू बालाराव जी ?

बालाराव हा, पूछिए ना ?

सुषमा दरअसल पीने से आपको क्या मिलता है ?

बालाराव क्या मिलता है ? (निर्विकार भाव से) कुछ भी नही मिलता है।

सुषमा फिर लोग पीते क्यो हैं ?

बालाराव कुछ भी पाना नही चाहते, इसलिए। (अपन से ही मुस्कराते हुए)। हा, मैं पीता हूँ इसलिए कि जरा किक आती है और रात को लेटते ही गाढी नीद आ जाती है। बस।

सुषमा (सुषमी स) विश्राम ने पीना बिलकुल छोड दिया ?

बालाराव आँ, क्या कह रही है सुषमाजी ? पीना छोड दिया ? विश्राम ने (उठके व शेकहैंड करते हुए बडी देर तक उसका हाथ हिलाते रहते हैं) कॉग्रेच्युलेशन्स, कॉग्रेच्युलेशन्स ।

सुषमा (हाथ छुडाते हुए ।) मैंने उससे कहा

(अपर्णा आ जाती है । हाथ म थैला है ।)

अपर्णा किससे कहा ? (थकी हुइ है । चेहरे पर हताशा-उदासी ।)

सुषमा विश्रामसे जी । कहा, आइन्दा शराब को कभी छुओ भी तो मैं छत पर से पीछे श्मशान मे कूद कर मर जाऊँगी । (साबू जड-बेजान ठडी नजर से सुषमा की ओर देखती है ।) आजकल जब से वैशाली भाग गई है ना तबसे बहुत सीधा हो गया है । (हसते हुए) उस दिन से सचमुच उसने शराब को छुआ तक नही है ।

बालाराव अगर वह फिर से शराब लेते तो क्या सचमुच आप श्मशान मे कूद पडी होती ?

(साबू अदर जाती है ।)

सुषमा नही जी, इस श्मशान मे नही कूदती ईसाइयो के श्मशान मे हम क्यो मरें ? हा लेकिन नींद की गोलिया खाकर जान दी होती जरूर । बच्ची भाग गई पति नशे मे धुत्त फिर जीना ही किसलिये ? (बाला राव उसके चेहरे की ओर देखते रहते हैं ।) देख क्या रहे है आप ?

बालाराव (भावुक होकर) आप दोनो का आपस मे इतना गाढा घना प्यार । इस तरह का प्यार भी हो सकता है— मुझे कतई विश्वास ही नही हो सकता । सोचता हूँ कि अगर बायजी मुझे इस तरीके से धमकाती तो क्या मैंने भी पीना छोड दिया होता ? खैर वह कभी इसी

तरह धमकी देगी ही नही।

(सावू बाहर आ जाती है। बहुत गभीर और विचार मग्न।)

अपर्णा (सुषमा से) आप कब आईं?

सुषमा अभी-अभी। बैठी तक नही। सोचा, तुम्हे एक खुशखबरी सुनाऊँ। सुनकर तुम्हे भी बहुत खुशी होगी।

अपर्णा कौन सी? (भावहीन चेहरा)

सुषमा (खुशी से) अजी, आज उस नालायक बच्ची का— वैशाली का फोन आया था मुझे ऑफिस मे, नागपुर मे (दोना हाथो से अपने से आलिगन की मुद्रा मे) जैसे मुझसे लिपट कर बातें कर रही थी कितना अच्छा लगा मुझे। एकदम सुखी है मेरी बच्ची। सुभाषजी ने मुझसे बातें की हमें नागपुर बुलाया है चार कमरो का फ्लैट है उनका ओनरशिप का। इजीनियर है न वह ऐरा-गैरा नही

(सावू बेजान-सी निर्विकार)

बालाराव (शातिपूवक सिगार पीते हुए) तो फिर भाग क्यो गए?

सुषमा मैंने भी उससे यही पूछा। अरी इस तरह भाग जाने का क्या कारण था? क्या हमने नही खुशी से हाथ पीले कर दिये होते? अब तो उसे भी कुछ पछतावा हुआ।

बालाराव पछताएगी ही।

सुषमा अजी, पछताना काहे का? झट भाग जाना था सो दोनो हवाई जहाज से भाग गए। मैंने कहा भी अरी क्या हवाई जहाज का इतना खर्चा लगता है? भाग जाना ही था तो क्या रेलगाडी से नही जा सकते थे? चाहे तो जादा-से-जादा फस्ट क्लास की टिकट खरीद

पर भागते इतनी ही बेसब्री थी तो। पगली कहीं की।

बालाराव रहने भी दीजिए (पीते हुए) उसमे भी अजीब मजा होता है सुषमाजी। श्रील (भावुकता से) आगे चलकर जीवन मे कभी इसकी याद आने पर उनके मन के पर लग जाएगे। लेकिन ।

सुषमा वल्कि एक बात बडी अच्छी हुई। मेरी बेटी अच्छे घर मे पडी। मेरी बहन को जब पता चलेगा तो उसका सारा घमड चूर हो जाएगा उसकी बडी लडकी की शादी कही ठहर नही रही है। और चार बेटियाँ हैं। घर-घर घूमती रह, मोटर मे से नाक चढा कर।

(सुषमा का आनन्द फव्वारे-सा उमड रहा था कि वह सहसा चुप हो जाती है। उसके ध्यान मे आ जाता है कि सावू ठडेपन से यह सबकुछ बिना ध्यान दिय सुना अनसुना कर रही है।)

सुषमा (सहसा गभीर होकर) आज तुम्हारी तबीयत ठीक नही है क्या ?

अपर्णा नही। वैसा कुछ खास नही। कुछ थकान-सी है।

सुषमा केटी साहब से ऑफिस मे मुलाकात हुई थी या नही ?

अपर्णा नही, वह वहाँ नही था आएगा ।

बालाराव बैठ री सावू, सावू तू जरा आराम से बैठ तो सही।

सुषमा अच्छा मैं चलती हूँ। खाना जो बनाना है मुझे। आज-कल विश्राम जल्दी खाना खा लेते हैं। (चली जाती है।)

बालाराव (सावू से) यह भी अजीब खुशी है, नही ? अनोखा आनद। (अपने आप से प्याला उठाकर) हैं जो हमे नसीब नहीं। (पीते हैं। सावू को निहारते रहते हैं। सावू बैठी

रहती है) सावू तू आज इतनी चुप[illegible] क्यो बैठी है री ?

अपर्णा (ठडेपन से) मेरे जीवन मे बालाराव कुछ उथल-पुथल की वेला आ गई है।

बालाराव क्यो ? क्या हुआ सावू ? (चिंताग्रस्त)

अपर्णा आज का दिन मेरे ऑफिस का आखिरी—

बालाराव क्यो ?

अपर्णा न्यू वर्ड का सनराइज मे मर्ज होना तय हो गया है सनराइज का पटेल आ रहा है उसने केटी को निकाल दिया मैं केटी की हूँ सो आज नही तो कल निकालेगा ही। इसलिए मैंने उससे पहले ही इस्तीफा दे दिया है।

बालाराव तू केटी की है इसीलिए ?

अपर्णा हाँ, लेकिन मैं अब केटी की भी कितनी हूँ ? और कितने दिन यह भी प्रश्न ही है।

बालाराव (चौंककर) क्यो, क्या हुआ सावू, क्या हुआ ?

अपर्णा वैसा खास कुछ नही हुआ है। पर अनजाने कुछ ना कुछ होता रहता है बालाराव ! समझ मे नही आता इन दिनो चार-चार दिन तक वह यहाँ आता भी नही। पिछले आठ दिनो से वह एक बार भी यहाँ नही आया कह रहा था कि बाहर जाना है लेकिन है वह यही पर। उसकी लडकी की शादी तय हुई है यह बहाना बनाकर मुझ लगता है

बालाराव अपने घर जा रहा है

अपर्णा जाने भी दो। प्यार के सबध जबरदस्ती से टिकाये नही जा सकते वह जाने की बात करता है तो भले जाने दो उसे (कुछ देर रुक कर) आजकल मुझे

लगने लगा है शुरू से ही मुझसे कसूर होता गया कही न कही मैं गलत थी। पर मैंने जो कुछ भी किया किसी के कहने से नही किया। खुद आप ही किया। कई बार लगता है कि कोई अज्ञात हाथ मुझे खीचते हुए यहाँ तक लाये हैं। लगातार मुझे डर लगा रहता है बेचैनी महसूस करती हूँ लगता है कि अब आगे मेरा क्या होगा ?

बालाराव (प्याले मे शराब और पानी उँडेलते हुए) देख सावू। मैंने तुमसे कई ज्यादा गरमियाँ देखी हैं, धूप मे बाल सफेद किए है। (पीता है।) एक बात बताता हूँ जैसे-जैसे आयु बढती जाती है, नसीब जो बदा हुआ होता है। पर लगता है अपना कुछ ना कुछ गलत हुआ है। अगर तू श्यामू के साथ ही रहती होती तो लोग तुझे सुखी मानते। यह बात अलग है कि तू सुखी होती या ना भी होती। केटी के साथ तू सुखी हो भी सकती थी अथवा नही भी। विचार कर तय करके ढूँढ़ कर कभी सुख के रास्ते नही मिलते हैं और कुछ लोग आप उस रास्ते पर आ जाते हैं। सो सावू (पीता है।) डू नॉट गेट डिसहार्टन्ड्। फेस इट् अॅज इट कम्स्। (एक घूंट म पीकर) दरअसल यह कहना बहुत आसान होता है जानता हूँ—तभी तो मैं यह कह रहा हूँ

(फोन की घंटी बजती है। सावू उठकर फोन उठाती है। उस तरफ फोन पर केटी का लड़का)

अपर्णा (फोन पर) हैलो, कौन ? अरे, केटी के योगेश हो तुम ? कितनी दूर की आवाज है। (परेशान-सी होकर) तेरे पापा यहाँ नहीं तुम्हारे घर गए थे ना ?

रागिणीजी से मिलने के लिए ? नही रे वे यहाँ नही हैं। पिछले आठ दिन से उनका कुछ पता नही (सावू हॅलो हॅलो करती रहती है कि फोन झट से बद करती ह। वैठते हुए) योगिता की शादी तय हुई है पर किसके साथ, यह कहने के लिए वह तैयार नही है।

बालाराव (शराब के नशे मे धुत्त है) एक खुश खवर क्या ? मिली कि नही ?

अपर्णा कौनसी ?

बालाराव तेरा सतीश आइ० ए० एस० हो गया। (वह चुपचाप सुनती है) और उसकी शादी तय हो गई है।

अपर्णा (कुछ देर खामोश) हा मुझे लगा ही था उसने तय की होगी

बालाराव क्यो मिला था कभी ?

अपर्णा दो दिन पहले दोनो को चर्च गेट पर देखा था। अन-देखा करके चला गया मेरे सामने से

बालाराव अरी, देखा नही होगा उसने तुम्हे।

अपर्णा नही देखा जरूर था। और उससे कुछ कहा भी क्योकि वह मुड-मुडकर मुझे देख रही थी।

बालाराव बेवकूफ लडका है। यही मैड बच्चा कल कलेक्टर होगा भगवान जाने कैसा एडमिनिस्ट्रेशन देखेगा। एनी वे तू दिल छोटा मत करना।

(मुह पोछने के बहाने से वह आँखें, नाक पोछती हैं। कुछ देर खामोशी।)

अपर्णा लडकी कहाँ की है ?

बालाराव गौरी टिलक अच्छी लडकी है। उसने पिता डॉ० टिलक विख्यात सजन हैं परसो आया था।

अपर्णा कौन ?

बालाराव सतीश । ससुर की ऐसी तारीफ कर रहा था कि बस ! हाँ वैसे हमेशा जमाई को ससुर का और ससुर को जमाई का बहुत प्यार होता है । बार-बार कह रहा था टिलक बहुत नामी-गरामी है, विख्यात हैं टिलक बहुत मशहूर है मैंने कहा, क्या लोकमान्य टिलक ? (हँसते हैं ।) तब कही जरूर चुप हो गया बच्चू ।

(साबू सहजता स छज्जे मे जाती है बाहर देखती है । उसे केटी आता हुआ दिखाई देता है ।)

अपर्णा केटी आ रहा है ।

बालाराव मैं अदर चला जाऊँ ?

अपर्णा नही । मुझे लगता है कि अब आपका चले जाना ही बेहतर होगा । बुरा मत मानना ।

बालाराव (उठते हुए) नो नो मैं कल परसो आऊगा (उससे हस्तादोलन करते हुए) फेस इट् अँज इट् कम्स् । (हाथ छोडते हैं । जाने को मुडते हैं कि केटी आ जाता है ।)

केटी (दिखावटी खुशी मे) ओऽहो । बालाराव, कितने दिनो बाद मिल रहे हैं ?

बालाराव मैं बीच-बीच मे आता रहता हूँ लेकिन भेंट इधर नही हुई । अजी, हमारा क्या ? रिटायड टायड अण्ड रिस्टायर्ड ।

केटी (मुस्कराते हुए) प्याले मे तीर्थ वगैरह सब हो गया लगता है ?

बालाराव हमारा रहा यह देशी तीर्थ राजापुर की गगा आपका वहसाहत्री तीर्थ आपके साथ जब बैठक जम जाती है ना तब इस बार की वडपूनम आप चूक गए ?

केटी अजी, इतनी हड़बड़ी। उसमें वटपूजा की पार्टी चूक गई।

बालाराव डोण्ट वरी। नेक्स्ट इअर अच्छा, सावू मैं कल-परसों आ जाऊँगा। फेस इट् अँज

केटी (अलमारी में से एक बोतल बालाराव को दे देता है।) टेक दिस ले जाइए।

बालाराव (कागज खोलकर देखते हैं।) व्हाईट हॉर्स। (कागज लपेटते हुए) हॉर्स पॉवर। (हँसते हैं) थक्यू थैंक्यू केटी वाय वाय (चले जाते हैं।)

केटी (उन्हें जाते हुए देखकर) दरअसल असली सुखी आदमी ये हैं। (दरवाजा बंद कर लेते हैं।) सावू ? माय डिअर हाऊ आर यू ?

अपर्णा फाइन (एक तरफ बैठ जाती है।)

केटी गुड

अपर्णा योगेश का फोन आया था पूछ रहा था कि क्या तुम यहां हो ?

केटी कब ?

अपर्णा दस-पंद्रह मिनट हो गए होंगे।

(केटी उठता है और फोन करता है।)

केटी (फोन पर) हैलो योगेश क्यों रे ? ऐसा क्यों ? मैं दस बजे तक घर आ रहा हूँ ना, ना, मम्मी से कह देना कि यों ही फालतू भागदौड़ मत करें। मैं ही चला जाऊँगा एअर पोर्ट पर (फोन रख देता है।)

(सावू उसकी ओर ताक रही है।)

केटी पटेल के पास गया था। मेरी सब सेटलमेंट के लिए। तेरा इस्तीफा स्वीकार किये जाने की खबर उसी ने

मुझे दी। यू हैव डन् ए वाईज थिंक। अब मेरे वहाँ न होने से मुझे तकलीफ तो होती ही। डोंट गेट डिस-हार्टेंड। आय विल फाइण्ड आऊट समथिंग फॉर यू। अपने पैरो पर खडी रह सकोगी, स्वावलम्बन से जीवन बिताओगी। इतनी इन्कम का जाब आइ विल फाउंड आउट फार यू। (वह खामोश सी उसकी ओर ताकती रहती है।) पर मेरे आने तक सब्र क्यो नही किया, मैंने तेरे इस्तीफे का ड्राफ्ट बना दिया होता। पिछले आठ दिन से

अपर्णा (झट से) मत कहो कि बाहर गया था

केटी क्यो?

अपर्णा मैं जानती हूँ कि तुम कहा थे।

केटी कहाँ?

अपर्णा अपने घर। रागिणी के पास।

केटी किसने कहा?

अपर्णा मुझसे रहा नही गया सो फोन किया था। फिकर मत करो मैंने अपना नाम नही बताया रागिणी को

(मन से कुछ क्षुब्ध है पर बाहर दीखता नही। सिगार निकाल कर सुलगाता है और दो कश लेता है।)

अपर्णा अब वापिस जानेवाले हो?

केटी हा। योगिता के होनेवाले देवर और देवरानी अमेरिका रहते हैं। वे कल सवेरे हवाई जहाज से आ रहे हैं। उन्हे रिसीव करना होगा।

अपर्णा योगिता की शादी तय हुई?

केटी मतलब ? मैंने बताया नही तुम्हे ?

अपर्णा नही !

केटी आइ एम सॉरी । सुभाष नार्वेकर । पूना की फैमिली है। टेल्को मे असिस्टेंट इजीनियर है।

अपर्णा कल यदि अमेरिका के नार्वेकर दम्पति को लेने एअर-पोट पर न जाना पडता तो रह जाते यहाँ ?

केटी बेशक ।

अपर्णा कितने दिन (केटी चुप) आठ दिन पहले बाहर जाने का बहाना बनाकर दो बैगो मे कपडे जो भर कर ले गए थे वापिस नही लाये, इसलिए पूछा। (केटी सिगरेट सुलगाता है) तुम इस समय यहाँ होगे इसका पता योगेश को कैसे चला ? या कि रागिणी की अनुमति से टाइमटेबुल के अनुसार यहाँ आए हो ?

केटी (खीझता है) लुक साबू, यू नीड नॉट वी जेलस अवाउट इट ।

अपर्णा (निश्चयपूवक) हैं टोल्ड यू, आय एम जेलस ?

केटी (उसे शात करते हुए) ओके। रिलैक्स । तुम इस समय आग उगलना चाह रही होगी तो जरूर उगलो । चाहे जितने कडे शब्दो मे मेरा धिक्कार करो। आई वुड रादर वेलकम इट। लेकिन इस तरह पुलिस जैसी पूछताछ मत करो। (वह चुप । कुछ देर से) रागिणी ने योगिता की शादी तय की है। नये घर के साथ हमारे सबध जुडने वाले हैं योगेश को मेरे साथ स्टु-डियो मे काम करना है। कल उसकी शादी होगी

घर मे वहू आएगी । उस घर से भी सबध जुडेगा फिर हमारे रिलेशन्स सब के लिए परेशानी पैदा करेंगे (रुक कर) व्हॉट डु यू से ?

अपर्णा (ठडेपन से) आय हैव नथिंग टु से ।

केटी फिर भी तुम्हे क्या लगता है ?

अपर्णा मेरा प्रश्न ही कहाँ उठता है केटी ? यू आर फॉरच्यु-नेट क्योकि तुम पुरुष हो । अपनी टूटी (बिखरी) गृहस्थी को फिर से सभाल सकते हो । वह मेरे नसीब भाग मे नही क्योकि मैं एक औरत हूँ ।

केटी गृहस्थी को सँवार रहा हूँ या नही यह मैं नही जानता रागिणी के और मेरे सबधो मे दूरी तो बनी ही रहने वाली है । और हम दोनो को अवसर का अहसास भी है लेकिन क्या मुझे योगिता और योगेश के बारे मे सोचना नही चाहिए ? सतीश का तुम्हारे साथ बर्ताव अच्छी तरह से पेश नही आता वरना तुम भी तो उसके लिए भाग-दौड नही करती ? और उस वक्त क्या मैंने तुम्हे रोका होता ?

अपर्णा झूठे बहाने बनाकर अगर मैं श्यामू के पास जाकर हफ्तेभर रही होती तो क्या तुम्हे पसद आता ?

केटी मैं ऐसी हालत ही नही बनने देता जिससे तुम्हे झूठे बहाने बनाने पडते । मुझे अफसोस जरूर होता फिर भी तेरे इस खिचाव को मैंने नकारा ना होता ।

अपर्णा बेशक ! कहना बहुत आसान है केटी । वे दोनो मुझे आसपास फटकने भी नही देंगे यह तुम अच्छी तरह

से जानते हो।

केटी पिछले साल भर मे इस विषय पर किसी न किसी वहाने से हमने सौ बार वहस की है। जो कुछ भी हुआ है उसका दोष किसी के मत्थे नही मढा जा सकता। उसमे सब का किसी न किसी अश मे हिस्सा होगा। अगर तुम्हे इसी से सुख मिलता हो तो मैं कबूल करता हू कि चलो, इस सब के लिए मैं ही पूरा जिम्मेदार हूँ। लेकिन इससे समस्या थोडे ही हल हो जाएगी?

अपर्णा आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?

केटी एक बार सुषमाजी ने कहा था हमेशा याद करता हूँ जवानी मे हम शरीर से सोचते है ढलती आयु मे मन से सोचने लगते है इस बीच बहुत कुछ हाथ से फिसल चुका होता है। (नि श्वास छोडकर) एनी वे

अपर्णा आखिर तुम्हें कहना क्या है?

केटी सावू आइ होप् यू विल टेक इट ईजी। (रुककर) सावू सब अच्छी बातो का कोई अत आखिर होता ही है। अत अब नजदीक आ रहा है

अपर्णा मतलब?

केटी मुझे लगता है, हमारे रिश्ते प्यार के थे हैं भी। हमे ज्यादा गहराई से सोचना होगा। याने मन मे, हृदय मे प्यार तो रहेगा। दोस्ती भी रहेगी। बीच-बीच मे मिला भी करेंगे यहाँ या और कही। इफ् यू सो डिजायर। आइ नो, सावू वी वर हॅपी टुगेदर लेकिन अब वह सुख कही तो फिसल रहा है। (आगे बोल नही पाता। सिगरेट सुलगाता है। दो कश लेता है)

तुम, सावू कुछ कहना चाहती हो ?

(वह गदन हिलाकर ना कहती है। उसकी ओर ताकती ही रहती है। वह उठता है। मेज पर रखा सावू का फोटो उठाता है। और कागज मे बाधता है।)

अपर्णा उसे कहाँ ले जा रहे हो ?

बेटी घर।

अपर्णा क्यो ?

(वह कुछ नही बोलता। सिफ उसकी ओर दखता रहता है। वह जाने की तैयारी म खडा खडा भावुक-गदगद। वह बैठी ही रहती है पर अदर से भावविह्वल 'झुलना झुलाव" के अस्पष्ट स्वर सुनाई दे रहे हैं— धीरे धीरे अधेरा)

(अधेरा)

(प्रकाश)

(अपर्णा का घर। सबेरा। बेटी के जाने के बाद कुछ महीने बीत गए हैं। मानसी सोफे पर बैठी है। हाथ मे कोई सी अग्रेजी मासिक पत्रिका। फोन की घटी बजती है। मानसी उठकर फोन लेती है। 'कौन चाहिये? क्या नाम है? शटप्' कहकर वह खीझ कर चिल्लाती है और फोन नीचे रख देती है।)

अपर्णा (अदर से) किसी का फोन है री ?

मानसी राग नबर था, (विषय बदलने के हेतु) सावू तेरे मास-मीडिया के इटरव्यू का क्या हुआ ?

अपर्णा (अदर से) इटरव्यू तो दे दिया लेकिन होप्स नही हैं।

मानसी क्यो क्या हुआ ?

अपर्णा (अदर से) अरी पिछले कुछ महीनो मे कितने इंटरव्यू दिए ? कही भी तो बात जम ही नही रही है। कही भी जम नही रहा।

(सहसा एक छोटा सा पुष्पगुच्छ लिए धीमी गति से बालाराव आ जाते हैं। हाथ म छोटा-सा बैग)

मानसी आइए, आइए बालाराव। (हस्तादोलन के लिए तुरत हाथ आगे बढाती है।)

बालाराव (खुश होकर, हाथ हिलाते हुए) ओऽहोऽहो। आप वाह्ऽवाह ! वाह।

मानसी (हाथ छुडाते हुए) बैठिए बैठिए बालाराव (बाला राव बैठ जाते हैं।) कुछ ड्रिंक वगैरह लेंगे ?

बालाराव ड्रिंक ! ना ना। सवेरा है। और मुझे तुरत जाना भी है। (इरादा बदलकर) अच्छा देखिए, मानसीजी थोडी (हाथ से इशारा करके) और सोडा मत डालिए। (मानसी ग्लास मे ह्विस्की उडेलते हुए) इन दिनो आप कहो दीखी नही पता कहाँ है आपका आजकल।

मानसी (ग्लास देते हाथ बढाते हुए) अ ? वही पता !

बालाराव पता वही ? और पति ?

मानसी (मुस्कराते हुए) पति भी वही।

बालाराव (अपने से ही) चीअस चीअस। (एक घूट पीते हुए) पति भी वही ? याने लगता है आजकल आपका वह विमेन्स लिबरेशन वगैरह कुछ ठडा पड गया है।

मानसी अजी साब, ठडा-वडा कुछ नही पडा है। सबकुछ जारी है। (हँसती है।)

बालाराव एक ही पति के साथ ? (वह खिलखिलाकर हँस पडती है।) आपका जमन कैसे है ?

मानसी जर्मन नही जी। जमन। गुजराती नाम है कुछ दिन पहले उसे एक हाट अटेक हुआ था।

बालाराव बाप रे! (रुककर) हाँ, बल्कि आपके साथ ज़िंदगी जीने से एकाध हाट अटेक तो होगा ही। (वह खिल-खिलाकर हँस पड़ती है।) अब कैसी है उनकी तबीयत ?

मानसी अब ठीक है। (बालाराव ग्लास खत्म कर नीचे रख देते हैं।) एकाध और लेंगे ?

बालाराव *ना ना। साबू कही बाहर गई हुई है ?*

अपर्णा (बाहर आते-आते) अच्छा, कैसे है बालाराव ?

बालाराव (सहसा एकदम उठकर, उसका हाथ अपने हाथ मे लेते हुए) साबू माय डिअर मेनी मेनी हैपी

मानसी रुकिए रुकिए बालाराव

बालाराव (पशोपेश मे पड़कर) क्या हुआ ? (मानसी बालाराव का लाया हुआ पुष्पगुच्छ अपर्णा को देती है।) हाँ हाँ रिटर्न्स ऑफ दि डे।

अपर्णा (हाथ छुड़ाती हुई) थेंक्यू थेंक्यू बालाराव (मानसी से) बालाराव की बल्कि एक बात है मानसी। बालाराव इस दिन को कभी नही चूकते। मेरे बचपन से।

बालाराव (बैठते हुए) साबू, तेरी सूरत आज ऐसी क्यो ?

अपर्णा कैसी ?

बालाराव रात को नीद अच्छी नही आई क्या ?

अपर्णा हाँ, आई तो थी।

बालाराव *टेक केअर, साब (मानसी से) आजकल अकेलेपन के कारण साबू कुछ बेचैन हो गई है उसे शात (गाढ़ी)*

नींद भी नहीं आती डरावने सपने देखती रहती है

मानसी क्या यह सच है सावू ?

अपर्णा ना री। बालाराव तो बस, ऐसे ही।

बालाराव ऐसे ही क्यों ? उस दिन नहीं कह रही थी ? (अपर्णा गंभीरतापूर्वक खिड़की में से देख रही है।) तू बार-बार उस श्मशान की तरफ मत देखा कर सावू और उस मिसेज परेरा के बारे में मत सोचा कर

अपर्णा आपके लिये चाय लाती हूँ।

बालाराव ना ना। मत लाना। चाय दो बार पी चुका हूँ बस अब चलूगा (मानसी से) मानसी जी, जरा मेरा बैग देना तो। (मानसी बैग देती है) तेरी बहू के गहने दिखाता हूँ। (अपर्णा गंभीर) सतीश की पत्नी के री

(फिर भी वह गंभीर। बालाराव दो-तीन सदूक खोलकर छोटे छोटे बक्स दिखाते हैं। वह ठीक तरह देखती तक नहीं, बाक्स बंद कर रख देती है। अधिक उदास।)

मानसी सतीश की शादी बड़ी अजीब है। हँसी ही आती है। नहीं ?

बालाराव क्यों ? क्यों ?

मानसी श्यामू और सावू यहाँ रहने आये तब सतीश इत्ता सा बच्चा था। देखते-देखते वह बड़ा हो गया मन कैसा विचलित-सा हो उठता है।

अपर्णा क्यों ?

मानसी मतलब कि अजीब-सा अहसास होने लगता है कि हम

कितने वडे हो गए हैं। है ना ?

(सब हँस पडते हैं।)

बालाराव (गहना को देखते हुए) अच्छा चलो। सावू अब मैं चलता हूँ

अपर्णा इतनी भी जल्दी क्या है वालाराव।

बालाराव आज आदेश छूटा है दोपहर खाना जल्दी खाकर फडकेवाडी जाना है वहाँ कोई स्वामीजी आए हैं फिर शाम को आलू आदि खरीदने जाना है, कुछ पूछो मत। (उठते खडे होते ह।)

अपर्णा निमत्रण छपे ? (वालाराव गर्दन हिलाकर हाँ कह देते है।) किसके नाम से ?

बालाराव (उस प्रश्न को टालते हुए) फालतू प्रश्न मत पूछो वेटी। उसी के कारण तुझे नीद नही आती सावू ? और देख नीद की गोलियाँ मत खाना। वुरी आदत है। (मानसी से हडवडी मे) मानसी जी, आप जरा इसकी नौकरी के वारे मे कही देखिए आपके जर्मन से कहिए मतलव कि मन किसी मे तो लगा रहे ही सम सॉट आफ मेंटल ऑक्युपेशन। (चलते चलते) और, सावू, मिसेज परेरा के वारे मे मत सोच री लेट हर गो टु हेल। (हडवडी म ही चले जाते हैं।) (अपर्णा उन्हे जाते हुए देखती है—उदास। फोन की घटी वजती है। मानसी फोन उठाती है।)

मानसी (फोन पर) हाँ हाँ, आप कौन हैं ? (खीझकर) छी ? वाहियातपन ? शट् अप (फोन पटक दती है।)

अपर्णा (चिंतित होकर) वार-वार फोन आते रहते हैं रात वेरात (अपने से) किसी के साथ रहूँ तो हँसते हैं

अकेली रहूँ तो सताते हैं। , सचमुच, अकेले रहना मुश्किल ही है। काश अय्या होती साथ तो भी...

मानसी तू धीरज रख सावू। सतुलन मत खोना। इस प्रकार हिम्मत मत हारना उस वानी देसाई का क्या हुआ? केटी ने सुझाया था ना?

अपर्णा केटी का फोन आया था। लेकिन वानी देसाई सॉलिसिटर है मैं सॉलिसिटर के पास मैं क्या काम करूँ?

मानसी अरी, उसका कोई परिचित होगा एडव्हर्टायजिंग मे। तुम उससे मिलो तो सही

अपर्णा उसी ने कहा कि फोन करूँगा।

मानसी (उठते हुए) अच्छा, मैं चलूं?

अपर्णा बैठो भी कुछ देर। इतनी जल्दी भी क्या है? आज दोनो साथ खाना खाएँगे। कितने दिन हुए, मैंने बर्तनो को छुआ तक नही।

मानसी नॉट ए बैड आइडिया। लेकिन अब नही, फिर किसी दिन अब घर जाकर मुझे जमन के लिए तरकारी उबालनी होगी।

अपर्णा जमन अभी तक ऑफिस नही जाते?

मानसी जाएगा हफ्तेभर मे। वाकई मेरे दो महीने उसकी सेवा मे ही बीत गए

अपर्णा तुम उसके साथ शादी क्यो नही कर लेती मानसी?

मानसी मुक्ति के तत्त्वो के लिए झगडे वाली औरत से शादी कौन करेगा? कोई भी, सावू,अपने बराबर की पत्नी नही चाहता। हमारे इस रास्ते मे पति नही मिलता मित्र तो मिल जाते हैं।

अपर्णा तुम यह सब भली भाँति निभा सकती हो। मुझे तो

डर ही लगता है

मानसी हाँ तुम हो सीता—सावित्री। तुम्हे परेशानी तो होगी ही।

अपर्णा (अपने से ही) लगता है शुरु से ही मुझसे भूल होती गई। जानती हो क्या? मैं ना शातावाई के जैसी पिछडी रही और ना ही तुम जैसी आधुनिक। बीच मे ही निराधार लटक रही हूँ।

मानसी तेरी गलती कहाँ हुई, सावू, जानती हो? श्यामू के चले जाने पर तुम्हे हिम्मत से अकेले रहना चाहिए था।

अपर्णा (भाव विह्वल होकर) मानसी, क्या मैं नही रही अकेली? पूरे सात-आठ महीने अकेली रही श्यामू के लौटने की राह देखती रही। पर अकेला रहना उतना सरल नही मानसी। रोज रात को घर लौटते समय जी घबराता। धीरज देने, सँभालने के लिए किसी के होने की जरूरत महसूस करती—लगता धीरज देनेवाला पास कोई तो हो उस समय अय्या भी आ जाती तो मैंने उसको अपने यहाँ रख लिया होता।

मानसी इसीलिए केटी को पकडा?

अपर्णा मैंने नही पकडा री। वह इस बीच मे कभी-कभी आया करता था मुझे कपनी देने के लिए डर न लगे इस-लिए हिम्मत बढाने के लिए (रुककर) अकेला रहना इतना आसान नही है। सब कहते हैं मोह को टालिए टालिए लेकिन वह इतना आसान नही। उस समय केटी ने मुझे बहुत सँभाला।

मानसी और अब? (फोन की घंटी बजती है। अपर्णा फोन उठाने

मे हिचकती है। फोन उठाती है।) हॅलो कौन ? वानी हाँ जी, हा हा (फोन अपर्णा को देते हुए) वानी देसाई

अपर्णा (फोन पर) हॅलो नमस्ते जी। हा केटी ने फोन किया है जी। (सुनती है और) आपको कपनी देनी होगी महीना तीन हजार रुकिए रुकिए सुनिये वानी देसाई प्लीज लिसन टु मी। मतलब कि हर महीने तीन हजार रुपये लेकर मुझे आपकी रखैल रहना पडेगा ? लैट मी टेल यू (खीझकर) नो नो देखिए मिस्टर देसाई आप यहाँ नही आ सकते और उस केटी को भी यहाँ मत लाना। आप दोनो के मुह तक देखना मैं नही चाहती। स्टॉप इट (फोन पटकती है और शक्तिहीन बैठ जाती है। यह वानी कमीना पैसे के जोर पर मुझे रखैल बनाना चाहता है मैं रखैल बनूं ? एम आय ए कॉल गल ? (आँखें पोछती है।)

मानसी (उसका थपथपाते हुए) शात हो जाओ साबू। इसी तरह हिम्मत से डटकर रहोगी तभी तुम्हारा निभ सकेगा। (वह आख पोछनी रहती है कि सुषमा आ जाती है। उसके हाथ मे भारी-सी थैली है।)

सुषमा मानसी जी, आपसे विदा लेने आ गई हूँ खास।

मानसी कहा जा रही है ?

सुषमा आज रात हम दोनो नागपुर जा रहे हैं लडकी के घर। (हर्ष से। ससुरजी के नाम जवाई की चिट्ठी आई है विश्राम की 'आपके बेटा नहीं मुझे ही अपना बेटा मान और अब बुढापे के दिन हमारे घर में ही विताना।' (खुशी से) भला ऐसा दामाद भी कही

मिल सकना है ? वरना आजकल के दामाद। लड़की नौकरी पर लगवाइए रहने का घर दो ऊपर से दहेज दो गहने दो

मानसी मतलब आप नौकरी और यह मकान भी छोड़ रहे हैं ?

सुषमा फिलहाल नहीं छोड़ेंगे। उनके साथ निभ जाय तो ठीक। आजकल के बच्चे ये। कल को अगर लताड़ेंगे तो हम जायेंगे कहाँ। सच है ना ? (हँसती है। मानसी भी हँसती है। सावू गभीर) अच्छा चलती हूँ। सामान-वामान बाँधना है अभी

मानसी ये इतना सारा क्या खरीद कर लायी है ?

सुषमा पाँच किलो सेम खरीदे हैं। हमारे दामाद जी के लिए सेम तो बस जान दे देते हैं उसपर। (हँसती है) चलती हूँ, अपर्णा जी।

अपर्णा (उदास होकर आँख पोंछती हुई) आपके चले जाने पर, मुझे तो बहुत सूना-सा लगेगा।

सुषमा घबराइए मत अपर्णाजी। सब कुछ ठीक हो जाएगा। मेरे जीवन मे भी ऐसे दुर्दिन आये थे। हिम्मत मत हारिए। और मिसेज परेरा के बारे मे मत सोचिए। आप सदा उसी के बारे मे सोचती रहती हैं ना, इसीलिए वह सपने मे भी आ जाती है। अच्छा चलती हूँ पहुँचने पर चिट्ठी जरूर लिखूगी

(जाती है)

(कुछ देर भीषण शांति। मानसी जाने की तैयारी म है। फिर भी अपर्णा सुषमा की पीठ पीछे की ओर देख रही है।)

मानसी (उसे थपथपाते हुए) चलू मैं ?

अपर्णा (अपनी तंद्रा में) आखिर इनका भी सब ठीक हो गया।

मानसी किसका ?

अपर्णा सुषमा का री। अब तो अपनी बच्ची अपना दामाद उनके साथ इकट्ठे रहेंगे ' वह और उसका पति'

मानसी मैं चलू ?

अपर्णा हा हा। (कुछ याद करते हुए) मैं तुमसे कुछ पूछनेवाली थी।

मानसी क्या ?

अपर्णा (भ्रमित सी देखती है।) क्या ? कुछ याद नही आ रहा है। (तंद्रा म कुछ ढूढ़ने लगती है।)

मानसी क्या ढूँढ रही हो तुम साबू ?

अपर्णा (इधर-उधर ढूढ़ते हुए) मैंने नेलकटर कहाँ रखा है ?

मानसी ठीक तो हो ना ?

अपर्णा मुझे क्या हुआ है ? (ढूढ़ते हुए) मुझसे एक भयकर भूल हो गई है। (मानसी चकराकर उसकी ओर देखती है।) अय्या दो बार मेरे दरवाजे मे आई मुझे उसे नही निकाल देना चाहिए था। अगर उसे रख लिया होता तो आज मेरा कोई तो होता।

मानसी साबू, अब इस बीच अय्या कहाँ से आई ?

अपर्णा वैसा नही री। पर अय्या भाग गई ना भाग गई इसलिए हमने उसे दोषी माना। दूषण दिया पर उसकी भी तो कुछ दलील होगी। उसे सुनना जरूर चाहिए था ?

मानसी आजकल वह रहती कहाँ है ?

अपर्णा कौन जाने ? क्या मालूम क्या पता कहाँ रहती है ? (सहसा एक कोन मे उसे नेलकटर दीख पड़ता है।) यह

देखो मिल गया नेलकटर। कही तो रखा था इतना तो याद था कि कही तो रखा था।

मानसी तो मैं चलू और देखो नीद की गोलिया मत लिया करो और मिसेज परेरा से काहे को डरती हो ?

अपर्णा कितनी भयकर दीखती है री वह सपने मे उस कब्र मे सोई भयानक आखें खुली होठ गायब सिर्फ दाँत। और उन दाँतो मे से आवाज़ निकलती है

As you are now, so once was I
prepare for death and follow me

मानसी *(थपथपाकर)* मत सोचो री इतना

अपर्णा (भयभीत सी) कल रात बहुत घबराकर मैं छज्जे मे आ बैठी रात के दो बजे रास्ता सुनसान कोई *नही था एक ही व्यक्ति आहिस्ते चला जा रहा था* ऐसे ऐसे श्यामू तो नही होगा और बहुत रोई मैं

मानसी कुछ पढती रहो। तुम्हे किसी तरह इससे बाहर निकलना ही होगा या मेरे घर चलती हो ?

अपर्णा (कुछ सभलकर) ना री, मुझे कुछ भी तो नही हुआ है *(बीच म ही सहसा)* इधर मिला था ?

मानसी कौन ?

अपर्णा श्यामू

मानसी कल ही आया था

अपर्णा सतीश की शादी का निमत्रण देने ?

मानसी हाँ।

अपर्णा तुमने बताया नही ?

मानसी इसीलिए कि तुम्हें दुख ना हो मैंने उसे कहा था कि

तुम्हे भी निमत्रण दे

अपर्णा क्या कहा उसने ?

मानसी कुछ-भी नही।

अपर्णा निमत्रण पत्रिका किसके नाम से छपवाई है ?

मानसी उसके अपने

अपर्णा अकेले के ?

मानसी हाँ, तुम इन बातो से दुखी मत होना। दिल को चोट नही पहुँचा लेना। सावू, तुम्हे अब इसमे से बाहर निकलना ही होगा (अपर्णा मानसी के चेहरे की ओर दखती रहती है।) इस तरह क्या देख रही हो? (वह गदन हिलाकर 'कुछ नही' कहती है।) अच्छा देखो, मैं चलू ना ?

अपर्णा हाँ जा री। मुझे कुछ भी तो नही हुआ है।

मानसी और नींद की गोलियाँ मत खाना

अपर्णा नही नही नही। तुम जाओ।

(मानसी चली जाती हैं। दरवाजा बद करके अपर्णा छज्जे मे से देखती हैं। फिर कुछ क्षण छज्जे मे खडी। उदास, टूट जाती ह।

धीरे-धीरे अँधरा फैलता जाता है

कविता की पक्ति अस्पष्ट सी सुनाई देती है और अधेरा हो जाता है।)

(अधेरा)

(प्रकाश)

कमरे का दरवाजा बद होन पर भी घने काले अधेरे मे एक नारी पीठ पीछे स दीख पडती है। उसके हाथ मे एक दीप है जिसके प्रकाश मे उसकी आकृति दीखती है और जसे वह कह रही हा

As you are now, so once was I,
prepare for death and follow me

ये पक्तिया सुनाई देती हैं।
सुनते हुए वह मुडती है और आग आ जाती ह उसे अय्या का आभास होता है मेज पर दिया रख देती हैं चारो ओर धीमी रोशनी। पर साफे पर अपर्णा खोई।)

अय्या साव साव़ू मैं आ गई हूँ री

अपर्णा (उनीदी आवाज म) कौन कौन अय्या अय्या (खुशी से) अय्या, तू आ गई। अच्छा किया मैं तेरी राह देख रही थी मैं अब तुम्हे यहाँ से जाने नही दूँगी अय्या, मुझे अपने पास ले लो री। अपने पास लो, गोद मे। मुझे डर लगता है (अय्या उसे गोद म भर लेती है।

अय्या साव़ू मेरा शरीर रोमाचित हो रहा है, देख इतने साल के बाद मैं अपनी बेटी को गोद मे ले रही हूँ।

अपर्णा अय्या, एक बात बताना अय्या, तू हमे क्यो छोड कर चली गई?

अय्या भुलावा, चकमा री सावू, भुलावा, छलावा ही था वह।

अपर्णा उसे छलावा ही कहते हैं। रात के पहले पहर मे दरवाजे पर उसकी दस्तक पडती है फिर पीछे से पुकार सुनाई पडती है है भ्रम होता है जैसे अपने किसी दोस्त की पुकार हो सुननेवाला दरवाजा खोल कर आता है बोलते बोलते दोस्त के साथ चला जाता है चलता रहता है उसे इस बात का भान

तक नहीं रहता कि चलते-चलते दूर तक आ पहुँचा है। सुननेवाला खो जाता है सुनते सुनते अँधेरे में पेड़ के झुरमुटों में से काँटों में से चलता रहता है और फिर रात ढलते समय सहसा छलावा ओझल हो जाता है। फिर तो घर से बाहर निकला हुआ आदमी जाग पड़ता है किसी धुन में ही खूब दूर तक भटकने के एहसास से बुरी तरह से थका माँदा काँटों से घायल लेकिन यह सब बहुत देर से समझ में आता है बहुत देरी से। इसी को छलावा कहते हैं वह छलावा है।

अपर्णा (उनींदी आवाज में) अय्या, मुझे नींद आ रही है। मुझे पास ले लो मत जाओ

अय्या माबू, तेरे बेटे कितने हैं ?

अपर्णा (भारी आवाज में) एक अकेला सतीश कल उसकी शादी है री।

अय्या शादी ? मेरे पोते की शादी ? या अल्ला।

अपर्णा हम जायेंगे शादी में जल्दी जागकर यह देख तेरा शालू (शालू दिखाती है) तेरा शालू पहनूँगी मैं तेरी नथनी भी पहनूँगी (पार्श्व में शहनाई मंगलाष्टक धीमी आवाज में सुनाई देती हैं, उसी समय अय्या उठती है। दिये पर फूँक मारती है। अंधेरा) तुम कहाँ जा रही हो अय्या ?

अय्या जाना ही होगा मुझे रात बीत रही है

अपर्णा (उनींदी भारी आवाज में) अय्या मत जाओ मत जाओ अय्या, रुक जा ।

(अंधेरे मे आवाजें श्मशान की ओर खिड़की की दिशा म बढती सुनाई देती हैं और खिड़की की लकड़ी की चौखट टूटकर कुछ गिर जाने की आवाज उसके साथ ही अपर्णा की जोर से चीख सुनाई देती है। उसी क्षण रंगमंच पर धूसर नीली-सी रोशनी फैलती है उस धूसर नील प्रकाश म अपर्णा का शाल का छोर सोफे से लेकर खिड़की तक खिड़की मे स बाहर गया हुआ दूर से घंटानाद सुनाई देता है और उसी मे *'दे आर ऑल गॉन अव''* कविता के अस्पष्ट स्वर सुनाई देत ही परदा गिर जाता है।)

OOO